RG
books
पापा कहते हैं
योगेश कुमार

योगेश कुमार

REDGRAB books

समर्पित

यह मेरी किताब मेरे माता पिता और
मेरी बहनों को समर्पित है।

साथ में Redgrab की पूरी टीम को धन्यवाद ।
मेरी बड़ी बहन ने मेरी किताब को सब से पहले पढ़ा और उन्होंने किताब को फाइनल किया । इसलिए उनको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

अनुक्रम

अध्याय-1

मैं थका-हारा परेशान-सा अपने स्कूल से घर आ रहा था।मेरे साथमेरे दो दोस्त भी थे। हम तीनों महरौली के बाजार वाले सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। सामने ही स्कूल से निकलते ही दुकान पड़ती है जिस में टेस्टी समोसे मिलते हैं। हम अक्सर खाली क्लास में बाहर आकर समोसे खाते थे। पर पिछले एक हफ्ते से मैंने उन समोसों को छुआ भी नहीं था।

मैं बारहवीं में पढ़ता हूँ। पढ़ाई में मैं साधारण हूँ। स्कूल से निकलते हीमेरे दोस्त देव ने कहा, “राघव, चलो समोसे खाते हैं।”

मैंने कहा, “मेरा मन नहीं है।”

“मैं कई दिनों से देख रहा हूँ, तुम बातें कम करते हो और तुम्हारा पढ़ाई में भी मन नहीं लग रहा है।” देव ने कहा।

तब मैंने कहा, “अच्छा चलो समोसे ले लेते हैं।”

मैंने उसका मन रखने के लिए हाँ कह दिया क्योंकि मैं उसे अपनी उदासी के बारे में नहीं बताना चाहता था।मेरे दूसरे दोस्त सोनू ने कहा, “आज राजनीति विज्ञान का काम ज्यादा मिला है। कई पन्ने लिखने हैं, इसलिए समोसे जल्दी खा लो।”

सानू ने समोसे के तीस रुपये चुका दिए। समोसे वाले ने हम तीनों के सामने प्लेट मेलाल और हरी चटनी के साथ दो-दो समोसे लाकर रख दिए। समोसे हमेशा की तरह स्वादिष्ट बने थे लेकिन मैं समोसे नहीं खा पा रहा था। किसी तरह एक-एक निवाला करके मैंने एक समोसा खाया। एक बचे समोसे को मैंने कूड़ेदान में चुपके से फेंक दिया। लेकिन तभी देव ने समोसे को फेंकते हुए देख लिया। देव ने फौरन मुझसे कहा, “समोसा क्यों फेंक दिया?”

“उस में मक्खी पड़ी थी, इसीलिए।” मैंने बहाना बना दिया। लेकिन तभी सोनू ने सुरेश हलवाई से कहा, “सुरेश, तुम्हारे एक समोसे में मक्खी पड़ी थी।” इस पर शरमाकर सुरेश मुझे एक और समोसा देने लगा।

“मुझे और समोसा नहीं चाहिए।” मैंने कहा।

“अरे मैं खिला रहा हूँ, खा ले। कब तक ऐसे उदास बैठा रहेगा?” सोनू ने कहा।

मैंने कहा, “नहीं सोनू, समोसे में मक्खी देखकरमेरा मन अब समोसे खाने का बिल्कुल भी नहीं है।”

सोनू ने कहा, “ठीक है मत खा, चलो अब घर चलते हैं।”

हम तीनों वहाँ से अपने घर के लिए चल दिए। घर जाते समय हमने कोई बात नहीं की। हम सब चुपचाप चलते रहें। हम तीनों के घर भी पास-पास ही थे।

सोनू पढ़ाई में काफी अच्छा था तो वहीं देव भी ठीक-ठाक था। बस मैं ही उनकी तरह तेज नहीं था। सोनू तो हमारी कक्षा में हमेशा ही प्रथम आता था। देव भी चौथे-पाँचवें स्थान पर आ ही जाता था।

दिल्ली में महरौली की जमीनें कुछ ऊँच-नीच लिए हुए हैं। उसके रास्तों पर कहीं पर चढ़ाई तो कहीं पर उतराई है। बाजार के कारण इन रास्तों पर बड़ी भीड़ रहती है। और चढ़ाई तो ऐसी है कि लोगों के लिए आफत ही है समझिए। उस रास्ते से स्कूल जाते-आते हमारी तो साँस फूल जाती थी। सबसे पहलेमेरा घर पड़ता था। मैं घर पहुँच चुका था।

मैंने डोरबेल बजाई तो मम्मी ने दरवाजा खोला। घर के अंदर पहुँचते ही देखा कि सामनेमेरे ट्यूशन टीचर बैठे थे। उसे वहाँ देखकर मुझे ऊबन हुई।

मेरी मम्मी ने कहा, "हाथ-मुँह धोकर पढ़ाई करो। तब तक मैं तेरा और तेरे भाई का खाना बना देती हूँ।"

टीचर ने मुझे एक घंटा अंग्रेजी पढ़ाई पर मैंने कुछ नहीं पढ़ा। ट्यूशन टीचर के जाने के बाद मैं अपनी छत पर गया। अपनी छत पर खड़े होकर चार घर दूर एक घर की छत को निहार रहा था। वह घर बहुत ही सुंदर डिजाइन की टाइलों से बना हुआ था। उसकी छत भी साफ-सुथरी थी और रेलिंग भी स्टील की लगी हुई थी। छत पर एक कमरा भी था। मैं उसे देखता रहा।

उस घर के मालिक का महरौली में एक शोरूम था जिस मेकपड़े मिलते थे। शोरूम बहुत मशहूँर था इसलिए चलता भी खूब था। मैं अपने लिए कपड़े भी वहीं से लाता था।पर मैं ऐसा इसलिए करता था क्योंकि शोरूम मालिक की लड़की सेमेरा तीन साल से चक्कर चल रहा था। वो लड़की मुझसे एक साल बड़ी थी।मेरा चक्कर उससे नौवीं कक्षा से ही था। वो बहुत ही सुंदर थी। वो कमला नेहरू कॉलेज से बी.कॉम. कर रही थी।

वैसे तो मैंने सुना था कि उसके कई ब्वॉयफ्रेंड थे, पर उसने कहा था कि वोमेरे सिवा किसी और लड़के से दोस्ती नहीं रखेगी। उस पर मुझे बहुत भरोसा था। लेकिन कोई दस दिन से उसने मुझे फोन नहीं किया था, इसीलिए मैं उदास था। दरअसल, फोन करने में दो या तीन दिन से ज्यादा का गैप नहीं करती थी। उसका फोन न आने से मैं अपनी पढ़ाई नहीं कर पा रहा था।मेरा एक ही सपना था कि

इंटर के बाद मैं भी उसी की तरह किसी कॉलेज में पढ़ूँ। लेकिन विडंबना यह थी कि सरकारी स्कूल के विद्यार्थी अक्सर कॉलेज नहीं जा पाते। तब दिल्ली मेज्यादा कॉलेज भी नहीं थे। इसलिए बारहवीं में अच्छे अंक लाकर ही विद्यार्थियों को कॉलेज में दाखिला मिलता था।

करीब एक घंटे बाद मैं छत से उतर गया। तब तक खाना भी बन गया था। मैंने अपनी भूख के हिसाब से बहुत कम खाया और फिर बैठकर स्कूल से मिला होमवर्क करने लगा। शाम तक होमवर्क करके मैं क्रिकेट खेलने चला गया। देव और सोनू भी फील्ड में आ चुके थे।

“होमवर्क हो गया?” मैंने सोनू से पूछा।

“हाँ हो गया। तू अपनी बता तेरे पास निधि का फोन आया था क्या?” सोनू ने पूछा।

“नहीं आया।”

“तू पागल है, तुम ही उसे खुद फोन क्यों नहीं कर देते हो?”

“नहीं सोनू, वो फँस सकती है। उसके घर पर बहुत पाबंदियाँ रहती हैं।”

“एक मिस कॉल तो कर ही सकता है।”

“ठीक है, अगर आज उसका फोन नहीं आया तो कल करके देखूँगा।”

“एक बात कहूँ, वो तेरे प्यार के काबिल नहीं है। तू नहीं जानता वो एक बेवफा लड़की है। वो लड़कों से ऐसे बात करती है कि जैसे वो उनकी गर्लफ्रेंड हो।”

“मैं जानता हूँ, वो एक खुली हुई लड़की है। वो दूसरों जैसी नहीं है। वो हँसमुख भी है, इसलिए सबके साथ घुलमिल जाती है।”

“यार उस में सौ खामियाँ भी हों, तब भी तू मानेगा ही नहीं।”

अध्याय-2

रात के दो बज रहे थे। मैं अपने कमरे में सो रहा था। तभी अचानकमेरे फोन की घंटी बजी। मैं फौरन समझ गया फोन निधि का ही होगा। मैंने तुरंत फोन उठा लिया और हैलो कहा। उसने भी हैलो कहा तो मैंने पूछा, “इतने दिनों से कहाँ गायब हो निधि?”

“वो मैं गोवा में हूँ, अपने दोस्तों के साथ। मैं कल यहाँ से चल दूँगी।”

“पर तुमने तो बताया ही नहीं था कि तुम गोवा जा रही हो?”

“हाँ नहीं बताया, नहीं तो तुम मुझ पर शक करते।”

शक की बात करते हीमेरे कान खड़े हो गए की निधि ने एसा क्या कर दिया जो मैं उस पर शक करता।

“क्या मैंने किसी बात के लिए तुम पर कभी शक किया है जो अब करता?”

“हाँ जानती हूँ, तुमने कभी मुझ पर शक नहीं किया है, लेकिन मैंने सोचा तुम परेशान हो जाओगे।”

पर मुझे लगा शक की बात शायद उसने ऐसेही कह दी होगी।

“खैर, तुम किन दोस्तों के साथ हो?”

“हम चार लड़कियाँ और दो लड़के हैं।”

“अच्छा! कहाँ-कहाँ घूमी हो तुम दस दिन में?”

“मैं यहाँ कई बीच पर गई हूँ। जानते हो, मैंने यहाँ बीयर भी पी है वो भी कई बार।”

“तुमने शराब पी निधि?”

मैं सकते में पड़ गया की उसने बीयर पी।

“हाँ पी है, पर बीयर शराब नहीं होती है।”

“तुम नहीं जानतीमेरा यहाँ क्या हाल हो रहा है इतने दिन से। मैं तुमसे बात करने को तड़प रहा था। पर तुमने फोन तक नहीं किया।”

इतना सुनकर निधि ने टॉपिक बदलते हुए पूछा, “अच्छा बताओ, पढ़ाई कैसी चल रही है?”

“बिलकुल बकवास! मैं तेरे बगैर पढ़ नहीं पाता हूँ।”

“अरे तो मैं कल ही आ जाऊँगी बाबा। अच्छा तुम मुझे कल शाम को छह बजे एयरपोर्ट लेने आ सकते हो?”

“हाँ क्यों नहीं। मैं आ जाऊँगा। तुम ठीक से आना।”

“अच्छा ठीक है, अब फोन रखती हूँ। कल डो में स्टिक एयरपोर्ट पर मिलना, ठीक है?”

“बाय निधि!” उसने भी बाय कहके फोन काट दिया।

मैं अब सो नहीं सकता था क्योंकि मेरी उदासी खत्म हो गई थी। उस आधी रात को मैं किचन में गया और एक कप चाय बनाने लगा। चाय बनाकर मैंने सोचा कि कुछ पढ़ लिया जाए। मैंने अपनी इंग्लिश की किताब उठाई और पढ़ने लगा परमेरा ध्यान पढ़ाई से बार-बार भटक जाता था। मैं सोच रहा था कि निधि लड़कों के साथ गोवा गई है, कहीं उन में से किसी से उसका चक्कर तो नहीं चल रहा! फिरमेरा मन कहता कि नहीं ऐसा नहीं हो सकता है। यही सब सोचते हुए मैं सो गया।

अगले दिन मैं स्कूल गया और फिर स्कूल से लौटकर पढ़ाई करने लगा। फिर शाम पाँच बजे अपनी बुलेट निकाली जो दस दिन से गंदी पड़ी थी। निधि के बाद मैं अपनी बुलेट से ही तो प्यार करता था। जल्दी से बुलेट साफ करके ठीक छह बजे मैं एयरपोर्ट पहुँच गया। मैं एयरपोर्ट के बाहर खड़ा हो गया। कुछ ही देर में निधि भी आ गई।

“क्या हाल है?” निधि ने बुलेट पर बैठते हुए पूछा।

“ठीक हूँ। और तुम्हारे दोस्त कहाँ हैं? वे तो नहीं दिख रहे हैं।”

“वे तो पहले ही जा चुके हैं। असल में मुझेमेरा बैग देर से मिला है। इसलिए वे पहले चले गए।”

मैंने बुलेट स्टार्ट की और हवा से बातें करते हुए मैं महरौली की ओर चल दिया। मैंने निधि से पूछा, “वे जो तुम्हारे दोस्त गोवा में थे कहाँ के थे?”

“वेमेरे कॉलेज के थे।”

“तेरे पापा ने इजाजत कैसे दी, लड़कों के साथ गोवा जाने के लिए?”

“मैंने पापा को नहीं बताया था कि लड़के भी जा रहे हैं।”

“ओह अच्छा!”

हम महिपालपुर और फिर वसंत कुंज होते हुए महरौली पहुँचे। मैंने निधि को उसके घर छोड़ दिया और अपने घर आ गया। मैं पूरे रास्ते यही सोचता रहा कि क्या निधि मुझे अपने साथ गोवा नहीं ले जा सकती थी? पर मुझे लगा कि शायद उसने सोचा होगा कि मैं दस दिन स्कूल नहीं छोड़ सकता था।”

मैंने बुलेट पार्किंग मेलगाई और अपने घर में चला गया। पापा भी आ चुके थे। मुझे देखते ही पापा ने पूछा, “कहाँ गया था?”

“वो मैं अपने दोस्त से मिलने गया था।”

“बोर्ड के एग्जाम हैं और तुम दोस्तों के साथ घूम रहे हो? जाकर कमरे में पढ़ाई करो।”

मैं कुछ बोले बगैर वहाँ से कमरे में आ गया।

***

दो दिन बाद मैं अपनी छत पर गया तो देखा कि निधि वहाँ अपने कमरे में पढ़ रही थी। मुझे देखते ही उसने एक फ्लाइंग किस भेजा। मैंने भी उसे हवा में चूमा और उसके नंबर पर फोन किया। पर वो अभी बिजी बता रहा था इसलिए मैं छत के कोने पर खड़ा हो गया। तभी उसका फोनमेरे पास आ गया।

"और बताओ, गोवा का ट्रिप कैसा रहा?"

"बहुत बढ़िया, जानते हो गोवा में ट्रैफिक बहुत कम रहता है। वहाँ हरियाली भी बहुत है।मेरा होटल कैंडोलिम बीच के पास था। मैं वहाँ पर बस सारा दिन बीयर का मजा लेती रही। सच में, जब मैंने पहली बार बीयर पी तो इतना मजा आया कि पूछो मत।"

"मेरे प्यार से भी ज्यादा?" मैंने उसे ताना मारते हुए कहा।

"यही समझ लो।"

मैंने डरते हुए पूछा, "तुम लड़कों के साथ एक ही रूम में थी?"

"मैं जानती थी तुम ऐसे ही सवाल करोगे। हम अलग-अलग रूम में थे।"

इतना कहकर उसने फोन काट दिया। मैंने किसी खतरे के डर से दोबारा फोन नहीं किया। मैं छत से उतर गया। अब शाम हो गई थी और पापा भी घर आ गए थे।

पापा ने मुझसे पूछा, "आज पढ़ाई की?"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। जवाब ना देने से पापा समझ गए कि मैंने पढ़ाई नहीं की। पापा ने फिर जोर से कहा, "तुम्हारा बाप उन बनियों की तरह नहीं है जिनका बाजार मेकपड़े या जूतों का शोरूम हो। नहीं पढ़ोगे तो पेट भरने के लिए मजदूरी करनी पड़ेगी।"

मैंने कुछ नहीं कहा और अपने कमरे मेजाकर पढ़ने लगा।

कुछ दिन बाद मैं अपने छत पर खड़ा निधि की छत को एकटक देख रहा था कि तभी निधि छत पर आई। उसके साथ एक लड़का भी था जिसे देखकर मैं सद में में चला गया। उस लड़के को मैं जानता था। वो लड़का महरौली में मशहूँर था। वजह थी कि वो हर चीज में नंबर वन था। उसे वहाँ देखकर लगने लगा कि निधि गईमेरे हाथ से।मेरे मन में असुरक्षा की भावना का डर समा गया। लड़का स्मार्ट तो था ही, उसके पास पैसा भी बहुत था। महरौली में उसके एक नहीं तीन जूते के शोरूम थे। उसका नाम था वंश। वो क्रिकेट भी बहुत अच्छा खेलता था। मैंने उसकी गाड़ी में एक नहीं कई बार दो लड़कियों को देखा था। लड़कियों में भी वो

मशहूँर था। वो श्रीराम कॉलेज से बी.कॉम. कर रहा था। उसके पास गाड़ियाँ ही नहीं बल्कि कई मर्सिडीज और बी.एम.डब्लू. थी। दिखने में भी वो किसी मॉडल से कम नहीं था।

मैं तो उसके सामने हर चीज में पानी भरता था। हड़बड़ी में मैंने निधि को फोन लगाया पर उसने फोन नहीं उठाया। मैं ये सब देखकर नीचे उतर आया। मैं समझ गया कि निधि अब मुझे छोड़ देगी।

मैं अपने घर के हॉल में बैठा दिल जलाता रहा। कुछ देर बाद पापा आ गए। मैंने उन्हें पानी दिया, जोमेरा रोज का काम था। अचानक वो मुझे गौर से देखने लगे जो मुझे अजीब लगा। कारण था वे समझ गए कीमेरा ध्यान कहीं और है। तभी मुझे याद आया मैंने पापा को और पानी के लिए नहीं पूछा। तभीमेरा भाई अमित वहाँ आ गया। उसके साथ बैठकर मैं मूवी देखने लगा। अमित नौवीं कक्षा में पढ़ रहा था लेकिन पढ़ने में वो मुझसे तेज था।

रात हो चुकी थी। खाना खाने के बाद पापा-मम्मी सोने चले गए। मैं भी अपने कमरे मेजाकर निधि के बारे में सोचने लगा।

अध्याय-3

मैं और देवमेरे घर की छत पर बैठे थे। मैंने उसे घर आने को कहा था। छत पर मैंने उसे कहा, “यार निधि के पास अब वंश आने लगा है। वो पिछले दो दिन से निधि से मिलने आ रहा है। मैं अंदर से बहुत कमजोर हो गया हूँ।”

देव ने कहा, “अभी पढ़ने के दिन हैं राघव, पढ़ाई पर ध्यान दे। कॉलेज में पहुँचने के लिए हमें अच्छे नंबर लाने हैं बारहवीं में।”

“पर निधि के ऐसे व्यवहार के कारण मैं पढ़ नहीं पाता हूँ, मेरी पढ़ाई चूल्हे में गई।”

देव ने मुँह पिचकाते हुए कहा

“राघव, अगर तुम अब नहीं पढ़े तो तुम्हारे आगे की पढ़ाई का क्या होगा? तुम कॉलेज कैसे पहुँचोगे?”

शायद देव प्यार को समझ नहीं सकता था उसने अभी किसी से प्यार नहीं किया था। उसे शायद प्यार की चिड़िया का भी पता नहीं था मैं बेकार में अपनी फीलिंग उसे बता रहा था।

“पर मैं निधि को नहीं छोड़ सकता हूँ। मैं तो निधि के साथ उसके कॉलेज मेंवक्त बिताना चाहता हूँ।”

“ये तो तुम्हारे सपने हैं न। तुम समझते नहीं हो, लड़कियाँ तो तुम्हें और भी मिल जाएगी कॉलेज में।”

तभी देव ने कहा, “लो आ गया वंश, मैंने भी निधि की छत पर उसे देखा है।”

मैंने देव से कहा, “ये निधि को छोड़ेगा नहीं। इसे मेरी ही गर्लफ्रेंड मिली थी! इससे तो मैं दो जन्म में भी मुकाबला नहीं कर सकता हूँ।”

देव ने कहा, “ठीक है यार, होगा वो कोई हीरो, पर तू भी किसी हीरो से कम नहीं है।”

“मेरा और उसका क्या मुकाबला? स्मार्ट वो, पढ़ाई में तेज वो, क्रिकेट तो ऐसा खेलता है कि दूर-दूर से लोग उसे अपने मैच में खेलने के लिए बुलाते हैं। ऊपर से तीन कपड़ों, जूतों के शोरूम, घूमने के लिए मर्सिडीज और बी.एम.डब्लू. और कई गर्लफ्रेंड भी है। मेरी तो एक ही थी। क्या बिगाड़ा था मैंने उसका जो एक थी उसे भी ले लिया?”

मेरी इस बात पर देव हँसा, “ठीक है, होगा वो कोई स्टार। पर तू उससे कहीं ज्यादा बड़ा हो सकता है।”

सुन कर मैं अचम्भे में पड़ गया।

"पर कैसे?"

"तू लिखता अच्छा है। तू कोई नॉवेल लिख सकता है। मैं जानता हूँ, तू ऐसा कर सकता है।"

"पर मैं हिंदी मेलिखता हूँ। तुम तो जानते हो न कि हिंदी की किताबें कोई नहीं पढ़ता है।"

"तुम तो अभी से हार मान रहे हो। तुम बारहवीं की परीक्षा के बाद किताब लिख सकते हो। तुम किताब लिखकर वंश से आगे जा सकते हो। तुम नहीं जानते, तेरी लिखी कहानियाँ जो तुमने कुछ समय पहले लिखी थी, उन्हें बहुत पसंद की थी लोगों ने।"

मैंने कहा, "लिख तो सकता हूँ पर पैसा नहीं है इस काम में।"

"ऐसा नहीं है, अच्छा लिखोगे तो किताबें भी बिकती है।"

"ठीक है यार, रात हो गई है, अब घर चलते हैं।"

मैं निधि की छत पर देखने लगा। वो अब भी छत पर थी। तभी देव सीढ़ियों से जाने लगा। मैं कुछ देर छत पर रहा। कुछ देर बाद निधि का फोन आया।

"मेरे बाबू का क्या हाल है?"

मैंने उसकी झूठी बात पर कोई जवाब नहीं दिया। मैंने पूछा, "वंश तुम्हारे पास रोज क्यों आता है?"

"जल गए? वो तो बस मेरा दोस्त है इसलिए आ जाता है। मैंने उससे उसके कॉलेज के नोट्स लिए थे। तब से हमारी दोस्ती हो गई थी।" मैं उस पर भड़कने ही वाला था पर मैंने अपने पर संयम बनाया।

"क्या वो गोवा में भी तुम्हारे साथ गया था?"

"हाँ गया था, पर वो मेरा बस दोस्त है। अच्छा घर जाना है, फोन रखती हूँ।"

मैं भी घर में आ गया और सोचने लगा कि कैसे निधि मुझे धोखा दे रही थी। मैंने तय किया कि अब छत पर नहीं जाऊँगा और पढ़ने बैठ गया। मैं स्कूल के पढ़ाए चैप्टर पढ़ता रहा। दरअसल, उस वक्त निधि से ज्यादा मुझे अपनी परीक्षा की तैयारी करनी थी। देर रात तक मैं कभी इतिहास तो कभी राजनीतिक विज्ञान पढ़ता रहा। रात को तीन बजे मैं थककर सो गया। मैंने खुद को धीरे-धीरे पढ़ाई में डुबो दिया ताकि निधि की याद ही न आए। लेकिन फिर भी वो मुझे याद आ ही जाती थी।

वैसे तो निधि पढ़ाई में अच्छी थी पर वो स्मार्ट लड़कों की दीवानी थी। मैं ये जानता था। अक्सर जब मैं उसके साथ होता था तो वो लड़कों से आँख मिलाती रहती थी। पर मैंने उसे इस बारे में टोका नहीं था। पर उसकी जिदंगी में वंश आया तो मैं घबरा ही गया। मुझे वंश से जलन होने लगी थी। पर मैं कर भी क्या सकता था वंश समार्ट था साथ में उसके पास पैसे कि भी कमी नहीं थी।

जितना मैं हफ्ते में खर्च करता था उतना तो वो गाड़ी में तेल फूँक देता था। कोई भी लड़की उसे मिल सकती थी। इसलिए मैं अक्सर सोचता था कि इस वंश को कोई और लड़की नहीं मिली जो निधि के पीछे पड़ा है।

निधि मेरी जिंदगी मेजब से आई थी, वो मेरी जरूरत बन गई थी। निधि के पास भी कम पैसे नहीं थे, उसकी भी जेबखर्ची बहुत थी। वो मुझसे कई गुना ज्यादा खर्चती थी।

मुझे उन तक पहुँचने के लिए बहुत मेहनत करनी थी। पर मैं ये भी जानता था ऐसा कभी नहीं होना था। मैं निधि से शादी करना चाहता था। पर वो सपना शायद अधूरा ही रह जाना था।

मेरे और निधि के बीच पैसे, समाज और रुतबे को लेकर बहुत अंतर था। वो अपने परिवार में इकलौती संतान थी। ऊपर से महरौली मेकपड़े के बड़े शोरूम के साथ उसके पास काफी प्रॉपर्टी थी। वह अपने शोरूम के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बातती थी। अपनी बी.एम.डब्लू. कार का भी बखान करती रहती थी। जाहिर है, उससे कोई भी लड़का शादी करके अपने को भाग्यशाली ही समझता। उसके लिए लड़के की कमी नहीं होनी थी। और मैं... मेरी तो पढ़ाई भी एक सरकारी स्कूल में हो रही थी। सारा दिन स्कूल में रहने के बाद भी मैं अंग्रेजी में कमजोर था। जबकि निधि एक बड़े और नामचीन स्कूल में पढ़ी हुई लड़की थी।

मैं काफी समय तक यही सोच के परेशान रहता था कि मेरा उन दोनों से कोई मुकाबला ही नहीं।

अध्याय-4

एक दिन सुबह-सुबह ही मेरे पास निधि का फोन आया। करीब-करीब छह बज रहे थे। मैं बहुत खुश था कि उसका फोन मेरे पास आया। क्योंकि इतनी सुबह कभी भी उसका फोन नहीं आया। इसलिए मुझे इस में उसका प्यार छलकता हुआ लगा।

जैसे ही मैंने फोन उठाया तो वो बोली, “तुम आज स्कूल की छुट्टी कर सकते हो?”

“नहीं! पर बात क्या है, जो तुम मुझे छुट्टी करने को कह रही हो?”

“प्लीज एक दिन स्कूल की छुट्टी कर लो।”

“नहीं! आज पोल साइंस का एक महत्त्वपूर्ण चैप्टर हमारे टीचर पढ़ाएँगे।”

“प्लीज मान जाओ, एक दिन की ही तो बात है। तुम उस चैप्टर के नोट्स सोनू या देव से ले सकते हो।” मैं सोचने लगा इसे आज मुझसे क्या काम पड़ गया उसने कभी मुझे छट्टी के लिए नहीं कहा था वो तो हमेशा ही कहती थी कि अपनी पढ़ाई के लिए गम्भीर रहा करो।

“पर बात क्या है जो तुम छुट्टी के लिए कह रही हो?” वो वजह बताने में शरमा रही थी या उसे गुस्सा आ गया था मेरे मना करने पर इतना सुनकर कोई जवाब दिए बिना ही उसने फोन काट दिया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि निधि आखिर क्यों छुट्टी करवाना चाहती थी?

खैर, मैं स्कूल जाने के लिए तैयार होने का मूड बनाने लगा। लेकिन मेरा मन स्कूल जाने का नहीं हो रहा था। इसलिए मैं नहाने के बाद मम्मी से कहा, “आज मैं स्कूल नहीं जाऊँगा मम्मी।”

“पर क्यों?” मम्मी ने पूछा।

“क्योंकि मुझे आज कुछ किताबें नई सड़क से लानी है।मेरे टीचर कह रहे थे इन किताबों से बारहवीं की परीक्षा में बहुत मदद मिलेगी। मुझे पापा से किताब लेने के लिए कुछ पैसे भी दिला दो।”

“पर तुम जानते हो कि महीने के आखिरी दिन चल रहे हैं, इसलिए तुम आज के बजाय एक तारीख को किताबें ले आना।” शायद मम्मी के पास ज्यादा पैसे नहीं थे उन्हें महीने के आखरी दिनों तक का खर्च चलाना था। पापा ये सब बाहर सुन रहे थे। वो अचानक कमरे में आए और बोले, “कितने पैसे चाहिए?”

“बस पाँच सौ रुपये।”

उन्होंने मुझे तुरंत पाँच सौ रुपये दे दिए। मैं खुश हो गया और जल्दी से निधि के पास जाने की तैयारी करने लगा। मैं कमरे मेकपड़े प्रेस कर रहा था कि तभी मेरा भाई अमित वहाँ आ गया। उसने पूछा, "भाई कहाँ जा रहे हो?"

"मैं नई सड़क जा रहा हूँ।"

ये सुनकर वो हँसने लगा और बोला, "ये पाँच मिस कॉल निधि के फोन से आई है।"

मैंने बेड पर पड़ा तकिया उसे दे मारा, "मेरे फोन की जासूसी कर रहा था?"

वो मेरा हाल समझकर हँस पड़ा और हँसते हुए ही पूछा, "कहाँ जा रहे हो निधि के साथ?"

"पता नहीं कहाँ लेकर जा रही है!"

"ठीक है, तुम निधि के साथ घूमने जाओ मैं तो स्कूल चला।" अमित ने अपना बैग लिया और स्कूल चला गया। तभी मेरा मोबाइल फिर से बजा। मैंने कॉल रिसीव किया और निधि से पूछा, "कहाँ जाना है?"

"शहीद भगत सिंह कॉलेज।"

"वहाँ तो हमें घुसने तक नहीं दिया जाएगा, वहाँ क्या है?"

"अरे आज वंश का मैच है कॉलेज में। फाइनल मैच है। वो अभी-अभी अपने कॉलेज की क्रिकेट टीम का कप्तान बना है। उसने मुझे कहा है कि वो इस टूर्नामेंट मेजीत गया तो वो रणजी ट्रॉफी की दिल्ली की टीम में आ सकता है। उसने ये भी कहा कि वो अगर रणजी ट्रॉफी टीम में आ गया तो वो आईपीएल टीम में भी आ ही जाएगा।"

निधि चहकते हुए बता रही थी। ये सुनकर मुझे गुस्सा बहुत आया पर मैं अपनी जलन नहीं दिखा सकता था। मैंने कहा, "किस टाइम कॉलेज को निकलना है?"

"उसका दस बजे मैच है, तो हम नौ बजे निकल लेंगे, ठीक है? तुम नौ बजे महरौली के पुराने बस स्टैंड पर मिलना।"

ठीक है कहकर मैंने फोन काट दिया। मैं ये सोचकर परेशान था कि वो रणजी ट्रॉफी टीम में आ जाएगा और इधर मैं इंटर के बाद कॉलेज में घुसना चाहता हूँ।मेरे नंबर कम आए तोमेरा कॉलेज में दाखिला नहीं हो पाएगा।

मैं वंश से जलता था। क्योंकि उसने मेरी इकलौती गर्लफ्रेंड को पटा लिया था। मुझे निधि पर भी गुस्सा आ रहा था। मैं सोचता था कि मेरे बेइंतहा प्यार करने पर

भी वो वंश के चक्कर में पड़ी थी। क्या क्रिकेट का हीरो कभी क्रिकेट के अलावा किसी और चीज से प्यार कर सकता था?

मैं कपड़े पहनकर तैयार हो गया। मम्मी ने मुझे खाने के लिए टोस्ट लगे ब्रेड दिए जिसे मैंने दूध के साथ खा लिया। अभी आठ बजे थे, तो सोचा कुछ पढ़ लूँ। पर मन की उथल-पुथल के आगे मैं नहीं पढ़ पाया। हॉल से कमरे में और कमरे से हॉल में चक्कर काटता रहा।

मैं नौ बजे निधि के साथ शहीद भगत सिंह कॉलेज को निकला। निधि मुझे महरौली के पुराने बस स्टैंड पर ही मिल गई थी। वहाँ से हम बातें करते हुए बुलेट पर कॉलेज जाने लगे। मैंने निधि से कहा, “कॉलेज में हमें कोई घुसने भी नहीं देगा।”

इस पर वो हँसी, “मेरे पास कॉलेज में घुसने के लिए पास है। वंश ने मुझे दिए हैं।”

उसने जब पास दिखाया तो मैंने कहा, “फिर ठीक है। पर इस मैच में ऐसा क्या खास है जो तुम इतनी उतावली हो रही हो?” मैंने मुँह बनाते हुए निधि से कहा

“अरे ये मैच बहुत बड़ा है क्योंकि इस टूर्नामेंट में दिल्ली की सभी कॉलेज की टीमों ने हिस्सा लिया है। वंश इस टूर्नामेंट में क्रिकेट का नया सितारा बनकर उभरा है। उसने बहुत अच्छा क्रिकेट खेला है। वो कह रहा था उसने अपनी बल्लेबाजी से कई मैच अपनी टीम को जिताए हैं। और वो मैंन ऑफ द सीरीज बन सकता है, अगर वो इस मैच को जिताता है तो। साथ में वो अपनी टीम का कप्तान भी है।”

मैंने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। ये सब सुनकर मैं बहुत परेशान हुआ। परेशान होने की तो बात ही थी। कोई भी ब्वॉयफ्रेंड ये नहीं चाहता कि उसकी गर्लफ्रेंड किसी और लड़के की इतनी तारीफ करे।

थोड़ी ही देर में हम कॉलेज के गेट पर थे जहाँ पर निधि ने पास दिखाकर कॉलेज में प्रवेश करा दिया। उसने वंश को फोन किया पर उसने फोन नहीं उठाया। निधि ने उसे कई फोन किए फिर भी उसने फोन नहीं उठाया। मैं उस कॉलेज की लड़कियों को देखता रहा। कुछ लड़कियाँ तो बहुत छोटे कपड़ों में थी जो किसी फिल्म की हीरोइन लग रही थी। तभी निधि ने कहा, “नॉटी ब्वॉय!”

मैं हँस पड़ा। मैंने एक लड़के से पूछा, “आज मैच कहाँ होना है?”

“बाईं तरफ जो मैदान है, उसी में।” लड़के ने कहा।

लड़के के बताए रास्ते से हम दोनों मैदान की तरफ चल दिए।

अभी साढ़े नौ ही हुए थे। हम वहाँ रखी कुर्सियों पर बैठ गए। तभी फाइनल मैच की दोनों टीम के कप्तान मैदान में आए। मैदान में शोर होने लगा। मैदान लड़कों और लड़कियों से भरा हुआ था। दोनों कप्तान टॉस के लिए मैदान में थे। सभी लोग अपने-अपने कॉलेज के कप्तान का हौसला बढ़ाने लगे। निधि भी चिल्लाने लगी- वंश वंश वंश...

वंश टॉस हार गया और उसे फिल्डिंग मिली। टॉस के बाद दोनों कप्तान मैदान से चले गए। सामने ही स्टॉल पर खाने-पीने की चीजें मिल रही थी। मैंने दो कोल्ड ड्रिंक वहाँ से ली और मैच शुरू होने का इंतजार करने लगा।

निधि काफी खुश लग रही थी। पर मुझे वंश पर गुस्सा आ रहा था। मैं अपने मन में ये मनाने लगा कि काश वंश की टीम मैच हार जाए और वो मैच की पहली ही बॉल पर जीरो पर आउट हो जाए। पर ऐसा होने वाला नहीं था। फिर मैं ये सोचने लगा कि क्यों निधि के उत्साह से जल-भुन रहा था। अगर निधि मुझे कम भाव दे रही थी तो इस में गलत भी क्या है? वो मेरी बीवी तो थी नहीं। और जब मैं भी कॉलेज में आ जाऊँगा तो मैं भी किसी और को अपनी गर्लफ्रेंड बना लूँगा। आखिर उस में रखा ही क्या है? बस वोदिखती ही सुंदर है पर कॉलेज में ऐसी लड़कियों की कमी नहीं होती।

मैच शुरू होने का समय हो गया। मैंने अपनी कोल्ड ड्रिंक खत्म कर दी थी। पर निधि ने तो अभी कोल्ड ड्रिंक शुरू भी नहीं की थी। मैंने पूछा, “तुम कब इसे पियोगी?”

इस सवाल पर उसने ध्यान नहीं दिया। वह बोली, “वंश कह रहा था कि उसकी टीम फील्डिंग में कमजोर है, साथ में बॉलिंग में भी। अगर उसकी फील्डिंग पहले आई तो वे लोग आसानी से जीत सकते हैं।” इसी टेंशन में निधि ने कुछ घूँट पेप्सी के अपने गले में उतारे।

तभी वंश की टीम फील्डिंग के लिए उतर आई। दर्शकों में शोर बढ़ने लगा। दोनों अंपायर भी मैदान में आ गए। शहीद भगत सिंह कॉलेज के बल्लेबाज भी मैदान पर थे। मैच की पहली बॉल के लिए बॉलर तैयार थे। ठीक दस बजे पहली बॉल फेंकी गई।

वंश फील्डिंग में गली में खड़ा था। पहली बॉल पर कोई छःड़छाड़ बल्लेबाज ने नहीं की। मैच चालीस ओवर का था और पहले ओवर में शहीद भगत सिंह के बल्लेबाजों ने कोई रन नहीं बनाया। कोई विकेट भी नहीं गिरी। दूसरे ओवर में एक

रन के साथ एक रन वाइड का आया। वंश अपने बॉलरों का और फिल्डरों का हौसला बढ़ा रहा था। पाँच ओवर हो गए थे।

पहले पाँच ओवर में शहीद भगत सिंह कॉलेज के बल्लेबाजों ने बीस रन बना लिए थे। पर कोई विकेट भी नहीं गिरा वंश सोच रहा था कि अगर कोई विकेट नहीं गिरा तो आने वाले ओवरों में ये बल्लेबाज बड़े शॉट मार सकते हैं।

आठवें ओवर में वंश ने बॉलिंग शुरू की और उसकी पहली बॉल पर छक्का पड़ा। वंश स्पिन बॉलर था। उसने दूसरी बॉल डाली जिस पर विपक्षी टीम के बल्लेबाज ने चौका जड़ दिया और स्कोर को पचास रन कर दिया।

अब मुझे भी मैच में मजा आने लगा। मैं विपक्षी टीम के साथ था पर निधि श्रीराम कॉलेज के साथ जो कि वंश का कॉलेज था। वंश ने तीसरी बॉल डाली जिस पर एक और चौका पड़ा।

निधि को अपने दोस्त का इस तरह से पिटना अच्छा नहीं लग रहा था। वंश ने चौथी बॉल डाली पर इस बार बल्लेबाज ने बॉलर को सम्मान देकर उसे डिफेंस कर दिया। निधि ने इस बॉल पर आँखें बंद कर ली थी।

ऐसे ही पाँचवीं बॉल पर बल्लेबाज ने डिफेंस किया। मैंने निधि से कहा, “देखो छठी बॉल पर विपक्षी टीम का बल्लेबाज बड़ा शॉट जरूर खेलेगा।”

निधि ने कहा, “सच में!”

“हाँ सच में। मैंने इतने मैच अभी तक देखे हैं कि इस बात को मैं लिखकर दे सकता हूँ।”

वंश ने दो फील्डरों को बाउंड्री पर भेजा। वो इस आखिरी बॉल पर रिस्क नहीं ले सकता था, पर अभी दो खिलाड़ियों को सौ गज के दायरे के बाहर रखा जा सकता था। वंश ने विकेट कीपर कि तरफ इशारा किया। विकेट कीपर ने भी हाँ का इशारा वंश की तरफ किया। फिर वंश छठी बॉल डालने को बढ़ा और उसने बॉल फेंक दी। तभी बल्लेबाज ने सटीक कदमों का इस्तेमाल करके आगे बढ़ा। वो बड़ा शॉट खेलना चाहता था पर वंश ने चतुराई से बॉल को वाइड फेंक दिया। बल्लेबाज विकेट से बाहर निकल चुका था और बॉल वाइड होने के कारण वो बॉल तक नहीं पहुँच पाया। विकेट कीपर ने बॉल को पकड़ा और बल्लेबाज को स्टंप आउट कर दिया।

अंपायर को विकेट कीपर ने शोर मचा कर अपील की तो बल्लेबाज अपने आप वहाँ से चला गया। सारा मैदान शोर और तालियों से गूँज गया। मैं भी वंश कि

सूझबूझ से हैरान रह गया। निधि भी चिल्लाने लगी। जब तक शोर होता रहा तब तक दूसरा बल्लेबाज विकेट पर नहीं आया।

मैं भी अब वंश के खेल का दीवाना होने लगा था। मैं अब उसकी बल्लेबाजी देखना चाहता था। सच में वो एक समझदार क्रिकेटर था फिर कोई बल्लेबाज ज्यादा कुछ नहीं कर सका और शहीद भगत सिंह कॉलेज ने चालीस ओवर में 240 रन का स्कोर बनाया। मैच का अगला भाग बीस मिनट में शुरू होना था। मैं स्टोर से बर्गर लेने चल दिया, पर निधि वहीं बैठी रही।

जब मैं निधि के पास बर्गर लेकर आया तो वो अपने बाल सँवार रही थी। मैंने उसे बर्गर दिया तो थैंक्स कहकर वह बोली, "अब देखना वंश कि बल्लेबाजी कैसी जबरदस्त होती है।"

"अरे वो कोई सचिन तेंदुलकर है जो तुम इतनी खुश हो रही हो?"

मेरी इस बात पर उसने मुँह बना लिया। मैं भी बर्गर खाने लगा। मुझे उसकी कमाल की मुस्कान की आदत थी, पर उसका मुँह बनाकर ऐसे बैठ जाना मुझे पसंद नहीं था। जैसे ही मैंने बर्गर समाप्त किया, मैदान पर अंपायर आते देखे। साथ में शहीद भगत सिंह के फील्डर भी आ रहे थे।

मैंने निधि से कहा, "वंश किस नंबर पर बल्लेबाजी करने आएगा?"

"वो तो ओपनर है इसलिए ओपनिंग में ही आएगा।" तब तक वंश भी मैदान में एक और बल्लेबाज के साथ क्रीज पर पहुँच गया।

मैच शुरू हुआ। वंश ने पहली बॉल खेली और एक रन बनाकर दूसरे छोर पर खड़ा हो गया। वंश की टीम ने पहले ओवर में एक ही रन बनाया।

ओवर बढ़ते जा रहे थे जो बढ़कर पाँच हो गए थे पर स्कोर बढ़कर अभी दस रन ही हुआ था। अगले पाँच ओवर में भी स्कोर कुछ ही बढ़कर मात्र तीस रन ही हो सका। अभी तक दस ओवर हो चुके थे श्रीराम कॉलेज के तीन कीमती विकेट भी इस दौरान गिर चुके थे। दर्शक कह रहे थे कि अब श्रीराम कॉलेज का हारना तय है क्योंकि विपक्षी टीम की फील्डिंग और बॉलिंग बहुत अच्छी है। पूरे टूर्नामेंट में वे बॉलिंग से ही जीतते आ रहे थे।

निधि ने एक दर्शक से कहा, "श्रीराम कॉलेज की बल्लेबाजी बहुत अच्छी है, देखना वो मैच जीत ही लेंगे।"

अब वंश ही श्रीराम को जिता सकता है, उसकी बल्लेबाजी से मैं ये तो समझ ही गया था। वो एक मँजा हुआ बल्लेबाज था। फिर सोचा कि कोई जीते या हारे,

मुझे इससे क्या लेना। और वंश इतना भी अच्छा खिलाड़ी नहीं था। यही सब सोचते-सोचते मैच के आधे ओवर निकल गए। स्कोर भी 102 रन हो गया था बीस ओवर के बाद। लेकिन तीन विकेट के बाद वंश की टीम का कोई विकेट नहीं गिरा। मुझे लगा कि अब वंश की टीम को तेज खेलना चाहिए जिससे विपक्षी टीम के हौसले टूट सके। तभी वंश अपनी क्रीज से निकला और एक स्पीन बॉलर को उसने छह रन के लिए उड़ा दिया।

अब मैच का रंग शबाब पर था। इस छक्के के बाद वंश ने अपनी बल्लेबाजी में तेजी ला दी। पर दूसरे छोर पर बल्लेबाज बस विकेट बचाने मेलगा रहा। अब मैच में रंग और बढ़ने लगा और वंश के हर शॉट पर मैदान में शोर होने लगा।

जैसे-जैसे ओवर बढ़ने लगे मैच में श्रीराम कॉलेज का पलड़ा भारी लगने लगा। अब दस ओवर और हो गए टीम का स्कोर बढ़कर 190 हो गया। मैच ने ऐसा पलटा मारा कि शहीद भगत सिंह कॉलेज हारने लगा। उसकी लाख कोशिशों के बाद भी श्रीराम कॉलेज का विकेट नहीं गिरा।

शहीद भगत सिंह कॉलेज के समर्थक अब मैदान से जाने लगे। बाकी के ओवर में भी वंश तेज ही खेलता रहा। ऐसा लगा 35वें ओवर में ही मैच खत्म हो जाएगा। जब बस दस रन ही चाहिए थे, तभी वंश के जोड़ीदार बल्लेबाज ने एक तेज शॉट खेला पर वो बाउंड्री पर लपका गया। पर अब देर हो चुकी थी। वंश ने इस दौरान अपनी सेंचुरी पूरी कर ली थी। थोड़ी ही देर में श्रीराम कॉलेज ने 240 रन का स्कोर पूरा कर लिया। वंश ने जैसे ही विनिंग शॉट में चौका लगाया, श्रीराम कॉलेज के समर्थकों ने फिल्ड में दौड़ लगाकर वंश को कंधों पर उठा लिया। निधि ने उस पल का वीडियो बना लिया।

मैच समाप्त होने के बाद बड़ी-सी ट्रॉफी वंश और उसकी टीम को दी गई। साथ में वंश 'मैंन ऑफ द मैच' और 'मैन ऑफ द टूर्नामेंट' भी बना। मैं वंश के खेल से बहुत प्रभावित था। निधि तो उसकी फैन थी ही।

मैंने निधि से कहा, "अब घर चलते हैं।"

"नहीं, अभी नहीं। अभी वंश से मिल लेते हैं।"

"ठीक है, जल्दी से उससे मिलकर आओ।"

"तुम नहीं मिलोगे?" निधि ने धीरे से पूछा। मुझे लगा की उसने सिर्फ निधि को बुलाया है मेरा वहा जाना सही भी है या निधि को ही जाना चाहिए। मैंने ना मिलने का मन बनाया।

मैंने कहा, “वो तुम्हारा दोस्त है और उसने तुम्हें मैच देखने के लिए बुलाया है मुझे नहीं।”

“ठीक है, मैं ही जाती हूँ। तब तक मेरा यहाँ पर इंतजार करना।”

“ठीक है, जल्दी आ जाना। मेरा ट्यूशन टाइम होने वाला है।”

सिर हिलाकर निधि मुस्कुराती हुई भीड़ से निकलती हुई वहाँ से चली गई। मैं फिर उस कॉलेज को देखने लगा। उसकी इमारत पुरानी लग रही थी, पर यहाँ पर पढ़ रहे सभी स्टूडेंट नए थे। मैंने वहाँ पढ़ रहे सब स्टूडेंट्स को गौर से देखा जो अच्छे-अच्छे कपड़ों के साथ बड़े फैशन में थे। लड़कियाँ तो ऐसे भरी पड़ी थी कि एक से एक सुंदर। सब की सब स्वर्ग से उतरी अप्सरा लग रही थी।

घूमते-घूमते मैं स्टोर पर पहुँच गया जहाँ पर खाने की सामग्री मिल रही थी। मैंने फिर एक कोल्ड ड्रिंक ली और मैदान मेजाकर बैठ गया। सोचने लगा कि मैं भी अगले साल से ऐसे ही कॉलेज में पढ़ूँगा और ऐसी ही किसी अप्सरा से दोस्ती करूँगा। दिल्ली के सभी छात्र जो बारहवीं में पढ़ते हैं उन सबके ही ऐसे ख्वाब होते हैं वे कॉलेज को किसी प्यार करने की फैकर्टी मानते हैं लड़के हो या लड़कियाँ सब चाहते हैं कि वे अपना साथी यहा ढूँढ़ ले नहीं तो प्यार करने के उन के सपने, सपने ही रह जाने है।

मैंने अपनी घड़ी में समय देखा तो दोपहर के दो बजने वाले थे, पर निधि अब तक वंश से मिलकर नहीं आई थी। मैंने उसे फोन किया, पर उसने फोन नहीं उठाया। मैंने फिर कोशिश की पर अब भी फोन नहीं उठाया। मैं उसे कॉलेज के हॉल में ढूँढने लगा, पर वो कहीं नहीं दिखी। मैंने उसे हर जगह देखा। काफी देर बाद वो मुझे खिलाड़ियों के कमरे में मिल गई। वंश और निधि वहाँ बैठे हुए थे। जैसे ही वंश ने मुझे देखा, उसने मेरी तरफ एक मुस्कान फेंक दी।

मैंने वंश से कहा, “आप ने आज बहुत अच्छा खेला।”

उसने कहा, “सभी यही कह रहे हैं।” जैसे की उसके लिए ये सब आम बात हो। पर शायद अपने खेल से वो बहुत खुश था। मुझे एक बार तो लगा बेकार में मैं उसका भाव बढा रहा हूँ।

“पर सच मेलाजवाब खेल था।”

“हाँ,मेरे जीवन का यह सबसे अच्छा क्रिकेट मैच था।”

मैंने निधि को कहा, “निधि, मुझे घर जाना है। मेरे ट्यूटर आने वाले होंगे।” निधि ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। मैंने फिर से उससे कहा, “हमें घर चलना

चाहिए निधि।"

लेकिन इस बार जवाब वंश ने दिया, "निधि मेरे साथ यहाँ रुकेगी। आप जा सकते हैं।"

निधि ने मासूम-सा चेहरा बनाते हुए कहा, "प्लीज राघव!"

वंश ने दोबारा कहा, "आप अकेले ही चले जाएँ भईया।"

मैंने निधि का चेहरा देखा तो वो मुस्कुरा रही थी। मुझे बहुत बुरा लगा। मेरी आँखों में आँसू आ गए पर मैं आँसुओं को छुपाते हुए वहाँ से बाहर आ गया।

बाहर आकर मैंने रोते हुए बुलेट स्टार्ट की और चलने लगा। तभी किसी ने पीछे से आवाज दी, "भईया रुको, मुझे लाडो सराय जाना है, मुझे वहाँ छोड़ देना। मैं आपको जानता हूँ।"

मैंने उसको अपनी बाइक पर बिठा लिया। लाडो सराय महरौली के पास ही है। मैं तेजी से बुलेट को भगाता हुआ चल दिया। मैंने अपना हेलमेट भी नहीं पहना था। तेजी से ट्रैफिक को काटता हुआ जा रहा था कि तभी वो लड़का बोला, "क्या बारिश हो रही है,मेरे चेहरे पर बूँदें पड़ रही है?"

मैंने कहा, "हाँ हो रही है।"

"पर आसमान में तो काले बादल है ही नहीं!"

मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। ये पानी बादल नहीं बरसा रहा था, वो तो मेरी आँखों से बह रहा था। मुझे रोता देखकर वो लड़का समझ नहीं पाया कि बात क्या थी। आधे घंटे में मैंने उसे लाडो सराय छोड़ दिया और अपने घर की तरफ चल दिया। घर के बाहर मैंने बाइक लगाई। अंदर घर पर मेरे ट्यूटर आ चुके थे। मैंने उन्हें नमस्ते कहा और घर में घुस गया।

अध्याय-5

मैं अपने कमरे में बैठा हुआ इतिहास की किताब पढ़ रहा था। कमरे में टेबल लैंप जल रहा था जिसकी रोशनी सिर्फ मेरी किताब पर पड़ रही थी। सारे कमरे में किताबें फैली पड़ी थी, जिस में इतिहास, राजनीति विज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी आदि सभी विषयों की किताबें थी। साथ में नोट्स भी फैले हुए थे।

मैं पढ़ तो रहा था, पर मेरा ध्यान कहीं और था। निधि का चेहरा उसका ये कहना बड़ी ही मासूमियत से की प्लीज राघव और वंश का कहना आप ही चले जाएँ भईया। निधि के उस दिन के व्यवहार से मैं तड़प रहा था। लाख कोशिश के बाद भी मैं अपना ध्यान किताब में नहीं लगा पा रहा था। मैंने अपने मन को समझाया- दिमाग ठीक कर ले, वरना कॉलेज तो क्या पास तक नहीं हो पाएगा।

निधि के उस दिन के बर्ताव को एक महीना हो गया था, पर फिर भी निधि मेरे दिमाग से नहीं निकल पा रही थी। मैंने उससे बात करना छोड़ दिया था। नहीं-नहीं, असलियत में उसने ही मुझे कॉल नहीं किया और न ही मिलने की कोशिश की। हालाँकि उस दौरान मैं उसे दो बार कॉल कर चुका था। पर उसने मेरे कॉल कट कर दिए थे।

मैं निधि को बहुत प्यार करता था। लेकिन वंश की तरफ ऐसे उसके इस तरह झुक जाने से मेरा दिल टूट गया था। इसलिए वो मुझे रह-रहकर याद आ रही थी।

पढ़ते-सोचते देर रात हो गई तो मैंने टेबल लैंप बंद कर दिया और रसोई में चाय बनाने चल दिया। जैसे ही मैंने चाय का बर्तन गैस पर चढ़ाया और गैस चालू की तो देखा सिलेंडर खाली पड़ा था। सोचा कि चाय हीटर पर बना लेता हूँ, फिर याद आया कि एक भरा सिलेंडर रखा तो है ही। मैंने सिलेंडर को निकाला और चूल्से से उसे लगाकर गैस चालू की तभी मम्मी खटपट की आवाज से अपने कमरे से बाहर आ गई और कहा, “इतनी रात को चाय बना रहे हो? नींद नहीं आएगी।”

“सिर्फ आधा कप बनाऊँगा।”

मम्मी वहाँ से कमरे में चली गई। अभी रात के दो बजे थे। चाय पीकर मैं अपने बिस्तर पर लेट गया। घंटे भर तक नींद नहीं आई। रात तीन बजे के करीब थोड़ी नींद आई, तब मैं सो पाया।

सुबह उठा तो महसूस किया कि फिर से मुझे निधि कि यादों ने घेर लिया। मैं सुबह-सुबह ही उदास हो गया। जैसे-तैसे तैयार होकर मैं स्कूल के लिए निकला। महरौली की चढ़ाई और ढ़लान से होते हुए मैं स्कूल पहुँचा। तब उस सरकारी स्कूल

में प्रार्थना नहीं होती थी, सीधे कक्षा लगती थी। सबसे पहले राजनीतिक विज्ञान की कक्षा थी। जिस अध्याय को टीचर पढ़ा रहा था, वो मुझे बोरिंग लगा और मैं निधि के खयालों में खोया रहा। अभी पंद्रह मिनट ही हुए थे सोचते हुए कि तभी मेरे सर पर चॉक आकर लगा। मैंने देखा कि टीचर ने मुझे चॉक मारा और जोर से चिल्लाया।

"ऐ देवदास! कहाँ खोए हो? पढ़ाई पर ध्यान दो।"

मैंने हाँ में सिर हिला दिया। पंद्रह मिनट बाद लड़कों से होमवर्क माँगा गया। मैंने भी जैसे-तैसे किया होमवर्क टीचर को दिखाया।

मैंने देव से कहा, "चल स्कूल से आज बंक मारकर कुतुब मीनार चलते हैं।" ठीक है यार मेरा भी मन पढ़ाई का नहीं है आज बंक मार ही लेते हैं, सोनू भी तैयार हो गया। हम कुतुब मीनार को निकल लिए। हमने बस स्टैंड से बस पकड़ी जिसका अगला स्टॉप ही कुतुब मीनार था। हम कुतुब मीनार के कैंपस में घास के मैदान पर बैठ गए। हम तीनों में अभी बात नहीं हो रही थी। कुछ देर की चुप्पी के बाद सोनू ने कहा, "देखो उस फॉरेनर को, जो सिगरेट पी रही है। उसके सिगरेट पीने पर धुआँ नहीं निकल रहा है।"

मैंने कहा, "ऐसा नहीं हो सकता है।"

"मैं सच कह रहा हूँ, उसके कश का धुआँ नहीं निकल रहा है।" फिर हम उसके कश लेने तक उसे देखते रहे। लेकिन उसके मुँह से तो धुआँ निकलता दिख रहा था। सोनू हँसने लगा। ये एक मजाक था। देव ने उसको एक घूँसा पीठ पर मारा। मैंने भी उसे एक चपत लगाई। बातचीत में देव पढ़ाई की बातें करने लगा कि परीक्षा में क्या आएगा और क्या नहीं।

मैंने कहा, "बात करने के लिए सिर्फ पढ़ाई रह गई है और बातें नहीं हो सकती है?"

"हाँ तो फिर तेरी निधि की बातें करें क्या?" सोनू ने कहा। पर इस बारे में मैं गम्भीर था।

"पर पढ़ाई की बातें करके भी क्या फायदा है यहाँ, इससे हमें क्या मिलेगा? हम रात-दिन पढ़कर कॉलेज में दाखिला ले लेंगे, फिर क्या होगा? हम एक दिन बी.ए. कर लेंगे, फिर हम जैसे-तैसे एक सरकारी नौकरी पा लेंगे। बस एक दिन कलर्क बन जाएँगे, उसके बाद तीस-चालीस हजार की पगार, जो महीने की एक तारीख को मिलेगी और बीस-पच्चीस तारीख आते-आते लगभग सारा पैसा खत्म हो जाएगा।" मैंने कहा।

“तो क्या करें हम और कर भी क्या सकते हैं?” देव ने कहा।

“कर क्यों नहीं सकते? हम कोई बिजनेस कर सकते हैं।”

“जैसे निधि के पापा करते हैं बाजार में शोरूम खोलकर?” यह कहकर सोनू हँसा। सुन कर मुझे चिढ़ हुई।

तब देव ने कहा, “क्या पढ़ाई सिर्फ नौकरी के लिए है? हम पढ़कर भी कोई बिजनेस कर सकते हैं।”

“पर बिजनेस के लिए दिमाग चाहिए और अब हम जितना पढ़ चुके हैं, वो काफी है।” मैंने कहा।

इसी तरह की बातें करते हुए और पढ़ाई से लेकर बिजनेस की बातें सोचते हुए घूमकर हम घर आ गए।

अध्याय-6

अगले दिन मैं स्कूल के लिए निकला तो जरूर लेकिन स्कूल के गेट पर ही ठिठक गया। ऐसा लग रहा था कि दो महीने से जबरदस्ती का काम रह गया था स्कूल जाना। मैं कुछ पढ़ तो पाता नहीं था। बस रोज जाता था और निधि को भूल पाने की कोशिश करता था। मगर वो था कि उसे भूल ही नहीं पा रहा था।

इस चक्कर में मैं अपने दोस्तों से भी कट गया था। स्कूल जाने पर भी मैं अक्सर निधि के बारे में ही सोचता रहता था। घर-परिवार से तो कब से दूर हो गया था।

मैं स्कूल गेट से वापस मुड़कर सुरेश हलवाई के पास गया और खौलते तेल में तल रहे समोसों का इंतजार करने लगा। एक बड़ी-सी कड़ाही में तल रहे समोसे जैसे ही बाहर निकले, ग्राहक टूट पड़े। मैंने दस का नोट आगे कर दिया। मुझे देखकर सुरेश हलवाई को अचरज हुआ, क्योंकि ये मेरे स्कूल जाने का वक्त था। लेकिन उसने कुछ पूछः बिना समोसे दे दिए। मैं धीरे-धीरे दोनों समोसे खा गया।

मैं फिर खारी बावड़ी के लिए चल दिया। रास्ते भर यही सोचता रहा कि अब जो हो जाए मैं निधि को भुला दूँगा। खारी बावड़ी का असली नाम तो राजो की बावरी है पर महरौली में ये खारी बावड़ी के नाम से जानी जाती है जिसे पंद्रहवीं सदी में पानी को स्टोर करने के लिए बनाया गया था उस समय इसे धर्मशाला के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता था जहा पर दिल्ली में आए व्यापारी ठहरते थे। ये महरौली में एक सुंदर खण्डहर है जिस में अक्सर शूटिंग होती रहती है। यह महरौली के बस स्टैंड के पास तीन मंजिला खण्डहर है और सामने एक पानी का हौद नुमा गड्ढा है जिसके तीनों तरफ तीन मंजिला खण्डहर है। उस गड्ढे में उतरने के लिए सीढ़ियाँ हैं, पर अब वहाँ पानी नहीं था। गड्ढे के तीनों तरफ कमरे बने थे। वहीं पर सकरी सी सीढ़िया है मैं उन सीढ़ियों से ऊपर चला गया। ये खण्डहर एक हॉन्टिंग जगह भी है, मैंने सुना था। यहाँ अक्सर लाशें भी मिलती रहती है पर मैं इन सबसे डरता नहीं था। मैं ऊपर जाकर मुंडेर पर बैठ गया। मैंने देखा एक बाबाजी भी वहीं बैठे थे। वो गाँजा पी रहे थे। मैंने इस बारे में ध्यान नहीं दिया।

मैं वहाँ बैठा निधि की बेवफाई के बारे में सोचता रहा कि तभी वो बाबा मेरे पास आ गए। मैं एकांत चाहता था इसीलिए जैसे ही बाबा मेरे पास आए, मैं वहाँ से चल दिया।

बाबा जी देखने से ही कुछ अलग ही लग रहे थे वे हट्ठे-कट्ठे छः फीट के होंगे उनका चेहरा गोरा और गोल था हाथ में कई चाँदी और सोने की अगुठियाँ थी वस्त्र में उन्होने भगवा धोती-कुर्ता पहना था।

तभी बाबा ने आवाज लगाई-राघव... राघव!

मैं स्तब्ध रह गया और सोचने लगा कि वो मुझे कैसे जानते थे! बाबा ने फिर से आवाज लगाई। मैं उनके पास गया और बैठ गया। मैंने जरा भी कोशिश नहीं की जानने की कि वो मुझे कैसे जानते थे। बाबा ने मेरे सर पर हाथ रखा और कहा, "तो प्यार का मामला है।" मैं फिर भी कुछ नहीं बोला तो बाबा ने अपनी गाँजे की चिलम आगे कर दी। मैंने बिना सोचे-समझे उसे पीना शुरू कर दिया। मैंने जैसे ही पहला कश लिया, मैं खासने लगा। बाबा ने मेरी पीठ पर हाथ रखा और चिलम वापस लेने लगे पर मैंने मना कर दिया और मैं दम-पे-दम मारने लगा। मैंने कोई पाँच कश तेजी से लिए और वहीं लेट गया। मुझे गाँजे का नशा हो गया और मैं किसी और दुनिया में पहुँच गया।

नशे के कारण मेरी आँखें अधखुली हो गईं। मुझे अब होश नहीं था। आँख बंद होते ही सबसे पहले मुझे निधि का वो तीन साल पुराना चेहरा दिखा, जब हमारी पहली बार बात हुई थी। वो लाल साइकिल चला रही थी। उसने लाल सर्कट पहनी थी उस का चेहरा उस समय बड़ा ही आकर्षक दिख रहा था नाक लम्बा बड़ी-2 आँखें बिल्कुल गोरा रंग बालों की उसने चोटी बना रखी थी पर बालों की एक लट खुली छोड़ रखी थी वो अपनी ऊम्र से जयादा ही मैच्योर लग रही थी पैरों में उसने जूते पहने थे। उसे दिल्ली में आए कुछ महीने हुए थे। वो गली में साइकिल चला रही थी और मैं उसे निहार रहा था। मैं उससे कभी आँख मिलाता था तो कभी शर्म से दूर चला जाता था। मेरे साथ देव था। उसने कई चक्कर हमारे पास लगाए। थोड़ी देर में वो रुक गई और हमारी तरफ देखने लगी। पर ना देव की हिम्मत उससे बात करने की हो रही थी ना मेरी। तभी निधि ने मेरी आँखों में देखते हुए कहा, "क्या तुम मेरे घर से मेरी माँ को बुला सकते हो? मेरी स्कर्ट साइकिल की चेन में फँस गई है।"

मैंने कहा, "अगर आप साइकिल की चेन को उलटी दिशा में घुमाओगी तो स्कर्ट निकल जाएगी।" इतना कहकर मैं और देव आगे निकल गए।

देव ने कहा, "मुझे बाजार से कुछ सामान लाना है, मैं अभी जाता हूँ।"

उसके वहाँ से जाते ही निधि साइकिल से मेरे पास आई। मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई।मेरे पास आकर निधि ने कहा, “आपका क्या नाम है?”

मैंने कहा, “राघव छाबड़ा। और आपका नाम निधि गुप्ता है न?”

“हाँ मेरा नाम निधि है, किसने बताया?”

“सोनू ने बताया है।” वो थोड़ा सा हँसी और अपने घर के तरफ चली गई। पहली ही बार में वो मेरे मन में घर कर गई थी बातें तो हमारे बीच साधारण हुई थी पर इसमें प्यार छलकता था।

हम दोनों में इससे ज्यादा बात नहीं हुई। मैं अपने घर चला गया और वो अपने। सारी रात मैं उसके बारे में सोचता रहा था कि वो कितनी सुंदर है उसकी वो लाल चेक की स्कर्ट उसका लाल टॉप। उसकी आँखों की चमक मुझे सारी रात जगाती रही थी।

बाबा ने मेरी आँख पर पानी की छींटे मारे तब मैं होश में आया। बाबा ने कहा, “पहली बार भोले का परसाद लिया है।”

मैंने उन्हें कुछ नहीं कहा। मैं चुपचाप उठा और वहाँ से घर जाने लगा। बाबा ने कहा, “लड़की बहुत सुंदर थी तुम्हारे सपने में।”

मुझे समझ में नहीं आया कि बाबा को कैसे मालूम हुआ मेरे सपने के बारे में! फिर भी मैंने बाबा से बात नहीं की और घर को निकल गया।

उस चमत्कारी बाबा के बारे में मैं रात भर सोचता रहा कि कैसे उन्होंने मेरे सपने को पढ़ लिया था। साथ में मेरा नाम भी पता चल गया था और ये भी कि मैं निधि के बारे में किस सोच में डूबा हुआ था।

अब मेरे प्यार की तड़प दोगुनी हो गई थी। मुझे निधि का बचपन का चेहरा याद आ रहा था। उसकी कितनी सुंदर मुस्कान थी। यह सोचते हुए मैं डर गया कि वो मुझे भूल गई थी।मेरा क्या होगा? कैसे कटेगी मेरी जिंदगी? सोचते-सोचते मैं कब सो गया, मुझे पता ही नहीं चला।

सुबह मम्मी ने मुझे एक कप चाय के साथ उठाया। और स्कूल के लिए तैयार होने को कहा। मैं भी तैयार होकर स्कूल चल दिया। जाते समय मम्मी ने दस का नोट दिया। लेकिन मैं फिर से स्कूल नहीं जा सका। मैं वहीं खारी बावड़ी चला गया। मैं वहाँ पहुँचकर सीधा खण्डहर के ऊपर सीढ़ियों से चढ़ गया और ऊपर जाकर वहीं बैठ गया।

तभी देखा कि बाबाजी गाँजा पी रहे थे। मुझे देखकर वो मुस्कुराए। मैंने भी उन्हें स्माइल दी। बाबा जी मेरे पास आए और कहा, “सब माया है।”

मैं कुछ नहीं बोला तो उन्होंने चिलम मेरे हाथ में दे दी। मैंने कुछ दम गाँजे के मारे और कल की तरह ही सब सुन्न हो गया। मैं बाबा के घुटने पर सर रखकर लेट गया। बाबा ने फिर से कहा, “सब माया है।”

मैंने बाबाजी से कहा, “बाबाजी ये माया क्या होती है?”

बाबा ने कहा, “ये दुनिया का जो मेला है, इसे ही माया कहा जाता है।”

“बाबा, क्या मुझे निधि मिलेगी?”

“माया है, पर मिलेगी ठोकर खाकर।”

“पर बाबा, वो किसी और से प्यार करने लगी है।”

“हाँ पर सच्चे प्यार में नहीं, माया में पड़ी है, माया में।” बाबा के कहने भर से की निधि मुझे मिल जाएगी मेरे दिल को आराम मिला।

“बाबा, मैं कॉलेज मेजा पाऊँगा।”

“मैं भगवान नहीं हूँ।” वो शायद सही कह रहे थे कोई भी बाबा सब कुछ नहीं बता सकते हैं पर अपने ज्ञान से ही थोड़ा बहुत जानते जरूर हैं कि भविष्य क्या है। पर बाबाजी मुझे पहुँचे हुए ज्ञानी लगते थे।

“तो क्या नहीं पहुँच पाऊँगा?”

“सब माया है माया।” ये कहते हुए बाबा लगातार गाँजे मेलगे रहे।

मैंने भी बाबा से चिलम ली और खींचने लगा। तब तक खींचता रहा जब तक कल की तरह बेहोश नहीं हो गया। मैं खण्डहर की छत पर लेट गया। फिर से निधि मेरे सपने में दिखी। मैं कहीं जा रहा था। मैंने पहली बार निधि को देखा। याद आया कि मैं मंदिर में दीवाली की पूजा के लिए गया था। निधि भी अपने परिवार के साथ चल रही थी। उसने काली स्कर्ट के साथ टॉप भी काला पहना था। वो मुझे देख रही थी मुस्कुराते हुए। मैं भी उसे शरमाते हुए देख रहा था।मेरे दिल की धड़कन बढ़ी हुई थी। हालाँकि वो मुझे देखते हुए बिलकुल भी शरमा नहीं रही थी।

मेरी जिंदगी में ये पहली बार हो रहा था कि कोई लड़की मुझे ऐसे देख रही थी। उसे देखकर अपने आप में जो खुशी मुझे हो रही थी, वैसी खुशी कभी नहीं हुई थी।

हम मंदिर में पहुँचे, जहाँ मैंने शिव की मूर्ति से कहा, “भगवान! ये समय ऐसे ही चलता रहे।”

मुझे तब पहली बार प्यार का अनुभव हुआ था। शिव पर मैंने जल और दूध चढ़ाया। पीछे देखा तो निधि पूजा के इंतजार में खड़ी थी। मैंने उसे तब पहली बार पास से देखा। वो बड़ी ही सुंदर दिख रही थी। इसलिए मेरी उससे बात करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। मेरी पूजा खत्म हुई तो मैं मंदिर के गेट पर खड़ा हो गया और उसके आने का इंतजार करने लगा। गेट पर उसे देखकर मैं घर की तरफ चल दिया। निधि भी मेरे पीछे-पीछे चल रही थी। मैं उसे पलट-पलट कर देख रहा था पर डरते हुए। ऐसा अनुभव मुझे पहली बार हो रहा था। कई बार तो मैं सोचता रहा कि वो या उसके परिवार का कोई आदमी ये ना कह दे कि मैं क्यों पलटकर देख रहा हूँ।

मैं अब अपने घर के पास था। मैं भगवान से मना रहा था कि हे भगवान, रास्ता और लंबा होना चाहिए था। मैंने उसे एक बार फिर देखा और घर में घुस गया। उस दिन मुझे रात भर नींद नहीं आई। सोचता रहा कि क्या यही प्यार है जो मुझे उससे पहली ही नजर में हो गया था। मैंने भगवान से मनाया कि भगवान, वो मुझे फिर से दिख जाए।

तभी अचानक मेरी नींद खुल गई। सामने बाबा थे। मैं झटपट उठ गया और रोने लगा, “क्या वो मुझे भूल गई?”

“सब माया है माया।” बाबा ने कहा।

मैंने आँखें पोंछी और घर के लिए चल दिया। बाबा मेरे जाने तक कहते रहे, “माया है बेटा, माया है।”

मुझे लगा कि बाबा नशे में हैं इसलिए उनका दिमाग खराब हो गया है। घर आने तक सपनों ने मेरे दिमाग में आग लगा रखी थी। मैं अभी निधि के पास जाना चाहता था पर ना जा सका। मेरी तड़प इतनी थी कि मैं बयान नहीं कर सकता था। बाबा का कहना कि माया है माया मेरी समझ से बाहर था। मैं पढ़ाई करने बैठा भी तो मेरा दिमाग कहीं और था। मैं अपनी कॉपी में बस ‘निधि’ ही लिखता रहा।

शाम को मैं घर की छत पर गया, पर वहाँ सब कुछ खाली था। मजबूरी में मैं नीचे उतर आया।

गाँजे की वजह से मैंने बहुत खाना खाया, पर पेट नहीं भर रहा था तो सोचा मम्मी को पता न चल जाए कि कुछ गड़बड़ है, इसीलिए खाना छोड़ दिया।

तभी अमित आया और कहा, “तुम स्कूल नहीं जाते हो?”

“तुम्हें इससे मतलब!” मैं थोड़ा सहम गया कि उसे कैसे पता चला की मैं स्कूल की जगह कहीं और दो दिन से जा रहा हूँ।

“वो मैं इसीलिए पूछ रहा था क्योंकि रास्ते में देव मिला था, वो कह रहा था कि तुम बीमार पड़े हो क्या जो स्कूल नहीं जा रहे।” सुन कर मेरे होश उड़ गए मैंने बात को सँभालने के लिए कहा “वो मजाक कर रहा होगा। वो मुझे स्कूल में मिला था।

अच्छा ठीक है, अब यहाँ लाइट मत जलाना, मैं सो रहा हूँ कुछ देर के लिए।” मैं कंबल ओढ़कर उस में रोने लगा।

कुछ देर बाद अमित ने कहा, “चाय पीनी है?” मैंने कंबल से ही ना में सर हिला दिया और रोते हुए ही सो गया। जब उठा तो रात के दो बज रहे थे। भूख लग गई थी। किचेन में गया और फ्रीज में रखा खाना गर्म करके खाकर मैं फिर सो गया।

अगले दिन मुझे स्कूल के रास्ते में देव मिला। देव ने कहा, “क्या तुम दो दिन से बीमार हो जो स्कूल नहीं आए थे?”

मैंने उसे जवाब नहीं दिया तो उसने फिर से पूछा, “दो दिन स्कूल क्यों नहीं आए थे?”

“हाँ मैं कहीं चला गया था इसीलिए नहीं आया था।”

“पर तेरा भाई तो कह रहा कि था तू घर पर ही था।” देव इसी तरह से जब मैं कोई गलती करता था मुझे समझाता था पर वो बात बचपन की थी इस नए तरह के राघव को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था की कोई इतना अन्दर तक मेरे अन्दर मेरी जिन्दगी में घुसे।

“हाँ मैं शाम को घर आ जाता था।”

“तू झूठ बोल रहा है। सच बता कहाँ गया था?”

मैंने देव को कुछ नहीं बताया तो उसका भाषण शुरू हो गया, “पढ़ना नहीं है जो आवारा हो गए हो?”

मैंने खींझते हुए कहा, “पढ़ाई के अलावा कुछ काम नहीं रह गया है क्या जिंदगी में?”

बात करते-करते हम स्कूल के गेट पर पहुँच चुके थे। मैं फिर से गेट से आगे नहीं बढ़ा तो उसने पूछा, “क्या स्कूल नहीं आना है?”

“नहीं मैं कल से स्कूल आ जाऊँगा।”

“पर आज क्यों नहीं?”

“मुझे कुछ दिन शांति चाहिए।” मैं उससे ये नहीं कह सकता था मेरी निजी जिन्दगी में ना घुसे। वो मेरा बचपन का दोस्त जो था।

“पर तुम जाओगे कहाँ?”

“खारी बावड़ी।”

“जानते नहीं वो डरावनी जगह है?” सुन कर लगा की वो अभी भी ऐसे डरता है खारी बावड़ी के नाम से की कोई बच्चा हो जिसे उस की मम्मी डराती हो।

“जानता हूँ, पर आज नहीं आ पाऊँगा। घर पे कुछ नहीं बताना, कल से पक्का आ जाऊँगा।”

“पर ऐसा क्या है वहाँ?”

“वो मैं कल बता दूँगा। मुझे कुछ सवालों के जवाब तलाशने हैं। अच्छा अब चलता हूँ।”

“सँभल कर, कहीं फँस मत जाना। लोग अच्छे नहीं हैं।”

मैंने देव की नहीं सुनी और वहाँ से खारी बावड़ी के खण्डहर में चला गया। जैसे ही मैं वहाँ ऊपर गया तो बाबा को खोजने लगा। वो मुझे कहीं नहीं दिखे। थककर मैं वहीं बैठ गया। कोई पाँच मिनट बाद बाबा एक पेड़ से नीचे उतरे। पेड़ की डाल छत से भिड़ी थी। वो गाँजा पी रहे थे। मैंने उनसे चिलम लेनी चाही तो उन्होंने मना किया, “ये मुफत में नहीं मिलती।”

मैंने चुपचाप अपने हाथ खींच लिए। मुझे गाँजे की तलब हो रही थी। मैं एक तरफ छत पर घूमने लगा। फिर कुछ देर में बाबा मेरे पास आए, “सब माया है।” बाबा ने ये जुमला कहते हुए चिलम मेरी तरफ कर दी। मैंने कुछ कश चिलम से मारकर चिलम बाबा को वापस दे दी और बाबा से कहा, “आप इतने ज्ञानी कहाँ से बने?”

मेरी इस बात पर बाबा हँसे, “अपने गुरुजी से। जैसे तुम्हारे स्कूल के गुरु जी हैं।”

“बाबा, कोई टोना-टोटका करके मुझे निधि से मिला दो।”

“नहीं ऐसा कुछ नहीं हो सकता।”

“क्या निधि मुझे मिलेगी ही नहीं?”

“सब माया है, वो अभी माया में है।” मैं परेशान था बाबा इतने ज्ञानी होते हुए भी मेरे लिए कुछ नहीं कर रहे थे। सोचते हुए मैंने पूछा

“वो कब निकलेगी इस मायाजाल से?”

“खुदा जाने।”सोचने लगा वे शायद मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते पर बाबा के इतने ज्ञानी होने का क्या फायदा जब वे मेरे छोटे से काम को ना कर पाए

“क्या बाबा आप मुसलमान हैं?”

“मैं इनसान हूँ।”

“तो क्या वो वंश के चक्कर में फँसी रहेगी?”

“वंश अहंकारी माया और वासना में पड़ा है। जब वो सब जान लेगी तब तुम्हें मिल जाएगी।”

“बाबा, वो दो दिन या महीने में आएगी?”

मेरे इस सवाल पर बाबा हँसे और चिलम मुझे देते हुए बोले, “सब माया है।”

मैंने चिलम वापस बाबा को दी और वहाँ से चलने लगा। तब बाबा ने पीछे से कहा, “बेटा कुछ पैसे हैं तुम्हारे पास? वैष्णो देवी जा रहा हूँ।” बाबा के पास इतने पैसे भी नहीं है की वे वैष्णो देवी जा सके इतने पहुँचे हुए हैं फिर भी। ऐसे ज्ञान का क्या फायदा।

“इतने पैसे नहीं हैं मेरे पास। बस बीस रुपये हैं।”

बाबा हँसे, “वही दे दो।”

मैंने दस के दो नोट बाबा को दे दिए।

“बेटा, कभी अहंकारी वासना माया में नहीं पड़ना, नहीं तो तुझे नहीं मिलेगी निधि।”

मैंने कहा, “जो आज्ञा बाबाजी। पर बाबाजी वैष्णो देवी क्यों जा रहे हो?”

“तेरी निधि को तुझे मिलाने के लिए माता से मन्नत माँगूँगा।” सुन कर मुझे बड़ी खुशी हुई की कोई मेरी तकलीफ को समझता है।

“पर बाबाजी आप तो बहुत पहुँचे हुए हो, आप भी माता से माँगोगे?”

“हाँ, माया में तेरे लिए पड़ गया हूँ।” इतना कहकर बाबा ठहाका मारकर हँसे तो उनके बालों की लट खुल गई। उनके बाल जमीन तक लंबे थे।

“बेटा, बाल धूप में सफेद नहीं किए हैं।” ये कहते हुए बाबा ने हाथ की चिलम फेंक दी। चिलम टूटकर दो टुकड़े हो गई। “अब ना पीऊँगा तुझे।” ये कहते हुए वहाँ से निकल गए, “जय माता वैष्णो देवी!”

मैंने कहा, “बाबा, माया में पड़ गए हो।”

ये सुनकर बाबाजी हँसे और आगे बढ़ गए। मैं भी अपने स्कूल के लिए निकल गया। बाबाजी की बातों से मुझ में अजब-सा आत्मविश्वास आ गया था। मैं स्कूल में

पहुँचा तो पहला पीरियड निकल चुका था और सर क्लास लेकर जा रहे थे। मैं एक दूसरी क्लास में छिप गया कि कहीं मुझे इस समय आता देखकर सर कुछ पूछ ना लें। अगला पीरियड इतिहास का था।

मैं झट से कक्षा में घुस गया सर के जाते ही। सब मुझे हैरानी से देखने लगे। देव ने कहा, मिल गया सवालों का जवाब भूतिया खण्डहर में। मैंने हाँ में सर हिला दिया।

इतिहास के टीचर भी कुछ देर में आ गए और पढ़ाने लगे। मैं तेजी से नोट्स लिखता रहा।

क्लास खत्म हुई तो हम बाहर समोसे खाने चले गए। देव ने कई बार पूछा, “क्या करने गया था भूतिया खंडहर में?”

लेकिन मैंने कोई ठीक से जवाब नहीं दिया देव और सोनू को। तो दोनों समझ गए कि कोई खास बात है जवाब नहीं मिलने वाला है।

स्कूल खत्म होने पर मैंने सोनू से उसके नोट्स माँगे सभी विषयों के, घर आकर मैंने खाना खाया। मैं आज खुश था। मैं जानता था निधि मुझे दोबारा मिल जाएगी। क्योंकि बाबाजी ने कहा था जानता था बाबा पहुँची हुई चीज है शाम को मेरे ट्यूटर से मैं दो महीने बाद ठीक से मन लगा कर पढ़ा था अब मुझे ऊपर जाकर निधि को देखने का मन नहीं हुआ।

रात को भी मैंने सोनू के नोट्स को भी ध्यान से पढ़ा और रात को दो बजे सोया। अमित को भी मेरी खुशी का पता था। सोते हुए अमित ने मुझे रात को चार बजे उठा दिया।

मैंने भी उसे बाबाजी के बारे में सब बताना पड़ा। पर अमित फिर भी मुझे कहता रहा कि इन बाबाओं की आधी बात सच तो आधी बात झूठ ही रहती है। मैंने कहा, “ठीक है, और मुझे कुछ देर सोने दे, नहीं तो स्कूल में सोना पड़ेगा।”

अगले दिन मैं जब स्कूल से घर आया तो मुझे काफी टाइम बाद निधि दिखी। वो भी मुझे दूर से ही देखती रही। लगा कि वो मुझे बाबाजी की ही वजह से दिखी है। वो वंश की हार्ली डेविडसन से उतरी थी। मैं भी अपना भाव बढ़ाते हुए अपने घर की तरफ चल दिया।

घर पहुँचा तो अमित ने मेरे खण्डहर मेजाकर गाँजा पीने की सारी कहानी मम्मी को बता दी। मम्मी ने मुझे कई थप्पड़ के बाद अपनी हद में रहने की सलाह

दी। पर मैं फिर भी खुश था। अमित मेरे लगातार थप्पड़ पड़ने से मुझसे दूर भाग रहा था। उसे लगा कि मेरे थप्पड़ पड़ने से मैं उससे बदला लूँगा।

मैंने ये सोचकर कि एक भाई ने अपना फर्ज निभा दिया है, उसे कुछ नहीं कहा। कुछ घंटे बाद में ऊपर चला गया।

निधि भी बहुत जिद्दी थी। बात बंद होते ही उसने छत पर भी आना छोड़ दिया था। मैं एक घंटा छत पर बैठा रहा उसका इंतजार करते हुए। जब वो मुझे नहीं दिखी तो मैं नीचे आ गया। बाबाजी पर मेरा पूरा विश्वास था जैसे किसी को भगवान पर हो जाता है। मुझे लगा महीने दो महीने में निधि मुझे आकर सॉरी जरूर कहेगी।

मेरा मन अब पढ़ने मेज्यादा लगने लगा था। हालाँकि मैंने तो जाने कहाँ तक के प्लान बना लिए थे कि एक दिन जब मेरी पढ़ाई पूरी होगी तो मैं निधि से ही शादी करूँगा। मैं रात को खाना खाते हुए यह सोच रहा था। मम्मी ने रोटी देते हुए कहा, “एक और?” पर मैंने मना किया। मम्मी ने कहा, “कल-परसों तो दो लोगों का खाना खाया था आज क्या हुआ?”

मैंने कहा, “सब माया है।” इतना सुनकर मम्मी ने बेलन मारते हुए कहा, “बड़ा ढीठ है।”

मैं हँसने लगा। मम्मी नहीं जानती थी कि मैं अब जवान हो गया था। बेलन की मार तो बच्चों की बात है। इसलिए मैं देर तक हँसता रहा।

अध्याय-7

जनवरी का बेहद ही ठंडा मौसम था। हम अपनी कक्षा में बैठे हुए थे। खाली पीरियड था। स्कूल के वाइस प्रिंसिपल कक्षा में आए तो सभी विद्यार्थी खड़े हो गए। प्रिंसिपल ने कहना शुरू किया, “आप सभी विद्यार्थियों के लिए अगले हफ्ते से छुट्टियाँ हैं। ये छुट्टियाँ आप के लिए परीक्षा तक रहेंगी। किसी को कुछ मदद चाहिए तो आप स्कूल में अपने अध्यापक से मिल सकते हो, वो आपकी मदद करेंगे। और अगले हफ्ते आपको ग्यारहवीं कक्षा की तरफ से पार्टी दी जाएगी जिस में आप से पैसे नहीं लिए जाएँगे। ये पार्टी आपको स्कूल की समाप्ति के लिए ग्यारहवीं कक्षा देगी। आपका स्कूल का पूरा कोर्स खत्म हो गया है। इसलिए आप घर पर रहकर अध्यापकों के नोट्स पढ़ें। आप की जिंदगी के नए दौर के लिए शुभकामनाएँ! किसी को कुछ पूछना है तो वो बेधड़क पूछ सकता है।”

वाइस प्रिंसिल के इतना लंबा कहने के बाद किसी ने कुछ नहीं पूछा।

सभी लड़के खुसर-फुसर करने लगे। वाइस प्रिंसिपल कक्षा से चले गए। मैं देव और सोनू भी बातें करने लगे। सोनू ने कहा, “अब तो मैं देर से उठूँगा। देव, अब रात भर पढ़ना आसान होगा।”

मैंने कहा, “हम देव अब ग्रुप बनाकर पढ़ेंगे।” तभी पीछे बैठा भोपला बोला, “तुम्हें बस पढ़ाई की पड़ी है कुछ और नहीं?”

“तो तुझे क्या पड़ी है? हमें पढ़ाई की पड़ी हो या खेल की।” सुनकर भोपला चिढ़ गया। उसका असली नाम तो राजेश था पर वो एक मोटा लड़का था। जब हम कक्षा नौ में थे एक पीटी के पीरीयड में उसने एक फुटबॉल को ऐसी किक मारी कि फुटबॉल फट गई थी। असलियत में फुटबॉल तो इसलिए फटी थी कि वो पुरानी हो गई थी, पर बच्चों ने तभी से उसका नाम भोपला रख दिया था। अब तो टीचर भी उसे भोपला ही कहते थे।

कुछ देर में की घंटी बजी। सभी लड़के कक्षा से भागने लगे। वजह थी पहली बार में तले समोसे जो सुरेश हलवाई ठीक उसी समय निकालता था। अगर लेट हो जाते तो रिस्स के आधे टाइम तो हम समोसे मिलने का इंतजार ही करते रहते।

जैसे ही हमने चालीस रुपये दुकान पर दिए, सुरेश ने हमें आठ समोसे दिए लाल और हरी चटनी के साथ। इस समय सुरेश पहले से ही तैयार रहता था। उसे पता रहता था कि रिस्स होते ही बच्चे समोसे लेने आएँगे।

मैंने कहा, “यार हमारे यहाँ की ग्यारहवीं और बारहवीं की पार्टी बेकार ही जाती है।”

“पर क्यों बेकार जाती है?” देव ने पूछा।

“यार हमारे स्कूल मेलड़कियाँ जो नहीं पढ़ती हैं। दूसरे स्कूलों में जो लड़कियाँ पढ़ती हैं, वो इन स्कूल में पार्टी के दिन बहुत अच्छा डांस करती है, देखकर मजा आ जाता है। मैं एक बार वसंत कुंज के स्कूल में गया था। एक लड़की ने चोली के पीछे पर गजब का डांस किया था। यहाँ तो मैडम भी सारी बुढ़िया हैं। मैंने कहा।

“ठीक है यार, हमारे स्कूल मेलड़कियाँ होती तो कोई पढ़ाई नहीं करता, सब लड़के आशिक हो जाते।” सोनू ने कहा।

तभी भोपला बोला, “यार मुझे तो लड़कियाँ देखती ही नहीं। किसी लड़की पर लाइन भी मारूँ तो मुँह बनाती हैं। साली नकचढ़ी बंदरिया लगती हैं।”

हम तीनों हँसने लगे। इतने हँसे की हमारे पेट में दर्द होने लगा पर भोपला हमें देखता रहा। कुछ देर में उसे पता चला कि हम तीनों क्यों हँस रहे थे। मैंने सुरेश से कहा, “मुझे थोड़ी और चटनी दे दो आज अच्छी बनी है।”

सुरेश ने मुझे कहा, “तुम्हारे स्कूल के आखिरी दिन बचे हैं, पार्टी मेजरूर आना। शायद ये मौका स्कूल आने का दुबारा नहीं मिलेगा।”

“मुझे लगता है पार्टी में खाने का इंतजाम आप ही कर रहे हैं, क्या-क्या बन रहा है पार्टी में?” मैंने पूछा।

“गुलाब जामुन, रसगुल्ले मिठाई में और मिक्स वेज, पूरी, चावल, छोले, आदि। मुझे बच्चों की तरफ से हिदायत मिली है कि खाना अच्छा बने।”

“क्या समोसे नहीं हैं पार्टी में?”

“हाँ समोसे तो हैं ही।”

“और चाय?” देव ने पूछा।

“चाय नहीं कॉफी है।” सुरेश ने कहा।

थोड़ी देर में हम वहाँ से समोसे खाकर स्कूल के मैदान में पहुँच गए थे। मैंने देव से कहा, “यार हमें भूगोल के टीचर की शिकायत वाइस प्रिंसिपल से करनी चाहिए थी। सारे साल बस प्रैक्टिकल ही कराया है, एक भी पाठ नहीं पढ़ाया है। भूगोल इतना मुश्किल विषय है।”

तू तो फिर भी कवर कर लेगा यार, तूने तो भूगोल पढ़ा भी है। मैंने, सोनू ने और भोपले ने तो वो भी नहीं किया।” देव ने कहा।

“यार इसने कब पढ़ा भूगोल, मुझे तो बताया ही नहीं?” सोनू ने पूछा।

“अरे बहुत तेज हो गया है, राघव दो महीने में पूरा कोर्स पढ़ लिया चुपके से हमें बताया ही नहीं। साथ में नोट्स भी बना लिया है।” देव ने कहा।

मैं आसमान की तरफ देखने लगा और मन में प्रार्थना की भगवान मदद करना कॉलेज में पहुँचा देना नहीं तो भविष्य अंधकार में हो जाएगा।

मैंने देव से कहा, “यार मैं तो घर जा रहा हूँ। अब कक्षा में पढ़ाई नहीं होगी, टाइम ही खराब होगा।”

“ठीक है, मैं भी घर चलता हूँ।” भोपले ने कहा। फिर कुछ देर में भोपला क्लास से मेरा और अपना बैग लेकर आ गया। मैं और भोपला घर को चल दिए। मैंने सोच लिया था कि जब तक स्कूल खुलेंगे मैं स्कूल नहीं जाऊँगा क्योंकि अब स्कूल में पढ़ाई नहीं होने वाली थी। रास्ते में भोपला बोला, “यार कॉलेज में बहुत-सी लड़कियाँ मिलेंगी। कोई तो मेरी गर्लफ्रेंड बनेगी ही।”

“क्यों नहीं बनेगी पर वो तेरे जैसी भोपली ही होगी।” मैं कहकर थोड़ा मुस्कुराया

भोपले ने कहा, “जब परीक्षा खत्म होगी मैं अपना वजन कम कर लूँगा पर यार वजन कम करना पढ़ने से भी मुश्किल काम है।”

“ज्यादा मुश्किल तो नहीं, कुछ दौड़ लगाओगे तो वजन कम हो जाएगा, पर दौड़ दो किलोमीटर की होनी चाहिए। साथ में खानपान पर भी ध्यान रखना होगा।”

बात करते-करते मेरा घर आ गया। घर पहुँचते ही मैंने कुछ नाश्ता किया और अपने भूगोल के नोट्स निकालकर पढ़ने लगा जिसे मैंने बिना टीचर के बनाए थे।

मैं अब बदल गया था। बाबाजी के मिलने के बाद से मैंने अब निधि से अपना ध्यान हटा लिया था। करीब दो घंटे बाद अमित भी स्कूल से आ गया था। तब तक घर का खाना बन चुका था हम सबने साथ खाना खाया। फिर मैं पढ़ने लगा तभी अमित आया और बोला, “तुम्हारे लिए निधि का फोन है।” मैंने अब निधि से बात करनी बन्द कर दी थी मैंने सोच लिया था की जब तक मेरी परिक्षा नहीं होती उससे बात नहीं करूँगा। वो मेरे को कुछ महीने से लगातार फोन करे जा रही थी पर इस बेहतर बन गए राघव ने अपनी भावनाओं पर लगाम लगाना सीख लिया था। अब मेरे मन में वंश के लिए ईर्ष्या भी नहीं थी।

“उससे कह दे कि पापा घर पे हैं, फोन नहीं अटेंड कर सकता।”

उसने निधि से यही कहा और फिर मुझसे पूछा, “तुम निधि की कॉल क्यों नहीं लेते हो?”

“बस ऐसे ही। क्या कोई बात हो गई उसके साथ?”

“हुआ तो कुछ नहीं। अब तुम ऊपर छत पर नहीं जाते हो और ना ही उसके फोन लेते हो, इसलिए सोचा।” अमित ने कहा।

“पढ़ाई का टाइम है, चोंचे नहीं लड़ानी मुझे उसके साथ।”

“पर क्या बात हो गई? ऐसा क्या हो गया तुम्हारे बीच सच्ची बात बताओ?”

“कुछ नहीं हुआ, बात सिर्फ पढ़ाई की है।”

“नहीं मैं नहीं मान सकता। बात कुछ और है, नहीं बताओगे तो मैं तेरा पीछा नहीं छोड़ूँगा। आज निधि मुझसे मिन्नतें कर रही थी कि बात जरूर करवा देना।”

अमित के इतना कहने पर मुझे उसे बताना ही पड़ा, “यार चार महीने से निधि वंश के साथ घूम रही थी। मैंने इसलिए बात बंद कर दी थी। पर उसने भी तो बात करने की कोशिश नहीं की थी। वो वंश के साथ गोवा भी गई थी।”

“क्या दोनों अकेले ही गोवा गए थे?”

“नहीं दो लड़के और दो लड़कियों के साथ निधि भी गई थी।”

“पर क्या हो गया, कॉलेज में ऐसे घूमने जाते ही हैं। वो तुम्हें अपने साथ इसलिए नहीं ले गई होगी कि तुम्हारे स्कूल की छुट्टी नहीं हो सकती थी।”

“ऐसी बात नहीं है, वो मुझे धोखा दे रही है मैं जानता हूँ।”

इस पर अमित ने मुँह पिचकाया। मैं समझ गया वो मेरी बात से सहमत नहीं था। और कहा

“पर राघव, वो ऐसा नहीं कर सकती है। मैंने उसकी आँखों में तेरे लिए प्यार देखा है। वो बस तुम्हें प्यार करती है, वंश को नहीं। समझे? नहीं तो अब भी तुम्हारे पास फोन क्यों करती?” अमित के ये कहने से मुझे बड़ा सकून मिला की निधि मुझे ही प्यार करती है। मैं तो सोचता था कि उसके अन्दर दिल ही पत्थर का है वो मेरी भावना को समझ ही नहीं सकती है।

“करती होगी। अब मेरी पढ़ाई का वक्त है, मुझे अब उससे बात भी नहीं करनी है। इससे मेरी पढ़ाई में दखल पड़ता है।”

इतना कहकर मैं अपने नोट्स उठाकर पढ़ने लगा ताकि अमित यही समझे कि मैं पढ़ाई के लिए ऐसा कर रहा हूँ। अमित ने कहा, “पर पहले तो तुम कहते थे

कि बिना निधि के पढ़ नहीं सकते हो और अब ऐसा व्यवहार उससे करके तंग कर रहे हो।"

तभी मेरे फोन की घंटी बजी। मैंने फोन काट दिया था। पापा ने वो फोन मुझे और अमित को पढ़ाई की मदद के लिए दिया था, पर मैं उसे निधि से बात करने के लिए इस्तेमाल करता था। मैंने अमित से कहा, "अमित, मुझे पढ़ना है, इस फोन को ले जाओ यहाँ से।"

"पर मैं निधि से क्या कहूँ? वो तेरे से बात करना चाहती है, मैं क्या उसे झूठ बोल दूँ?"

"उसे साफ शब्दों में कह दे कि जब तक राघव के एग्जाम नहीं हो जाते, वो बात नहीं करेगा।"

लेकिन मैं उससे वादा कर चुका हूँ कि मैं तुमसे एक बार बात करवा दूँगा। अब उसे क्या जवाब दूँ, तुम समझते नहीं हो राघव।"

"तू उसे कोई जवाब मत दे, फोन मेरे पास रख दे।" अमित पैर पटकते हुए कमरे से बाहर चला गया। फोन उसने मेरे पास ही रख दिया। मेरे मन में निधि नाम के लड्डू फूटने लगे। मैं अब भी उसे प्यार जो करता था। पर मैं डरता था कहीं निधि मेरे ऊपर फिर से हावी ना हो जाए। जानता था कि पढ़ाई पहले, बाकी के काम बाद में या प्यार बाद में। मेरी आँखों में निधि का चेहरा उतर आया। मैं सोच रहा था निधि फिर से मेरे साथ क्यों आना चाहती थी? शायद उसे वंश का प्यार झूठा ही लगता होगा। बाबा के अनुसार, वो वंश की माया से बाहर आ गई होगी। तभी अमित दो कप चाय लेकर कमरे में घुसा। वो चाय के बहाने जानना चाहता था कि मामला क्या था। पर कई बार पूछने पर भी मैंने उसे कुछ भी नहीं बताया। मैं पढ़ाई मेलगा रहा। कुछ देर बाद चाय खत्म कर अमित खुद ही कमरे से बाहर चला गया।

अध्याय-8

पार्टी का दिन था। मैं अपने नए लाए कपड़ों को देख रहा था। अमित भी वहीं था। उसने कहा, “भाई कपड़े पहनकर दिखाओ।”

अमित अपनी स्कूल की छुट्टी के बाद आया था। पार्टी स्कूल में चार बजे की थी और अभी दो बज रहे थे। मैंने कहा, “अभी से कपड़े पहनूँ? अभी तो दो बज रहे हैं।”

“अरे ये कैसा लग रहा है तुम पर, मैं ये देखना चाहता हूँ।”

“ठीक है, मैं पहनता हूँ।” मैंने कपड़े पहने और अच्छी तरह गौर किया तो कुछ कमी-सी लगी। तभी अमित ने कहा, “यार कपड़े तो जँच रहे हैं, पर इन काले कपड़ों पर पापा का काला ब्लैजर बहुत जँचेगा।”

“ऊपर सफेद जर्सी है।” मैंने अमित से कहा, “जब जर्सी है तो ब्लैजर की क्या जरूरत है?”

“नहीं राघव, मैं सच कह रहा हूँ। पापा का ब्लैजर इन कपड़ों पर ज्यादा जँचेगा।”

दरअसल,मेरे और पापा के कपड़े एक ही नाप के आते थे। मैंने कहा, “ठीक है, पापा के कमरे से पापा का ब्लैजर लेकर आ, मैं ट्राई करके देखता हूँ।”

वो ब्लैजर लेने चला गया और मैं शीशे में कभी पैंट में हाथ डालकर तो कभी बाहर निकालकर देखता रहा। तभी अमित आया और ब्लैजर देते हुए कहा, “ये लो पहनो इसे।”

मैंने पहनते हुए कहा, “यार शेविंग जँच नहीं रही है। इस ड्रेस पर क्लीन शेव चाहिए।”

“नहीं राघव, आजकल ऐसी ही दाढ़ी चलती है। इसकी जरूरत नहीं है।”

अमित के कहने पर मैंने फिर से अपने को शीशे में देखा, “ठीक है, अगर तुम कह रहे हो, पर क्लीन शेव ज्यादा अच्छी लगती।”

“नहीं, ऐसे ही अच्छे लग रहे हो। पर हाँ, एक फूल मिल जाए तो बिल्कुल चाचा नेहरू लगोगे।” कहकर वह हँसने लगा। ये मजाक था इसलिए वो हँसा था। मैंने एक मुक्का उसे मारा तो वो फिर भी हँसता रहा। मैंने कपड़े उतार दिए और ठीक साढ़े तीन बजे मैं नहाने चला गया। चार बजे तक मैं तैयार हो गया। पार्टी मेजाने से पहले मैंने आखिरी बार शीशे को खुद को देखा। तब अमित ने कहा,

“चाचा नेहरू फूल दे दूँ कोट में रखने के लिए?” मैं मुस्कुराया और घर से निकल गया।

स्कूल के गेट पर स्वागतम लिखा था, जिसे ग्यारहवीं के विद्यार्थियों ने फूलों से सजाया था। मैं हॉल में पहुँचा जहाँ मुझे देव, भोपला और सोनू मिले। भोपले ने कुर्ता-पजामा पहन रखा था। देव ने सिंपल पैंट-शर्ट पहनी थी और सोनू ने जींस के साथ जैकेट डाल रखी थी। हॉल में स्कूल के ही डेस्क लगे हुए थे, जिन्हें नीले रंग के कपड़ों से ढका गया था।

सामने ही मुझे वाइस प्रिंसिपल और कई टीचर दिखे। कोने में पानी लगा था जिस में मिनरल वाटर के गिलास थे। उसी के पास कॉफी मशीन थी जहाँ कुछ विद्यार्थी कॉफी पी रहे थे। कुछ आगे ही बेंच थे, जिन्हें नीले रंग के कपड़े से ढका गया था। उन बेंचों पर खाना लगाया जाना था।

ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने इन सब पर बहुत खर्च किया था। गेट के सामने ही एक स्टेज भी बना था, जिसको लाइटों से सजाया गया था। वहीं पर दो स्पीकर भी थे, जहाँ पर डांस परफॉर्मेंस होना था। सब चीज ऐसे सजी थी कि हम चालीस विद्यार्थियों की आँखें उन्हें देखकर फटी की फटी रह गईं। पिछली बार हम भी ऐसी पार्टी बारहवीं कक्षा को नहीं दे पाए थे, जब हम ग्यारहवीं में पढ़ते थे।

देव ने कहा, “अति सुंदर! क्या कमाल का काम किया है ग्यारहवीं के विद्यार्थियों ने!”

मैंने भी हाँ में सर हिलाया और कहा, “एक-एक कॉफी पी जाए क्या?”

सोनू ने कहा, “हाँ-हाँ क्यों नहीं। अभी खाने में टाइम है, चलो।”

हम कॉफी टेबल पर गए और चार कॉफी बनवाई। मेरी नजर सुरेश हलवाई पर पड़ी, “अरे भाई साहब, आप भी यहाँ पर हैं!”

“मेरा ही ठेका है भई, मैं ही रहूँगा न।” सुरेश ने कहा।

“डेकोरेशन तो अच्छी है, अब देखते हैं खाना कैसा बना है।”

“हाँ क्यों नहीं, सब चखकर देखना।” सुरेश ने कहा।

वहाँ से चलकर हम एक कोने मेलगे एक डेस्क के पास जाकर बैठ गए। कुछ ही देर में स्टेज पर परफॉर्मेंस शुरू हो गई। हम सब परफॉर्मेंस देखने लगे। सबसे पहले नब्बे के दशक के गानों पर कुछ लड़कों ने डांस किया। जैसे कि- ‘तुझे देखा तो ये जाना सनम’ यानी ‘दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे’ फिल्म के गाने पर लड़कों ने डांस किया। फिर ‘कुछ कुछ होता है’ फिल्म के गाने पर भी डांस हुआ।

प्रोग्राम के दौरान मैं तीन कॉफी पी चुका था। देव ने कहा, “राघव, स्टेज पर कोने में अँधेरे में एक लड़की बैठी है।”

मैंने देखा तो सचमुच एक लड़की वहाँ बैठी थी जिसके खुले बाल थे। मैं उसकी पीठ को ही देख पा रहा था। मैं सोचने लगा कि कौन हो सकती थी, पर पीठ से अनुमान लगाना मुश्किल था। इसलिए मेरा ध्यान फिर से स्टेज पर चला गया, जहाँ पर एक लड़का चुटकुले सुना रहा था, जिसे सुनकर सारे लोग हँस-हँसकर लोट-पोट हो रहे थे। उसने कई चुटकुले सुनाए। फिर एक लड़का, जिसे हम पीछे से लड़की मान रहे थे, स्टेज पर आया घाघरा-चोली में। संगीत बजने लगा- ‘चोली के पीछे क्या है चुनरी के नीचे क्या है...’ ये फनी आइटम देखकर मैं, देव, सोनू और भोपला खूब हँसे। देव ने कहा, “तुम्हारी उस दिन की मुराद पूरी हो गई।”

सुरेश हलवाई के लड़के सभी मेहमानों को समोसे बाँट रहे थे। मैं समोसे खाने लगा, तभी मेरी नजर गेट पर पड़ी जहाँ कुछ चेलों के साथ वंश आ रहा था। मैंने जैसे ही उसे देखा, मैं हैरान रह गया क्योंकि चार लड़के उसके लिए रास्ता बना रहे थे जैसे वो कोई खास आदमी हो। उसने सफेद कुर्ता-पजामा पहना हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे वो कोई बड़ा नेता हो।

स्टेज पर अनाउंस हुआ- ‘रणजी के खिलाड़ी और देश के गौरव हमारे मुख्य अतिथि वंश आ चुके हैं।’ सभी विद्यार्थियों ने गेट पर देखा। सब उससे हाथ मिलाने मेलग गए।

पर हम चारों दोस्त उसके सामने भी नहीं गए। मैंने देखा कि वंश मुझे ही देख रहा था। सबने वंश से हाथ मिलाने के बाद दोबारा स्टेज पर ध्यान लगा लिया। कार्यक्रम आगे बढ़ गया। थोड़ी देर बाद खाना भी लग गया। मैं अब इस पार्टी से जाना चाहता था। मैंने जल्दी से प्लेट उठाई, उस में सलाद, दो सब्जी रखी, चार पूरी के साथ थोड़ा चावल रखा और खाने लगा। देव भी प्लेट लेकर मेरे पास आ गया और खाना निकालते हुए पूछा, “तुम ठीक हो?”

“हाँ मैं ठीक हूँ।” मैंने जल्दी से खाना खत्म किया। तभी वंश हमारे पास आ गया। मुझसे हाथ मिलाया और कहा, “कॉलेज मैं जल्दी ही मिलेंगे। और सुन, तेरी जो गर्लफ्रेंड है न, वो मेरे नीचे दो बार लेट चुकी है। एक बार गोवा में और एक बार गाड़ी में कहे तो औरों के साथ भी लेटा दूँ।” ये कहते हुए वंश के चेहरे पर शरारती मुस्कान तैर गई वो थोड़ा हँसा भी। मैंने अपनी हथेलियों की मुट्ठी बनाई और उस पर टूटने ही वाला था। पर सोनू और देव ने मेरे दोनों हाथ पकड़ लिए और भोपले ने

मेरी कमर को पकड़ा। मेरा दिमाग गुस्से से जलने लगा। पर मेरे दोस्तों की वजह से मैं वंश को छू भी नहीं पाया। देव ने मुझे समझाया, “यहाँ ये सब करना ठीक नहीं है। यहाँ पर वो हम पर भारी पड़ेगा।”

वंश वहाँ से मुस्कुराते हुए जा चुका था। दोस्तों ने मुझे छोड़ दिया। मैंने पार्टी में देखा तो वो मुझे कहीं नहीं दिखा। मैं बाहर की तरफ भागा। मेरे सामने से एक मर्सिडीज कार निकली। वह वंश की थी। वह जा चुका था। मैं बेबस-सा वहीं पर बैठ गया हॉल के बाहर। अपनी आँखों पर हाथ रखकर मैं रोने लगा।

तभी मुझे खोजते हुए देव मेरे पास आया, “मैं पहले ही कह रहा था कि निधि एक बेवफा लड़की है। पर तू ही नहीं मान रहा था। अब उसे भूलकर पढ़ाई पर ध्यान दे भाई।”

भोपले ने कहा, “क्या पता वंश झूठ बोल रहा हो!”

सबने समझाया लेकिन मैंने किसी की नहीं सुनी और अपना ब्लैजर उतारकर घर की ओर चल दिया। मेरे साथी भी बिना बोले चलते रहें। मेरे दोस्त समझ सकते थे कि मेरे ऊपर क्या बीत रही थी, पर वे क्या करते।

मैं घर आया और अपनी बुलेट को स्टार्ट किया खारी बावड़ी की ओर चल दिया। जब मैं वहाँ पहुँचा तो रात के नौ बज रहे थे। वहाँ खण्डहर की छत पर मैं घुटने के बल बैठ गया। अपने चेहरे को आसमान की तरफ करके रोने लगा। और भगवान से शिकायत करने लगा। भगवान मेरी निधि मैली हो गई भगवान मेरे साथ ही क्यों मैंने उसे छुआ भी नहीं कभी कि वो मैली ना हो जाए मैंने क्या बिगाड़ा था। किसी का जो मेरे प्यार का उसने ये सिला दिया है उसने मेरे प्यार का मजाक बना दिया। भगवान ये सब सुनने से अच्छा था की मुझे मौत आ जाती। मैंने आसमान की तरफ एक पत्थर फेंका और वहीं छत पर लेट गया। कोई डेढ़-दो घंटे मैं फूट-फूटकर रोता रहा। जब मैं हल्का हुआ तो घर के लिए निकला। तभी अमित का फोन आया, “भाई कहाँ हो? मम्मी परेशान है।”

“अभी घर ही आ रहा हूँ।” यह कहकर मैंने फोन काट दिया। मैं घर पहुँचा तो रात के 11 बजने वाले थे। मम्मी ने देखते ही मुझे दो थप्पड़ रसीद कर दिए। मम्मी चिल्ला उठी, “कहाँ गया था इतनी रात को? तुम्हें किसी बात की कोई परवाह है कि नहीं?”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मम्मी ने फिर कहा, “इस तरह से बिना बताए घर से कभी नहीं जाना, समझे। वो तो तेरे पापा सो चुके हैं, नहीं तो पता नहीं तेरा क्या

हाल करते।”

मैं अपने कमरे में ये सोचते हुए चला गया कि अब पढ़ना है, बस सिर्फ पढ़ना है और अपनी इस फुक्रों वाली हालत से निकलना है। लेकिन पढ़ नहीं पाया, वंश की बातें कानों में गूँज रही थी। गुस्से में न जाने क्या-क्या सोचता रहा। फिर न जाने कब मुझे नींद आ गई।

मैं बाबाजी से मिलने के बाद बहुत बदल गया था। अगर ये बात मुझे वंश ने बाबाजी से मिलने से पहले बताई होती तो मैं कब का फाँसी लगा चुका होता पर ऐसे हाल में भी मैं स्थिर था और अपने पर विश्वास कर रहा था।

उस दिन अमित ने कई बार पार्टी के बारे में मुझसे पूछा कि क्या हुआ था वहाँ, पर मैंने उसे कुछ नहीं बताया। आखिर बताता भी क्या!

अध्याय-9

मैंने पार्टी के अगले दिन देव, सोनू और भोपले को घर बुलाया। मैंने मन बना लिया था की अब निधि की बेवफाई से बाहर निकल के एक ही काम करना है वो है पढ़ाई। मुझे इस प्यार की मुसीबत से निकलना है। मुझे अपने मन के दर्द से बाहर आ कर इतनी मेहनत करनी है जो मैं वंश और निधि को नीचा दिखा सकूँ। मैं जानता था ये काम मन पर काबू करकेही किया जा सकता है। जैसे की, सन्यासी करते हैं।

सभी मेरे दोस्त सुबह दस बजे मेरे घर आ गए। मैंने देव और सब को ग्रुप बनाकर पढ़ने को कहा। सब राजी थे। देव ने पूछा, "कब से पढ़ाई करनी है?"

"कल से, आज हम मूवी देखने चलते हैं जिससे अगले दिन सबका मूड पढ़ने का अच्छा बन जाए। साथ में हम रात का खाना भी बाहर खाएँगे। अगर कोई नहीं जाना चाहता है तो वो मना कर सकता है।" मैं ये इसलिए कर रहा था जिससे मेरे दिमाग से निधि का प्यार निकल सके। मैं सारा फोकस पढ़ाई पर करना चाहता था।

सबसे पहले भोपला बोला, "मैं तैयार हूँ।" सोनू और देव भी राजी हो गए। साथ में तय कर लिया गया कि रात दस बजे का शो पी.वी.आर. अनुपम पर देखेंगे। रात आठ बजे सब को मिलना है, यह तय करके वे सब चले गए।

इतवार का दिन था। अमित की छुट्टी थी। उसने कहा, "क्या मैं भी मूवी देखने जा सकता हूँ?"

मैंने कहा, "हाँ क्यों नहीं जा सकते हो।"

हम आठ बजे मूवी के लिए निकले। मैंने अपनी बुलेट नहीं निकाली क्योंकि बाहर बहुत ठंड थी। देव और सोनू के घर कार थी, पर वे उसे नहीं ला सकते थे। क्योंकि दोनों के घर से कार ड्राइव की मनाही थी। बचा भोपला, वो अपनी होंडा सिटी कार लेकर आ गया। हम भी तैयार थे। हम कार में बैठ गए और चल पड़े। रास्ते भर भोपले को खींचते हुए हम साकेत के पी.वी.आर. में पहुँचे। वहाँ एक रेस्टोरेंट है पिंड बलूची, हम वहाँ खाना खाने चले गए। इस रेस्टोरेंट में शराब भी पी सकते थे। हम एक टेबल पर जाकर बैठ गए। रेस्टोरेंट को लकड़ी और काँच से सजाया गया था। टेबल और कुर्सियों पर भी नक्काशी थी, साथ में बार भी बना था। वहाँ धीमा-धीमा संगीत बज रहा था। एक वेटर हमारे पास आया और में मेन्यू दे गया। मैंने रेस्टोरेंट में सभी लोगों को देखा, जिस मेजवान ज्यादा थे। एक जोड़े में बैठी लड़की ने तो कुछ ज्यादा ही ऊँची स्कर्ट पहनी थी।

देव ने कहा, “क्या मँगाना है देख लो। मैं तो चिकन खाऊँगा।”

सोनू ने कहा, “एक बटर चिकन के साथ पुलाव और एक बटर शाही पनीर क्योंकि राघव और अमित चिकन नहीं खाएँगे, साथ में पाँच बटर नान भी।”

मैंने भी हाँ कर दी और साथ में रायता भी बोल दिया। भोपले ने बोला, “पाँच नान से क्या होगा और मैं तो ड्रिंक भी लूँगा।”

देव ने कहा, “तेरी ड्रिंक के पैसे हम नहीं देंगे, वो तुम्हें अलग से मँगानी पड़ेगी।”

“जब राघव चिकन नहीं खा रहा पर वो तब भी चिकन के पैसे दे रहा है तो मेरी ड्रिंक के पैसे भी सभी देंगे।”

इस तरह तू-तू मैं-मैं के बाद कुछ देर में तय हुआ कि ड्रिंक के पैसे भोपले को अलग से ही देने होंगे। ये सब भोपले को समझाने में देव को समय लगा। तब जाकर वेटर को हमने ऑर्डर दिया।

भोपले ने टेबल के नीचे से मेरे पैर से पैर छूकर उस छोटी स्कर्ट वाली लड़की की तरफ इशारा किया। मैंने भी उसे देखा जो नशे में थी। वो अपने साथी की बाँहों में झूल गई तो भोपले की हँसी छूट गई। मैं भी थोड़ा हँसा। अमित ने भी उसके हील वाले सैंडल की तरफ इशारा किया। मैं भी उसके सैंडल देखकर हैरान रह गया कि वो इतने हील के साथ कैसे घर जाएगी। सोनू ने कहा, “यार जब वो जाएगी तो चली जाएगी, ये उसका रोज का काम है।”

देव ने कहा इशारों में कहा, “निगाहें अपनी तरफ रखो।”

भोपले ने कहा, “डर मत मेरे साथ है।”

भोपले को नशा हो गया था ड्रिंक पीने से। उसने एक और बीयर मँगवाई। मेरा भी मन बीयर पीने का था पर मैं अमित के सामने बीयर नहीं पी सकता था तो चुप ही रहा।

वेटर ने भोपले को देखकर ड्रिंक डालने को कहा, “सर ड्रिंक मग में डालें?” भोपले ने हाँ कहा तो वो बीयर डालकर चला गया। साथ में वेटर पीनट भी लाया था। जब तक हमारे लिए खाना आया भोपला दो बीयर के प्वॉइंट गटक चुका था।

देव ने भोपले से कहा, “यार ऐसे बीयर नहीं पी जाती है गटागट। इसे धीरे-धीरे पीना चाहिए।”

“मेरी बीयर है। मैं कैसे भी पीऊँ? ये मेरे पैसों में आई है।” भोपले ने फटाक से कहा। देव कुछ बोलता उससे पहले मैंने उसका हाथ पकड़ लिया। वो समझ गया

कि भोपले नशे में है।

खाना शुरू हुआ तब अमित ने कहा, “मैं चिकन ले सकता हूँ?”

“हाँ ले सकते हो।” देव ने कहा। मैं अमित को देखने लगा कि इसने ये सब कब शुरू किया फिर सोचा कि पहली बार है शायद। उसने चिकन का लेग पीस अपनी प्लेट में डाल दिया। मैंने अमित से पूछा, “तुमने ये सब कब से खाना शुरू किया?”

“मेरा एक दोस्त सरदार है, वो स्कूल में चिकन लाता है। मैंने भी उसके साथ कई बार चिकन खाया है।”

मैंने सोचा कि मैं भी आज चिकन खाकर देखता हूँ। ऐसा क्या है इस में जो लोग इतने चाव से खाते हैं। मैंने भी एक पीस चिकन का प्लेट में डाला। थोड़ा-सा चिकन का पीस तोड़कर खाया तो मुझे भी चिकन टेस्टी लगा।

सोनू ने कहा, “दो नान और मँगा लो कम पड़ रही है।” मैंने दो नान का ऑर्डर दिया। अभी तक नान खत्म हो गई थी पर भोपला और बीयर मँगा रहा था। मैंने उसे कहा, “यार अभी मूवी देखनी है कहीं तुम्हें ज्यादा चढ़ गई तो?”

भोपले ने कहा, “ये बीयर क्या है मैं चार-चार बीयर पी जाता हूँ ये तो लाइट बीयर है फिर भी।” मैंने देखा उसकी आँखें चढ़ गई थी। लगता था उठाकर ना ले जाना पड़े।

सभी ने खाना खा लिया था। सबने बिल के पैसे इकट्ठे किए मगर बिल देखकर सब की फट गई। बिल आठ हजार का था। हमने पैसे दे तो दिए, साथ में सौ रुपये की टिप भी वेटर को देव के कहने पर दे दी। हम बाहर आ गए। मैंने भोपले से कहा, “यार तू अब मूवी देखने के लायक तो नहीं लग रहा है। फिर भी देख ले।” मेरी इस बात पर सभी तेज-तेज हँसने लगे।

अमित ने कहा, “टिकट जल्दी ले लेना कभी खत्म ना हो जाए। सभी ने पर्स से पैसे निकाले और अमित सीधा टिकट खिड़की की लाइन मेलग गया। मूवी बहुत अच्छी थी इसीलिए लोगों की भीड़ लगी थी। लाइन में धक्का-मुक्की भी हो रही थी। भीड़ को देखकर लग रहा था कि टिकट की कमी ना पड़ जाए। लाइन धीरे-धीरे बढ़ रही थी। भोपले ने कहा, “यार एक सिगरेट पीनी है, पान के खोखे पर चलो।” मैंने कहा, “बीयर का नशा कम है जो अब सिगरेट भी पीनी है?”

“सिगरेट में कौन-सा नशा रहता जो तुम परेशान हो रहे हो?”

देव ने कहा, “चलो चलते हैं, मैं जानता हूँ जब तक ये सिगरेट ना पी ले, पीछे पड़ा रहेगा।”

“यार हम स्कूल से निकल चुके हैं, अब इस में क्या बुराई है? हम एटीन प्लस हैं और मैं तो बीस का हूँ।”

भोपला सिगरेट पीने लगा तो हम लड़कियों को देखने लगे। लेकिन भोपला तो ऐसे देख रहा था कि कोई गुंडा हो, तभी उसको एक लड़की ने पहले स्माइल दी फिर थप्पड़ दिखाया। लड़की स्कर्ट में थी जिसकी गोरी टाँगों को भोपला काफी देर से निहार रहा था। लड़की के थप्पड़ दिखाने पर हम सभी हँसने लगे। अमित भी लाइन में हँस रहा था पर भोपले को कोई फर्क नहीं पड़ा। वो ऐसे ही लड़कियों को निहारता रहा जब तक अमित पॉच टिकट नहीं ले आया।

टिकट मिलते ही सभी अंदर जाने की लाइन मेलग गए। मुझे डर था कि कहीं भोपले को कोई चेकिंग करने वाला गार्ड ना रोक ले, क्योंकि वो नशे में था। नशे में होने पर मूवी देखने की मनाही होती है।

धीरे-धीरे लाइन चलती रही और भोपला भी लटकता-मटकता चलता रहा। लाइन में सबसे आगे अमित था जिसकी तलाशी के बाद वो अंदर चला गया। और हम भी अंदर चले गए। पर तभी भोपला जो लाइन के आखिरी में था उसे गार्ड ने रोक लिया और उसे कहा, “आप ने ड्रिंक कर रखी है।”

भोपले ने एक बार हाँ तो एक बार ना कहा। भोपले को गार्ड ने रोक लिया और कहा, “आप अंदर नहीं जा सकते हैं।”

भोपला के लिए हम भी रुक गए। भोपले ने हमें कहा, “तुम सब अंब अंदर जाओ मैं भी जुगाड़ से अंदर आ जाऊँगा।” भोपले को वहीं छोड़कर हम हँसते हुए अंदर थियेटर में चले गए। हम थिएटर के हॉल के बाहर खड़े रहे क्योंकि अभी अंदर हॉल खाली नहीं था। अभी शायद मूवी का एंड बाकी था पहले लगे शो का।

अमित ने कहा, “यार भोपला भाई अभी तक नहीं आया, वो मूवी तक आ पाएगा?”

देव ने कहा, “आ जाएगा उसके बहुत से जुगाड़ हैं। उसकी तुम फिक्र मत करो।”

ठीक दस मिनट बाद हम हॉल मेजाने लगे और फिर अपनी सीट पर बैठ गए। तब तक पर्दे पर विज्ञापन चलते रहे। जैसे ही मूवी शुरू हुई किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा, मैंने पीछे देखा तो भोपला खड़ा था।

“यार ऐसे ही नहीं हूँ मैं, बहुत चलती है दिल्ली में। मेरी सीट छोड़ो।” मैं उसकी ही सीट पर बैठा था ताकि कोई और आकर उसकी सीट घेर ना ले।

मूवी स्टार्ट हो गई। मजेदार सीन चलने लगे। उस रोमांचकारी मूवी में हम खोए रहे। जब इंटरवल हो गया हम सब के चेहरे पर मुस्कान थी। मैं अपनी सीट से उठकर बाथरूम चला गया। बाथरूम करके भोपला मेरे पास आकर बोला, “बीयर के बाद प्रेशर बढ़ जाता है।”

बाथरूम से आकर मैंने देखा सब गरमा-गरम कॉफी पी रहे हैं। अमित ने मेरे लिए पहले से ही कॉफी ले रखी थी। हम मूवी की बातें करने लगे। अब तक भोपले का नशा उतर चुका था और वो भी कॉफी पी रहा था। कुछ देर में मूवी फिर शुरू हो गई।

एक घंटे बाद जैसे ही मूवी खत्म हुई भोपला तेजी से भागता हुआ बाहर निकला। मैंने सोनू से कहा, “इसे इतनी क्या जल्दी है?” सोनू ने कहा, “बीयर पी है, प्रेशर लगा होगा।”

अमित, मैं, सोनू और देव सिनेमा हॉल से बाहर आ गए। सभी गाड़ी में बैठ गए। भोपले ने कहा, “यार मुझे गाड़ी नहीं चलानी। मुड़ते ही पुलिस वाले बैरीकेट पर मिलेंगे।” इस पर सभी ने कहा कि किसी को भी गाड़ी चलानी नहीं आती यहाँ। अमित ने कहा, “पुलिस वाले तुम्हारा क्या करेंगे?”

“अरे समझ नहीं रहा है तू, मुँह से शराब की स्मेल आ रही है इसलिए।”

मैंने कहा, “तेरे तो इतने जुगाड़ है, जो होगा देख लेना।”

“है तो सही पर पुलिस के चक्कर में नहीं पड़ना।”

तभी अमित ने कहा, “मुझे गाड़ी चलानी आती है, कहो तो मैं ड्राइव करूँ?” सभी एक-दूसरे को देखने लगे। सोनू हँस पड़ा और हम भी हँसने लगे। अमित चुप-चाप हमें हँसते हुए देखता रहा पर भोपले ने अमित को गाड़ी चलाने नहीं दी क्योंकि वो उम्र में छोटा था। उसके पास लाइसेंस भी नहीं था इसलिए मैंने अमित से पूछा, “तुझे तो बुलेट भी नहीं चलानी आती, तू कब से गाड़ी चलाने लगा?”

“एक दोस्त से सीखी थी।”

तभी वहाँ गाड़ी पार्किंग वाला लड़का आया। भोपले ने कहा, “यार कोई पार्किंग के पैसे दो मेरे पास नहीं हैं, सभी अपनी जैब देखने लगे पर किसी के पास पैसे नहीं थे। सबने हाथ खड़े कर दिए।

“यार ये दो हजार का आखिरी नोट है इसे भी छुट्टा करना पड़ेगा।” कहते हुए भोपले ने नोट निकाला। सभी हँसने लगे। पार्किंग वाले ने कहा कि छुट्टा नहीं है।

“छुट्टा नहीं है तो हमेजाने दो।” उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी। हम पुलिस के बैरीकेट पर मुड़ते ही पहुँचे तो पुलिस ने हाथ के इशारे से गाड़ी रुकवाई और पुलिस के एक आदमी ने पूछा, “कहाँ जा रहे हो?”

सोनू ने कहा, “महरौली।”

पुलिस वाले ने सभी को टॉर्च से देखा, “कहाँ से आ रहे हो?”

“मूवी देखने गए थे।” उसने बैरीकेट से रास्ता देने को दूसरे पुलिस वाले से इशारा किया। हम वहाँ से आगे बढ़ गए।

देव ने कहा, “कब से ग्रुप में पढ़ाई करनी है प्लान बना ले।”

मैंने ने कहा, “हम बारी-बारी से सब के घर पर पढ़ेंगे।”

भोपले ने कहा, “कल ग्यारह बजे से सुबह पढ़ाई करते हैं।”

“क्यों दस बजे से नहीं?” देव ने चुटकी लेते हुए कहा।

“यार देर तक सोने के लिए।” सब हँसने लगे।

सब के सब ग्यारह बजे अगले दिन मेरे घर पहुँच गए। देव के कहने पर मैंने सबसे पहले भूगोल के नोट्स निकाला, क्योंकि भूगोल उनका सबसे कमजोर प्वॉइंट था। सबने भूगोल के नोट्स की कॉपी की, फिर सभी ने दो घंटे में बीस पेज लिखने के बाद पढ़ाई शुरू की। पर मेरे लिए ये तीसरी बारी रटना था। देव ने कहा, “इस सब्जेक्ट पर सबसे ज्यादा टाइम देना है।”

हम कोई तीन घंटे पढ़ने के बाद भोपले ने कहा, “यार ऊपर चलते हैं।”

मैंने कहा, “जब तक हम पढ़ाई करेंगे तब तक कोई भी मेरे घर की छत पर नहीं जाएगा।”

सब राजी हो गए। सभी जानते थे कि भोपला ये क्यों कर रहा था। वो निधि से मुझे मिलाना चाहता था। सब ये जानते थे कि निधि ने उसे ये करने को कहा था मेरे सिवा। शाम के चार बजे थे। निधि भी चार बजे ही कॉलेज से आती थी। जाने क्यों भोपला फिर से हमारी दोस्ती चाहता था, पर अब मैं उससे दूर ही रहना चाहता था, जब से वंश ने उल्टा-सीधा कहा था उसके बारे में।

हम शाम छह बजे तक पढ़ते रहे। शाम को मम्मी सब के लिए चाय और बिस्किट ले आई। सबने चाय पी फिर सब के सब घर जाने लगे। मैंने कहा, अभी से घर जा रहे हो?”

देव बोला, “अब और पढ़ाई मुझसे नहीं हो पाएगी।”

सभी किताबों से सर मारकर थक चुके थे। वे हैरान थे कि मैं अभी भी पढ़ना चाहता था। देव घर के लिए निकल गया। सोनू जो अभी पढ़ना चाहता था वो भी चल पड़ा देव के जाने से। भोपला तो चाहता ही छुट्टी था, वो भी निकल लिया जब वे चले गए। मैं अपने ट्यूशन के अंग्रेजी के नोट्स पढ़ने लगा। मैंने अब ट्यूशन भी छोड़ दिया था ताकि परीक्षा की अच्छे से तैयारी कर सकूँ।

अमित ने आठ बजे खाना खाने को कहा। मैंने और अमित ने खाना अपने कमरे में खाया। अमित ने कहा, “यार तुम निधि से बात क्यों नहीं करते हो? चार मिस कॉल आए हैं।” मैंने उसे कुछ नहीं कहा तो उसने फिर से कहा, “क्या बात हो गई जो इतनी दूरी बना ली है उससे?”

मैंने कहा, “परीक्षा के बाद ही बात करूँगा उससे।” इतना कहकर मैंने टीवी को ऑन कर दिया। अमित नहीं जानता था कि हमारा मिलन कभी नहीं होगा। यही सब सोचते हुए मैं टीवी पर न्यूज देखने लगा। सुबह से पढ़ते-पढ़ते थक जाने से मैं जल्दी ही सो गया।

मुझे एक महीना हो गया था ग्रुप में पढ़ते हुए। अब एक महीना ही बचा था परीक्षा का तो मैं और ज्यादा पढ़ने लगा। देव और सोनू मेरे पढ़ने की कैपेसिटी देखकर दंग थे। वे सोचते थे कि जो एक सामानय-सा लड़का था वो अब चैप बन गया था और पढ़ने से कभी थकता ही नहीं था। कई बार हम में से कोई पूछ लेता था कि सबसे ज्यादा किसके नंबर आएँगे। तो मैं कहता था कि सोनू के तो बाकी सब कहते कि मेरे। मैं नहीं जानता था कि वे सब मुझे सबसे अच्छा विद्यार्थी क्यों मान रहे थे। कुछ फर्क मुझे भी लगा पर इतना नहीं।

जिस अंग्रेजी विषय में मैं बहुत कमजोर था उस में भी मैं तेज हो गया था। जानता मैं भी था इसका कारण, क्योंकि सब आठ घंटे पढ़ते थे और मैं उनसे चार घंटे ज्यादा पढ़ रहा था। साथ में मैं थोड़ा समय योग और जॉगिंग के लिए भी निकाल लेता था।

समय बीत रहा था। मैं मेहनत के घंटे बढ़ा रहा था। पंद्रह दिन में ही मैं बारह से अठारह घंटे पढ़ने लगा कि बस ये समझ लो मैं हर वक्त पढ़ता ही रहता था। अजीब बात ये थी कि मैं थकता ही नहीं था जैसे कि कोई यू.पी.एस.ई. की तैयारी कर रहा हो। किताबें पढ़-पढ़ के कम हो रही थी पर मेरी पढ़ाई और किताबें माँग

रही थी। सच पूछो तो मुझे अब पढ़ाई धीरे-धीरे छोड़ देनी चाहिए थी, पर मैं था कि किसी ढीठ की तरह पढ़ रहा था।

थोड़े ही टाइम में परीक्षाएँ आ गई। सबसे पहले हम स्कूल से रोल नंबर लेकर आए। मैं भोपले के साथ अपना स्कूल का सेंटर देखकर आया। हमें हमारी डेट शीट भी मिल गई थी। सबसे पहले परीक्षा अंग्रेजी की थी, तो हम सब साथ में परीक्षा देने के लिए ग्रीन पार्क के स्कूल में गए।

हम सब अपनी सीट पर बैठे और हमें आंसर शीट दी गई। मैंने सबसे तेज अपना नाम, रोल नंबर आदि अपनी शीट पर भर दिया। सभी बच्चों ने भी यही किया। मैंने जब क्वेश्चन पेपर को देखा तो मुझे सभी आंसर आते थे। मैं लगातार आंसर शीट भरता रहा। जैसे ही शीट भर गई, मैंने और आंसर शीट टीचर से माँगी, उसके बाद एक और शीट ली। अचानक टाइम देखा तो पंद्रह मिनट ही बचे थे, पर मेरे चार क्वेश्चन रह गए थे। मैं इतने समय में एक का ही आंसर दे पाया। मुझे बड़ा धक्का लगा। टीचर ने सब की कॉपी ले ली। मैंने भी मजबूरी में अपनी आंसर शीट टीचर को दे दी। ऐसे ही बाकी चार पेपरों में भी हुआ। मैंने सबसे ज्यादा शीट तो भरी, पर तीन-चार क्वेश्चन छूट गए।

आखिरी पेपर में मैंने देखा कि सोनू और देव मुझसे कम शीट भरकर भी सारा क्वेश्चन पेपर हल कर रहे थे। तब मेरी समझ में आया कि मैं दो और तीन नंबर के क्वेश्चन ज्यादा शब्दों मेलिख रहा था। मेरा दिमाग जितना जानता था, सब लिख रहा था। जबकि भोपला, सोनू और देव संतुलित शब्दों में आंसर दे रहे थे लेकिन मैंने ज्यादा ध्यान इस पर नहीं दिया। एक तो आखिरी पेपर था, साथ में इतने नंबर तो आ ही जाएँगे परिणामों से कि कॉलेज में दाखिला मिल जाएगा।

आखिरी पेपर था। पेपर के बाद हमें सेलीब्रेट भी करना था। इस परीक्षा के बाद बस भूगोल का प्रैक्टिकल के लिए फाइल ही जमा करानी रह गई थी ये प्रैक्टिकल तीस नंबर का था।

जैसे ही हम आखिरी पेपर देकर आए, हमने बाजार मेजाकर खूब जमकर खाया। खूब मस्ती करने के बाद ही हम अपने-अपने घर पहुँचे।

दो दिन बाद हम स्कूल में भूगोल का प्रैक्टिकल देने गए। सबने अपनी फाइल बारी-बारी से टीचर को दी। भूगोल के टीचर के पास एक-दूसरे स्कूल का टीचर बैठा था। उसे ही प्रैक्टिकल लेना था। टीचर सभी से बारी-बारी से मिले। हमारे ग्रुप में पहला नंबर देव का आया। फिर सोनू का आया और फिर भोपले का। सभी

प्रैक्टिकल देकर खुश थे। पर मेरे नसीब में ये खुशी नहीं थी। एक तो मेरे से ये भूगोल के टीचर चिढ़ते थे, साथ में मैं उन टीचर की बुराई सब के सामने कर देता था। ये बात भूगोल के सर भी जानते थे कि मैं उनके बारे में क्या सोचता हूँ।

मेरा नंबर भी आ गया। मैं जैसे ही अपनी फाइल लेकर उनके पास गया तो चुप-चाप अपनी फाइल बाहर से आए टीचर को थमा दी। उसने कुछ सवाल मुझसे किए। मैंने भी वैसे ही उतर दे दिए। हमारे भूगोल के टीचर ने दूसरे टीचर से कहा, “एकदम हरामी लड़का है जी ये सर, आप इसे फेल कर दो।”

ये सुनकर मेरे तोते उड़ गए। उन्होंने कहना जारी रखा, “क्या करने जाता था खारी बावड़ी? बड़े धूएँ के छल्ले उड़ाता था वहाँ जाकर।”

मैं स्तब्ध रह गया क्योंकि मेरे अलावा ये कोई नहीं जानता था कि मैं कभी-कभी सिगरेट भी पीता था। पर मैं अकड़कर बैठा रहा। भूगोल के टीचर ने कहना जारी रखा, “तुमने तो नहीं बनाई ये फाइल!” टीचर ने एक और इलजाम मेरे ऊपर मढ़ दिया

मैंने कहा, “नहीं सर मैंने ही बनाई है बड़ी मेहनत से।” भूगोल के सर ने फिर से कहा, “सर आप फेल कर दो इसे, ये कक्षा का हरामी है।”

तभी दूसरे टीचर ने कुछ लिखा पेपर पर और मुझे जाने को कहा। मैं फेल होने से डरा हुआ था। जब सब बच्चे जा चुके थे प्रैक्टिकल देकर मैं बाहर से आए टीचर के पास गया जब वे अकेले थे, “सर फेल मत करना नहीं तो मेरी जिंदगी खराब हो जाएगी।”

उस सर ने कहा, “किस बात से चिढ़ते हैं तुमसे तुम्हारे टीचर?”

“सर, मैं इनकी बुराई जो कर देता हूँ इसलिए। सर, इन्होंने कुछ नहीं पढ़ाया है साल भर से।”

ये सुनकर टीचर ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, “घबराओ नहीं, मैंने किसी को फेल नहीं किया है।” इतना कहकर वो वहाँ से चले गए। मैंने ये सब बातें अपने दोस्तों को बताई तो वे भी बोले कि मुझे डरने की जरूरत नहीं है।

अध्याय-10

परीक्षा समाप्त हुए चार दिन हो गए थे। इन चार दिनों में हम रोज सुबह से शाम तक क्रिकेट खेलते रहे थे। साथ में मैं निधि को भी भूलने लगा था अब तो याद भी नहीं था की वो भी है मेरी जिन्दगी में इस की वजह थी क्रिकेट, साथ में मेरे दोस्त जो मुझे उस की याद आने ही नहीं देते थे। मेरे मन में शायद उसके लिए प्यार उतना नहीं रह गया था मुझे बस अब क्रिकेट से प्यार था। मैं लगातार क्रिकेट खेल रहा था।

आज दूसरे मुहल्ले वालों से मैच था। हम बाग में एक मैदान में थे जहाँ आम के पेड़ों के पास लंबा-चौड़ा मैदान था। आम के पेड़ों पर आमिया लगी थी, जिन्हें कुछ बच्चे तोड़ रहे थे। आम का बाग किसी का नहीं था यानी ये एक सरकारी जगह थी। मैदान के बीच में किसी ने सिमेंट की पट्टी बना रखी थी जिसे हम विकेट कहते थे।

महरौली में एक पहाड़ी क्षेत्र पड़ता है, जहाँ पर लावे के पत्थर की छोटी-छोटी चट्टानें मिल ही जाती है जो कि ऐसे मैदान पर बैठने के काम आती है। मैदान के बाउंड्री के पास ये पत्थर पेड़ के नीचे थे जहाँ पर बैटिंग कर रही टीम बैठती थी। मेरे चारों दोस्तों के अलावा हम आठ लड़के और खेल रहे थे। भोपला तो कभी अंपायर बन जाता तो कभी स्कोर लिखने लगता था। अमित भी इस काम में भोपले की मदद कर रहा था और खेल में देव हमारा कैप्टन था।

उनकी तरफ से भी एक बंदा स्कोर लिख रहा था ताकि कोई गड़बड़ी ना हो। अंपायर सबका एक भोपला था। देव ने इक्कीस सौ रुपये का मैच रखा था। यानी हारने वाली टीम द्वारा जीतने वाली टीम को इक्कीस सौ रुपये देने थे। जिसको ये पैसे देने होते थे, वही टीम का कैप्टन होता था। क्योंकि पैसे हारने पर वही भुगतता। उधर दूसरी टीम का कैप्टन राजू था।

हम पहले बल्लेबाजी कर चुके थे और हमने बीस ओवर में कुल 54 रन बनाए थे।

जब दूसरी टीम ने खेलना शुरू किया तो तीन ही ओवर में उसके दो विकेट गिर गए। स्कोर भी तीन रन था। हम जानते थे कि इस मैदान में 55 रन का लक्ष्य काफी था क्योंकि मैदान बड़ा था। इस मैदान में छक्के-चौके मारना आसान नहीं था, इसलिए खिलाड़ियों को बड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। विपक्षी टीम के दोनों विकेट इसीलिए गिर गए थे, क्योंकि वे बाउंड्री पर लपक लिए गए थे। अगला ओवर देव ने

डालना था। वे दबाव में थे कि कहीं फिर से विकेट ना गिर जाए, इसलिए वे धीरे-धीरे खेल रहे थे।

धीरे-धीरे सात ओवर हो गए और स्कोर दस रन पहुँच गया। आठवें ओवर में स्कोर बढ़ाने के चक्कर में एक बल्लेबाज ने बॉल हवा में उड़ा दी। मैदान बड़ा होने के कारण बॉल को मैदान के बीच में ही लपक लिया गया और वो आउट हो गया।

फिल्डिंग करते हुए मैंने अचानक देखा कि मैदान के बाहर मर्सिडीज आकर रुकी। मैं समझ गया कि वंश था। देव भागकर दूसरे कप्तान के पास गया। हम भी साथ गए। देव ने पूछा, “तुमने रणजी का खिलाड़ी बुलाया है?”

दूसरे कप्तान ने कहा, “मेरी मर्जी, मैं किसी को भी खेलने को बुला सकता हूँ तुम्हें क्या?”

हमारे बीच में ऐसी कोई बात नहीं हुई थी।”

लेकिन तभी वंश गाड़ी से उतरकर मैदान में आकर पैड बाँधने लगा। सोनू ने देव से कहा, “हम नहीं खेलेंगे, ये चीटिंग है।”

मैंने दोनों को समझाते हुए कहा, “हम खेलेंगे। ये खेल एक खिलाड़ी का नहीं है जो हम डरें उससे।”

पर देव नहीं मान रहा था। मैंने उसके कंधे पर हाथ रखकर आश्वासन दिया और सोनू को भी समझाया तब यह तय हुआ कि खेल खेला जाएगा। वंश बस मेरा दुश्मन नहीं था, वो हम सबका दुश्मन था। तभी हमारी टीम का एक खिलाड़ी बोला, “ये हमारी टीम को ताश के पत्तों की तरह यहाँ से वहाँ उड़ाता रहेगा।”

मैं यह बात जानता था क्योंकि मैंने एक मैच में ऐसा होते देखा था, पर मैंने उसे समझाया कि वो कोई देवता नहीं है जो हर बार चलेगा।

बहरहाल, मैच फिर से शुरू हो गया। मैंने देव से कहा, “अगला ओवर मैं डालूँगा।”

ये सुनकर सबकी हँसी छूट गई। देव ने कहा, “यार तुम समझते नहीं हो, ये तेरा मजाक बना देगा। तेरे हर बॉल पर छह मारेगा।”

“अरे तू समझता नहीं है देव, मैं स्पिन डालूँगा, कुछ नहीं होगा।”

उसका ओवर खत्म होते ही मैं तैयार था। और वंश भी। मैंने पहली बॉल वंश को फेंकी जिसे मैंने लेग स्पिन डाला था। बॉल को देखने के लिए वंश ने डिफेंस किया। मैंने दूसरी बॉल फेंकी तो इस बार भी वंश ने बॉलर और बॉल को समझने के लिए फिर से डिफेंस किया। मैं समझ गया कि अगली बॉल पर वंश छह के लिए

जाएगा। इसलिए पहले तो मैंने सभी खिलाड़ियों को बाउंडरी पर सतर्क कर दिया, फिर बॉल डाली। वंश ने सोचा कि बॉल फिर से लेग स्पिन आएगी तो उसने बॉल को आसमान पर उड़ाना चाहा, पर मैंने बॉल को चतुराई से धीमा डाल दिया साथ में मैंने बॉल को लेग स्पिन ना डाल कर सीधी फेंक दी। वंश समझ नहीं पाया कि बॉल स्पिन नहीं होगी और उसने बल्ला घुमा दिया। बॉल चकमा देकर उसके पैड और बल्ले के बीच से सीधे स्टंप पर जा लगी। वंश देखता ही रह गया और मैं वंश को उँगली दिखाकर उछलने और शोर करने लगा। मेरे साथी भी उछल-कूद करने के साथ मुझे कंधों पर उठा लिए।

ये सब देखकर वंश ने वहाँ से खिसकना ठीक समझा। जब तक वंश और उसके चेले वहाँ से नहीं गए तब तक शोर होता रहा। मुझे ऐसा लगा कि मैंने अपना बदला उससे ले लिया। कुछ देर बाद बाकी का खेल खेला गया मगर हम आसानी से जीत गए।

मैच खेलकर घर आते हुए हमने बहुत हँसी-मजाक किया। उसके बाद जब भी हमने किसी से भी मैच रखा तब पहले ही तय कर लिया कि वंश मैदान पर खेलने नहीं आएगा।

देखते-देखते हम रिजल्ट के पास पहुँच गए थे। इसके अलावा हम दस मैचों में से आठ जीतकर बीस हजार रुपये भी इकट्ठे कर लिए थे। इन पैसों से हमने क्रिकेट की किट खरीदी थी जिस में बैट, बॉल, पैड, ग्लव्स आदि थे। इसी बीच निधि के फोन भी मेरे पास आते रहे पर मैंने उससे बात नहीं की। वो सारे फोन अमित ने ही उठाए थे।

अमित को अब भी समझ में नहीं आया कि हमारे बीच बात क्या हुई थी जिससे कई साल पुरानी दोस्ती टूट गई थी। इसीलिए उसने कई बार मुझसे पूछा पर मैं बताता भी क्या। मेरे साथी भी यही चाहते थे कि हमारी दूरी बनी रहे। अमित ने निधि से भी पूछा कि बात क्या हुई थी, पर वो भी समझ नहीं पाई कि क्या बताएँ। लेकिन निधि अब वंश नामी बीमारी से दूर थी, शायद मेरी तरह वो भी वंश को समझ चुकी थी।

मैं कई बार सोचता था कि ऐसा क्या हो गया था कि वंश मेरा दुश्मन बनकर स्कूल की पार्टी में मुझे इस तरह से निधि के बारे में कहा था जिसे में घोर बेइज्जती समझ रहा था। मैं सोच रहा था कि वो निधि के साथ सो चुका है, ये बात वंश ने क्यों कही। हमारे बीच कोई दुश्मनी भी नहीं थी। मेरे दिमाग में ये बात घूमती रही, पर

जवाब नहीं मिला। कोई आदमी ऐसा व्यवहार ऐसे ही नहीं करता। जरूर निधि ने ही उसे मेरे खिलाफ भड़काया होगा, नहीं तो वो मेरे से बिना बात पंगा क्यों लेता। अब निधि और वंश में क्या हो गया, जो वे दूरी बनाए हुए थे। मैं काफी समय से देख रहा था कि वे अब नहीं मिलते थे।

दरअसल, वंश ने निधि से शादी का वादा करके ये सब किया था। जब वंश उसके साथ ये सब कर चुका तो उसके बाद वो हर बार की तरह उसका मन बदल गया। वंश ने तो उसे इसलिए ही शादी के जाल में फँसाया था। जब निधि शादी करके घर बसाने की बात करने लगी तो वंश उससे बोर होने लगा। जैसे-जैसे समय बीता वंश ने उसे इग्नोर करना शुरू कर दिया। इसीलिए वंश और निधि में झगड़ा होने लगा।

धीरे-धीरे मुझे सारी बात का पता चल गया। एक दिन निधि ने वंश से कहा, “तुम तो उन्हीं लड़कों की तरह हो जो लड़कियों को शादी का झाँसा देकर उनके साथ सोना चाहते हैं। तुम्हारे अंदर गुण नाम की चीज नहीं है। मैं तो वंश तुम्हें कुछ और ही समझती थी, पर तुझे प्यार नाम का भी मतलब पता नहीं है। तेरे से कहीं अच्छा राघव है, जिसने मेरी इजाजत के बिना मुझे आज तक छुआ भी नहीं। तेरे जैसे इंसान के लिए मैंने अपने प्यार को भी छोड़ दिया। तू राघव जैसा कभी नहीं बन सकता। उस में और तुझ में रात-दिन का फर्क है। तू रात है तो वो दिन है। तू अंधेरी गली है तो वो रात में टिमटिमाने वाला तारा है।”

यह भी मालूम हुआ कि वंश इसके बाद से ही राघव से चिढ़ा बैठा था। वो अपने को राघव से कैसे कम मान सकता था, इसलिए उसने राघव के साथ ये सब किया था।

निधि एक बात तो जानती थी कि उसका अहंकार एक दिन टूटेगा। निधि तो कहती भी थी अहंकार तो रावण का भी नहीं रहा, वंश क्या चीज है।

निधि एक सुलझी हुई लड़की थी, पर वंश इसका उल्टा था। वो अपने आगे किसी को कुछ समझता ही नहीं था। वो अपने को किसी सचिन तेंदुलकर से कम नहीं मानता था। हालाँकि ये बात सच भी थी कि वो एक अच्छा खिलाड़ी था, पर सचिन नहीं था।

निधि के मन में राघव के लिए था कि उसका मन वंश से सुंदर था। वो ये भी जानती थी कि राघव उससे कुछ दिन ही दूर रह सकता था, पर उसे स्कूल की पार्टी वाली बात का पता नहीं था कि वहाँ क्या हुआ था। पर निधि को ये बात पता थी कि

राघव में अभी अहंकार का मिलन नहीं हुआ था, वो अपने को एक सामान्य लड़का मानता था और इसीलिए वो किसी को भी भा जाता था। उसे पैसे का भी लोभ-लालच नहीं था।

निधि ये भी अंदर से मानती थी कि राघव कभी अपने से निधि को दूर नहीं कर सकता था, वो एक दिन उसे जरूर मिलेगा। ये उसका विश्वास था, या शायद उसका प्यार था।

वंश ने जब से राघव के बारे में निधि के विचार सुने थे, तभी से वंश घायल शेर की तरह हो गया था। वो राघव को अपने से नीचा दिखाना चाहता था। निधि के सामने वो दिखाना चाहता था कि वो कितना बड़ा था, पर जब उसे ये मौका पार्टी में हीं मिला तो उसने ये सब तमाशा किया था।

उस दिन वो मैदान में भी तभी आया था जब उसे पता चला कि राघव भी खेल रहा था। इसलिए उसने सोच लिया था कि वो मैदान में ऐसी पारी खेलेगा कि राघव अपने को उसके सामने छोटा समझे। पर जीरो पर आउट होकर हुआ इसका उल्टा। वो एक साधारण क्रिकेटर बनकर रह गया था। जीरो पर आउट, वो भी राघव से! यही सोचकर वो कई रात नहीं सोया था। वो ऐसा मौका फिर चाहता था, जब वो राघव को मैदान पर बल्ले से रन के लिए पीटे या उसकी बॉलों पर छक्के-चौके उड़ाए, पर देव ने उसे ये मौका नहीं दिया कि वो राघव के साथ क्रिकेट खेल सके। इसलिए वो तड़प रहा था।

अध्याय-11

कुछ ही दिन बाद हमारे रिजल्ट के बारे में अखबार में आया कि तीन जून को बारहवीं सी.बी.एस.सी. का परिणाम घोषित होगा। तभी से हम चारों परिणाम घोषित होने का इंतजार करने लगे। जिस दिन परिणाम घोषित होने वाला था हम स्कूल गए। सोनू, देव, भोपला और मैं स्कूल में पहुँचकर लिस्ट में देखा हम चारों पास तो हो गए थे, नंबर कितने आए थे, ये देखना बाकी था। हमने पता किया कि नंबर कितने हैं। जानकर हैरानी हुई कि सोनू प्रथम आया था, देव द्वितीय आया था, मैं त्रितीय आया था और भोपला चौथे स्थान पर था। मैं कभी इन तीनों स्थान पर से किसी पर भी नहीं आया था। भोपला जिसे हमारे अलावा सभी मानते थे पास भी नहीं होगा, वह चौथे नंबर पर था। सोनू के नंबर 91 प्रतिशत, देव के 89 प्रतिशत,मेरे 78 प्रतिशत और भोपले के 77 प्रतिशत नंबर थे। हम चारों खुशी से उछल गए।

हमारे भूगोल के टीचर भी रिजल्ट देखकर दंग थे। उन्हीं के कारण मेरे और देव के नंबरों में इतना फर्क आ गया था। कक्षा के सभी लड़के हैरान थे। उनके अनुसार देव और सोनू के तो इतने नंबर ठीक थे, पर मैं और भोपला कहाँ से बाजी मार गए! मैंने मिठाई का डिब्बा लिया और सबका मुँह मीठा कराया। हालाँकि ये नंबर किसी सरकारी स्कूल में तो ठीक थे, पर प्राइवेट स्कूल में साधारण थे।

हम सबने सभी के पास हो जाने की खुशी में शाम को घूमने का प्लान बनाया। और घूमकर घर भी आ गए। पापा का फोन घर पर आने के बाद आया। मेरा पास होना उन्हें पता था पर सबसे पहले नंबर पूछा। अमित ने नंबर बताया तो वो नंबर सुनकर खुश हो गए और कहा कि अब कॉलेज में दाखिला तो हो ही जाएगा।

एक अननोन नंबर से फोन आया। वो फोन निधि का था। उसने मुझे बधाई दी। पर मैंने उससे ऐसे समय साधारण बातें कर ली। अमित ने फोन के पास आकर निधि से कहा, “अपनी कक्षा में थर्ड आया है।”

इतना कहकर मेरे नंबर भी उसे बताए उसने और कहा, “कॉलेज में एडमिशन तो हो ही जाएगा।” निधि ये सुनकर खुश हो गई। फिर फोन कट हो गया।

इस खुशी को सेलिब्रेट करने के लिए हम सभी दोस्त रात को घूमने निकले। अमित भी हमारे साथ था। हम एक रस्टोरेंट में गए जो महरौली में था। हमने वहाँ डोसा खाया और फिर एक फिल्म देखी। हम चारों के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। देर रात जब घर आए तो मम्मी-पापा हमारा रास्ता देख रहे थे। पापा ने मुझे गले

लगाया और कहा, “बेटा जिदंगी भर ऐसे ही सफलता छूते रहो।” मैंने उनके पैर छुए। मम्मी-पापा अपने कमरे में चले गए।

मैंने घड़ी देखी तो सुबह के पाँच बज रहे थे। तभी अमित ने मुझसे कहा, “एक बात करनी है।”

“ठीक है, ऊपर चलकर बात करेंगे।” मैंने सोचा कि पाँच बज रहे हैं अब कौन सी निधि ऊपर होगी। अमित ने ऊपर आकर कहा, “भाई अब तो उसे माफ कर दो, रात दो बजे से तेरा इंतजार कर रही है।”

मैंने निधि की छत पर देखा। वहाँ कुछ अँधेरा था। तभी लाइट जल गई। निधि ने वहीं से हाथ हिलाकर इशारा किया तो मैंने भी हाथ हिला दिया। और अमित से कहा, “आज के बाद ऐसी बेवकूफी मत करना। मैं उससे दूर रहना चाहता हूँ। कभी मुझे ऐसे ऊपर मत ले आना। हमारे बीच सब खत्म हो गया है।”

यह सुनकर अमित दंग रह गया, “ऐसा क्या हो गया है जो तुम ऐसी बातें कर रहे हो भाई?”

“हुआ तो कुछ नहीं, मैंने उसे छोड़ दिया है बस।”

“ठीक है, अब समझा तेरे बचपन के प्यार को कैसे भूला दिया है। उसको कोई और मिल गई है या बोर हो गए हो उससे?”

“तू कुछ भी समझ, मैं उससे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहता हूँ।”

तभी निधि की छत से उसकी आवाज आई- “राघव... राघव... राघव...” निधि चिल्ला रही थी जिसे मैंने सुना और वहाँ से नीचे आ गया। मेरा मूड खराब हो गया था। मैंने फोन को देखा, उस पर निधि का मैसेज था- ‘पहले प्यार को भुला दिया, कोई गलती हुई तो सॉरी।” मैंने उसके मैसेज को इगनोर कर दिया। मैं सच में दुबारा निधि के पास नहीं जाना चाहता था। मेरे लिए वो इस्तेमाल हो गई चीज भर थी, जिसे उस कमीने वंश ने इस्तेमाल कर लिया था। पर नहीं जानता था जिसे मैं नफरत कह रहा था, वो कहीं मेरे अंदर जी रही थी।

कुछ ही दिनों में कॉलेज के दाखिले के फॉर्म भी आ गए। पर मेरे नंबर जिसे बेस्ट फोर कहा जाता है 81 प्रतिशत से ज्यादा नहीं बैठ रहे थे। बेस्ट फोर वो होता है जिसके चार सब्जेक्ट में सबसे अच्छे नंबर होते हैं, जिस में एक ही भाषा होती है। इसका कारण था कि सब विषयों के नंबर समानांतर में थे। जबकि भोपले के नंबर बेस्ट फोर में 84 प्रतिशत बैठ रहे थे। मैंने सभी सुबह लगने वाले कॉलेज में फॉर्म भर दिए। अब कॉलेज की लिस्ट आनी बाकी थी। सोनू और देव का नंबर पहली ही

लिस्ट में आ जाना था। पर मुझे और भोपले को दूसरी और तीसरी लिस्ट का इंतजार करना था।

एक हफ्ते बाद पहली लिस्ट आई। सोनू और देव ने किरोड़ीमल कॉलेज में बी.ए. में एडमिशन ले लिया। बचे हम दोनों, हमें अगली लिस्ट का इंतजार था। फिर दूसरी लिस्ट भी आई। मेरे दिल की धड़कन बढ़ी हुई थी पर अब भी हमारा नंबर किसी कॉलेज में नहीं आया। कट ऑफ लिस्ट अब भी 86 प्रतिशत पर अटकी रही। अब हमारा नंबर किसी अच्छे कॉलेज में तो नहीं आना था। क्योंकि सभी अच्छे कॉलेज की सीट फुल हो गई थी। अब हमें दूसरी श्रेणी के कॉलेज में ही एडमिशन मिलना था। मैं इस दौरान मंदिरों में भी गया और खूब मन्नत भी माँगी कि किसी कॉलेज में मेरा नंबर आ जाए। कुछ दिन बाद तीसरी लिस्ट भी आई जो कि 84 प्रतिशत पर ठहर गई थी। मेरा नंबर अब नहीं आना था किसी भी कॉलेज में।

ऐसा लग रहा था मेरे हाथ से मेरी जिंदगी रेत के समान निकल रही हो। मैं समझ नहीं पाया कि ये कैसे हुआ। पहले भी 75 प्रतिशत वालों का एडमिशन आसानी से हो जाता था पर ऐसा क्या हुआ जो कट ऑफ 84 पर से नहीं घटी। मैंने इवनिंग में क्लास चलने वाले कॉलेज में फॉर्म ही नहीं भरा था। कसूर मेरा नहीं था, इतने सालों में किसी भी सरकार ने कॉलेज की संख्या नहीं बढ़ाई थी। और छात्रों की संख्या तो हर साल बढ़ती ही जा रही थी।

आखिरी लिस्ट निकलने के बाद सभी सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे विद्यार्थियों का गुस्सा सड़कों पर आ गया। लड़के और लड़कियाँ बसों और गाड़ियों को फूँकने लगे। इस बार की कट ऑफ को देखकर तो प्राइवेट स्कूल वाले भी आंदोलन में शरीक हो गए। रोज आगजनी की घटनाएँ तेज होने लगीं। विद्यार्थी बसों-गाड़ियों और बाइकों को आग के हवाले करने लगे। बात मीडिया में भी फैल गई कि शायद कॉलेज वालों ने कोई धाँधली की है इसलिए कट ऑफ ज्यादा गई है। ये सब देखकर मेरी थोड़ी उम्मीद बढ़ी कि शायद मेरा एडमिशन किसी कॉलेज में हो जाए। मीडिया वाले शायद इतनी ज्यादा कट ऑफ का कारण निकाल ले। पर सभी कॉलेज वालों ने हाथ खड़े कर दिए।

इसका कारण उन्होंने बताया कि देश भर से विद्यार्थी दिल्ली में कॉलेज का फॉर्म भरते हैं जिसके कारण इतनी ऊँची कट ऑफ गई है। इस पर विद्यार्थियों का गुस्सा उन पर भी निकलने लगा जो बाहर से आए थे। अब तो सारी दिल्ली में माँग उठने लगी कि ऐसे लोगों को एडमिशन नहीं देना चाहिए जो दूसरे स्टेट से आए हैं।

उन्हें कॉलेज से बाहर का रास्ता दिखाना चाहिए। लेकिन सरकार ने कहा कि ये नहीं हो सकता। दिल्ली देश की राजधानी है, यहाँ सब देशवासियों का समान अधिकार है कि वे आकर शिक्षा ले सकें। बात कोर्ट तक गई पर कोर्ट ने भी सभी को निराश ही किया।

अभी सब कॉलेज बंद थे। दूसरे स्टेट से आए विद्यार्थी सबसे ज्यादा डरे-सहमें थे पर धीरे-धीरे आंदोलन शांत पड़ गया। कुछ दिन बाद सारे कॉलेज भी खुल गए।

इस ऊँची कट ऑफ का असली कारण था वे विद्यार्थी जो नकली मार्कशीट बनवा लाते थे जिस में वे 90 प्रतिशत तक अपने अंक कर लेते थे। इस कारण सभी अच्छे विद्यार्थी पीछे रह जाते थे। कुछ ही लोग ये जानते थे जैसे कि मुझे भी ये बात एक विद्यार्थी ने बताई थी। कुछ ने तो ये भी बताया कि एक से पाँच लाख में कॉलेज में एडमिशन भी हो जाता है।

मेरे पास ना लाख था ना पाँच लाख जो मेरा एडमिशन किसी कॉलेज में होता। मैं कॉलेज ना पहुँच पाने से निराश था। पापा ने कहा, "या तो बारहवीं दुबारा कर या करेस्पॉन्डेंस से बीए करके अच्छे नंबर लाकर अगले साल कॉलेज में दाखिला ले लेना। मेरे सपने के साथ ही मेरे मम्मी-पापा का सपना भी टूट गया था। अब तो मैंने सोच लिया था मैं आगे कोई और ही रास्ता बनाऊँगा। सभी की तरह भेड़-चाल से दूर। इसलिए मैंने अब कॉलेज के बारे में सोचना ही छोड़ दिया। मैं समझ चुका था मेरा नसीब कॉलेज ना जाकर कुछ और ही है। और कॉलेज जाकर भी कौन-सा इन बच्चों का भला हो जाता है जो मेरा होता। ये सही भी था कि ज्यादातर विद्यार्थी कॉलेज मेजाकर भी क्या कर लेते हैं? मेरा रास्ता दूर का था, मेरा रास्ता क्लर्क या हेड क्लर्क या टीचर बनने का नहीं था। मुझे तो दूर तक उड़ना था।

एक दिन निधि का फोन मैंने गलती से उठा लिया। उसने भी मेरे कॉलेज में एडमिशन ना हो पाने पर दुख जताया। देव, भोपले और सोनू तो बहुत दुखी थे। मैंने उनसे कहा, "यही जिंदगी है, ऐसा होता रहता है। सभी को हर चीज नहीं मिलती जिंदगी में।"

सच है कि सभी को सब चीज मिल जाए जिंदगी में तो वो मजा जिंदगी में नहीं रह जाता जिसके लिए जिया जाता है। कुछ दिन बाद मैंने करेस्पोंडेंस से बीए का फॉर्म भर दिया। अपनी हार कबूल ली थी ये सोचकर कि किस्मत से ही तो हारे हैं, अपने से नहीं। हम किसी दिन और जीत जाएँगे किसी और चीज में। मैंने बीए की परीक्षा की भी तैयारी शुरू कर दी थी। पर कॉलेज में दाखिले के लिए नहीं अपितु

ज्ञान प्राप्ति के लिए। मैंने अपना लक्ष्य भी धुँधले अक्षरों में बना लिया था जिसे मुझे पाना था सोचा हर चीज में आखिर में पैसा ही कमाने है इसलिए सीधे हाथ से कान ना पकड़ के अपने पास होने का कान पकड़ा जाए। मैं मन में कुछ फैसला कर रहा था कि क्या किया जाए।

अध्याय-12

बारहवीं का परिणाम आए दो महीने से ज्यादा समय बीत गया था। मैं अपनी भविष्य के बारे में सोच रहा था और कमरे मेलेटा हुआ टेबल लैंप को कभी जला तो कभी बुझा रहा था। अभी रात के ग्यारह बजे थे। मेरा भाई दूसरे लैंप से पढ़ रहा था। गर्मी का मौसम था पर कमरे में ऐसी से अच्छी-खासी ठंड हो रही थी। अमित ने कहा, "भाई ठंड लग रही है, ऐसी धीमा कर दो और लैंप के जलने-बुझने से पढ़ाई में खलल पड़ रहा है।"

मैं रुक गया और सोने लगा। तभी अमित ने कहा, "भाई तुम गूगल पर क्या ढूँढते रहते हो?"

"बस यही कि जिंदगी में आगे खेती करूँगा। मैं किसान बनना चाहता हूँ।"

ये सुनकर अमित हँसने लगा, "तुम खेतों में मजदूरी करोगे?"

"हाँ यही समझ लो।" कहकर मैं मुँह एक तरफ करके लेट गया। अमित ने सोचा कि मैं मजाक कर रहा हूँ। लेकिन वो कुछ बोला नहीं, फिर से पढ़ने लगा।

सच में मैं एक किसान बनकर आगे का काम करना चाहता था। पर फिर भी अपनी पढ़ाई जारी रखकर। इस काम के लिए हमारे गाँव गागोली में नौ एकड़ जमीन भी थी जो कि में वात सोहना (हरियाणा) में एक गाँव है। इस जमीन में पाँच एकड़ तो पुश्तैनी है। बाकी की जमीन पापा ने धीरे-धीरे खरीदी थी जिस में मेरे चाचा खेती करते थे, लेकिन हमें कुछ नहीं देते थे। पापा सोचते थे कि चाचा राजिंदर को ज्यादा नहीं बचता है, इसलिए पापा ने उनसे कुछ नहीं माँगा। कभी पहले चाचा साल में एक बार चावल या गेंहूँ ट्रक में भरकर भेज देते थे। पर पिछले पाँच साल से वो भी बंद कर दिया था। हमें भी गाँव गए पाँच साल हो गए थे। दादा जिंदा थे तब हम वहाँ साल में एक बार चले जाया करते थे, पर पापा हर चार या पाँच महीने में गाँव का चक्कर लगा आते थे। दादा के निधन के बाद गाँव जाना बंद था। दादी को तो मैंने कभी देखा ही नहीं था। मरने से पहले दादा ने पापा और चाचा की जमीनों का बँटवारा कर दिया था, साथ में घर का भी। नया घर चाचा के पास था और पुराना पापा के पास था, जो अब खण्डहर हो चला था।

अब मुझे पापा को मनाना था कि अब मैं गाँव जाकर खेती करूँ। मुझे खेती में क्या करना था, उसकी एक योजना भी बना ली थी। मैंने एक दिन पापा से कह ही दिया, जब वे ऑफिस से आए।

"पापा अब मैं खेती करना चाहता हूँ।" मैंने डरते-डरते कहा।

पहले पापा हँसे फिर बोले, "कभी फावड़ा भी उठाया है जो तुम खेती करने की कह रहे हो? तुझे पता नहीं कितनी अकल से खेती की जाती है। तुमने कभी चावल की निराई की है? बस तुम पढ़कर नौकरी कर लो, यही तुम्हारे लिए अच्छा है।" यह कहकर हँसते हुए वो अपने कमरे में चले गए। पर मैं भी ढीठ था। मैंने सोचा इतवार को पापा की छुट्टी होगी तब पापा से बात करूँगा। अगले दिन इतवार था तो मैं उनके पास गया। पापा अखबार पढ़ रहे थे।

"पापा मैं... पापा मैं किसान बनना चाहता हूँ... पर मैं पढ़ाई जारी रखूँगा। मुझे एक मौका चाहिए। मैं खेती-बाड़ी करना चाहता हूँ।"

"तेरी समझ में नहीं आता क्या? तेरे से ये नहीं होने वाला, तू बस पढ़ाई कर। ये काम वो लोग करते हैं जिन्होंने इसे शुरू से किया हो। तू बस पढ़ाई कर, ये काम अनपढ़ों के होते हैं तुम्हारे जैसों के नहीं।" पापा के विचार सुन कर मैं हैरान रह गया। मैं समझ गया की उन्हें मनाना आसान नहीं रहने वाला है।

"पर क्यों नहीं कर सकता? मैं भी कर सकता हूँ, मैं सच कह रहा हूँ। मुझे एक मौका तो दो।" पापा मुझे घूरकर देख ही रहे थे कि तभी मम्मी वहाँ आ गई, "क्या करना है तुम्हें?"

"साहबजादे खेती करना चाहते हैं।" फिर वो अखबार के पन्ने पलटने लगे। मम्मी ने कहा, "तुम जानते नहीं कितनी मेहनत का काम है ये। कभी बारिश तो कभी ओले मार देते हैं फसल को। तेरे से ये नहीं होने वाला और तेरी ऊम्र ही क्या है जो तुम अपने शरीर को खेती में तोड़ो।"

"मम्मी मैं अठारह साल का हूँ। मेहनत-मशक्कत से तो शरीर बनता है बिगड़ता नहीं है। प्लीज मान जाओ।" मम्मी ने मुझे घूर कर देखा पर फिर नरम हो गई।

"तू बेवकूफ है जो अपना चाँद-सा चेहरा खेती में काला करना चाहता है।" मम्मी ने कहा। पापा गुस्से में अखबार टेबल पर रखकर नहाने चले गए। अमित भी हँसने लगा।

"भाई हम में से एक को तो किसान होना ही चाहिए, जो सेब-संतरे-केले-अमरूद और चावल लाकर हमें खिला सके।"

"किसान ओए किसान! इतना भी नहीं जानते सेब ठंड में होते हैं।"

"मैं कौन-सा अभी किसान हूँ जो मुझे ये सब पता होगा।" कहकर मैं मम्मी के पीछे चाय लेने रसोई में गया, "मम्मी प्लीज मान जाओ। हमारे क्या खेत नहीं हैं जो

हमेजमीन खरीदनी पड़ेगी? एक-दो साल खेती कर लेने दो।” मम्मी मुस्कराई और शरारती अन्दाज में कहा “वो तेरी गर्लफ्रेंड है ना गुप्ता जी की लड़की, वो तेरे से शादी नहीं करेगी। अगर उससे शादी करनी है तो पढ़-लिखकर अफसर बन जा। किसान से शहर की कोई लड़की शादी नहीं करती है।” मम्मी हँसती रही काफी देर तक। मैंने चाय लेकर अमित से कहा, “क्या पट्टी पढ़ा दी तुमने मम्मी को? निधि के बारे में वो मजाक उड़ा रही है। मैंने पहले ही कहा था मम्मी और पापा से कोई इस बारे में बात नहीं करना।”

मुझे अमित पर गुस्सा आ रहा था मैं तो अपने काम के लिए उन्हें राजी कर रहा था ये तो मुझे कहीं और फँसा रहा था।

उसने कहा, “किसान अब नहीं मिलेगी वो निधि तुझे। कौन लड़की शहर से गाँव जाती है?”

अपना मजाक चारों तरफ से बनता देख मैं मुँह फुलाकर कमरे में घुस गया। तभी मम्मी कमरे में आई, “बेटा चाय पी ले। इस खेती-बाड़ी को दिमाग से निकाल दे। तेरे चाचा भी खेती करते हैं, उन्हें क्या बचता है? समझ अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है, बस अठारह साल। पढ़-लिखकर कुछ बन जा।” मुझे चाय देते हुए मम्मी ने कहा।

एक बार तो लगा की ऐसे बात नहीं बनेगी पर मम्मी पापा की रजामन्दी के बाद ही मैं खेती कर सकता था इसीलिए मुझे अपनी बात पर अड़ा रहना था।

“पर मम्मी, मुझे ऐसी खेती नहीं करनी।”

“पर कैसी करनी है?”

“मैं अभी नहीं बता सकता हूँ।” मम्मी ने मेरे सर पर हाथ रखा और कहा

“बेटा पढ़ने-लिखने की उम्र में तुम किसान बनोगे? सच पूछो तो गाँव के लड़के भी खेती नहीं करते हैं। वे भी पढ़-लिखकर नौकरी करना चाहते हैं। जो हैं वे बस पेट पालने के लिए ही इस काम में घुसे हैं। उनके माँ बाप भी नहीं चाहते कि वे खेती-बाड़ी करें। तुम क्या करोगे गाँव जाकर? ये काम मैं तुम्हें नहीं करने दूँगी। मैं नहीं चाहती कि तुम गाँव जाओ। तुम्हें नहीं पता मैं और तेरे पापा कैसे निकले हैं उस गाँव से। हाँ अगर तुम खेती करना चाहते हो तो अपने चाचा के घर दो महीने साल मेजाकर ये शौक पूरा कर सकते हो। बेटा ये समय तुम्हारे पढ़ने का है। मेरी बात ध्यान से समझ। तुम दोनों भाई पढ़-लिखकर कुछ बन जाओ। बहुत समय है तुम्हारे कमाने के। मैं तुम्हें मेहनत-मजदूरी में नहीं झोंक सकती हूँ।”

मैंने चाय की आखिरी घूँट लेते हुए कहा, “पर मम्मी, मैं ऐसी खेती नहीं करना चाहता। तुम नहीं जानती इस काम में पैसे भी हैं अगर सूझ-बूझ से खेती की जाए।” पर मम्मी ने मुँह बनाकर मेरे सर पर हल्की सी चपत लगाई। वे शायद सही भी हो वो मेरे भले के लिए ही कह रही थी शायद मेरी बेवकूफों वाली सोच पर उन्हें गुस्सा भी आ रहा था।

“तेरे दिमाग में भूसा भरा है जो तेरे भले की बात समझ नहीं आती। क्या करेगा खेती करके? तेरी शादी भी नहीं होगी किसी अच्छी लड़की से। इतनी-सी उम्र में ये मत सोच कि तुझे करना क्या है। तू बस पाँच-छह साल पढ़ाई कर। और ये शौक खेती का अपने चाचा के घर जाकर पूरा कर लेना।”

मैं सिर्फ सुनता रहा। मुझे किसी ने गंभीरता से नहीं लिया। पापा कमरे में आए और बोले, “बेटा इस खेती को दिमाग से निकाल दे। गाँव में भी कोई आदमी अपने बच्चों को इस काम में नहीं धकेलना चाहता है। लोग तो मजबूरी में ही इस काम को करते हैं।”

“पर पापा...” पापा को भी अब गुस्सा आ गया। वो भी मेरे खेती के काम को करने से नाखुश ही थे पर मैं अड़ा रहना चाहता था। नहीं तो मैं कुछ भी नहीं कर सकता था। उन्होने गुस्से में कहा “पर क्या? बाग लगाएगा खेतों में जो तू सोच रहा है बहुत पैसे है इस काम में? गाँवों से हर साल न जाने कितने ही लोग शहर का रुख करते हैं। कुछ नहीं रखा बेकार के इस काम में। मैं भी पढ़-लिखकर गाँव को छोड़ आया हूँ। जानते नहीं हो हरियाणा मेलड़कों की शादी तक नहीं होती है। तुझे शहर में रहकर अच्छा मौका मिला है पढ़ाई का। छोड़ ये सब, ये तुम्हें ठोकरकेअलावा कुछ नहीं देगा। किसान सुबह चार बजे उठते हैं और रात के आठ बजे तक काम करते हैं। मिलता क्या है इस काम में, कुछ पैसे छह महीने में? जानते हो टीवी देखने का भी समय नहीं मिलता है किसानी में। बस मशीन की तरह काम मेलगे रहो सुबह से शाम तक। अगर नहीं मानता तो जाकर गाँव में देख आ, वे अपनी साल भर की कमाई में एक बाइक भी नहीं ले पाते हैं। मैंने तो तुम्हें बुलेट दिला दी है।” पापा गुस्से में थे पर मैं उन्हें प्यार से मनाना चाहता था। पर लगा उन्हें समझाना बहुत मुशकिल है। वे अपनी सोच नहीं बदल सकते थे। उन्होंने शायद खेती का सिर्फ एक पहलू ही देखा था जो की मदर इन्डिया फिल्म की तरह का था। जहाँ किसान बस गरीबी और भूख से ही मरते रहते हैं।

“पर पापा मैंने इस काम के लिए पूरी तैयारी की है गूगल से। पापा मैं कर सकता हूँ और अपनी पढ़ाई भी जारी रख लूँगा। मेरा काम ज्यादा मेहनत का नहीं है।

तुझे समय ही नहीं मिलेगा वहाँ पढ़ने का। मैं तेरे भले के लिए ही तो कह रहा हूँ। अगले साल पूरी तैयारी के साथ कॉलेज पहुँच।” मेरी आँखों में पानी आ गया ये सब समझाने में, मैं शायद मम्मी-पापा को नहीं मना सकता था मुझे लगने लगा पर मैं अभी हार मानने वाला नहीं था “पर पापा, मैं ये काम कर सकता हूँ। आप मेरी बात पर विश्वास करिए। मैं अगर गलत साबित हुआ तो आपको मैं मुँह नहीं दिखाऊँगा।”

“चुप कर नहीं तो पिटेगा! जो कहा है उस पर ध्यान दे। कितने समय से समझा रहा हूँ, किसने ये तेरे दिमाग में डाल दिया है कि खेती-बाड़ी करके करोड़पति बन जाएगा।”

पापा ने अपना धैर्य खोते हुए कहा। तभी मम्मी ने कमरे में आकर कहा, “बेटा जवान है, प्यार से समझाओ। ये सब मैं इसे कह चुकी हूँ। जाकर महीने भर इसे चाचा के घर छोड़ आओ, सब समझ में आ जाएगा कि कितना कमाते हैं वो। कुछ दिन हाँड़ गला देने वाली मेहनत करने दो।” मुझे लगा की बात बनने की जगह बिगड़ रही है। पर मैं अपने सपने को छोड़ नहीं सकता था। मुझे तो जीतना ही है चाहे जो हो जाए।

“मम्मी मैं ऐसी खेती नहीं करूँगा जिसमें मेहनत है।”

“तो क्या गेहूँ चावल की फैक्ट्री लगाएगा?” पापा ने अपना पारा बढ़ाकर मुझे धमकाया। मैं भी सुनकर एक तरफ हो गया। पापा वहाँ से चले गए। मम्मी ने कहा कि आप फिक्र मत करें, मैं समझा दूँगी।

मम्मी-पापा वहाँ से चले गए। अमित भी कमरे में आ गया और बोला, “भाई खेती में ऐसा क्या है जो तुम करना चाहते हो?”

“मेरी बात पर किसी को यकीन नहीं है, पर ये एक अच्छा काम है।”

“पर मम्मी-पापा नहीं मानेंगे।”

“क्या मैं उनकी तरह ही जियूँ? मैं अपने लिए कोई रास्ता नहीं बना सकता?” मैंने रोते हुए कहा। किसी की सोच को बदलना बेहद मुशकिल होता है मेरे मॉ पिता की तरह। उनमें ये सोच बस कर रम गई थी की खेती एक आजीविका का सबसे बुरा विकल्प है।

"रो मत। बस अब एक ही रास्ता है तुम्हें अपनी बात मनवाने का। तुम दो दिन तक खाना-पीना छोड़ दो तो शायद वे मान जाएँ। जब पापा ने बाइक खरीदने के लिए तुम्हें ना कर दी थी तो तुमने खाना छोड़ दिया था तो वो मान गए थे।"

"पर तब की बात अलग थी। अब मैं खाना नहीं छोड़ सकता।"

"तुम बस नाटक करो और खाना मत छोड़ो। मैं तुम्हें अपने में से आधा खाना दे दूँगा।" सुन कर मैं समझ गया मेरा भाई मरे से ज्यादा अक्ल वाला है। अब मुझे लगा एसे मेरा काम हो जाएगा। वे मेरे मॉ-पिता थे वे हरगिज नहीं देख सकते थे की मैं भूखा रहूँ।

"यार तेरे में बहुत अक्ल है। सच में पूरा शातिर है तू, पूरा का पूरा कमीना है।" ये कहते हुए मैंने धीरे से उसके सर पर चपत लगाई। जैसे ही शाम का खाना बना, मम्मी ने कहा, "राघव, खाना लग गया है, आकर खा ले।"

मेरे प्लान के हिसाब से मैं खाना खाने नहीं गया। पापा-मम्मी ने खाना खा लिया। मुझे आते ना देख पापा ने कहा, "क्या ड्रामा है अब ये खाना क्यों नहीं खा रहा है?"

"वही बात। खेती-बाड़ी करूँगा और क्या! जिद्दी है बचपन से ही, कितना भी समझा लो नहीं मानेगा।" मम्मी ने कहा। मैं ये सब सुन रहा था।

"एक ही दिन में पता चल जाएगा और एक दिन ना खाने से मर थोड़ी जाएगा। आज नहीं तो कल खा लेगा, तुम परेशान मत हो।" मम्मी से पापा ने कहा और वो अपने हाथ धोकर चले गए। मम्मी भी बर्तन धोने चली गई।

अमित मेरे लिए खाना ले आया। मैंने कहा, "इतना कम खाना?"

"वो मुझे ज्यादा भूख थी, इसलिए एक रोटी ज्यादा खा ली।"

"पर ये तो ऊँट के मुँह मेजीरा है।" मैंने कहा तो अमित हँसते हुए टीवी देखने लगा।

अगली सुबह भी ये खाना ना खाने का ढोंग चलता रहा और जब शाम को पापा घर आए तो उन्होंने मम्मी से पूछा, "खाना खाया इसने?"

"नहीं, चाय तक नहीं पी है।"

"ठीक है, आज नहीं तो कल खा लेगा।"

उन्होंने भी रात का खाना नहीं खाया। ये सब देखकर मुझे भी बुरा लग रहा था। रात को अमित मेरे लिए खाना लेकर आया। पर ये जान कर की पापा ने खाना

नहीं खाया मेरी भी भूख मर गई। मन से मैं अपराधी महसूस कर रहा था मैं इस नाटक को अब आखरी कोशिश के बाद बन्द करना चाहता था की मैं खेती करूँ।

"यार मेरा मन नहीं है, पापा ने आज खाना नहीं खाया।"

"तो क्या हुआ तू तो खा सकता है।"

"नहीं मेरा मन नहीं है।" मैं बिस्तर पर लेट गया। तभी मम्मी मेरे पास आई, "बेटा दूध तो पी ले।"

"नहीं मम्मी, नहीं पीना मुझे दूध। आप मेरी बात क्यों नहीं मानते?"

"बेटा मान रहे हैं पर तू पहले सीख खेती कैसे की जाती है, तभी तो कर पाएगा। अगले महीने चला जा अपने चाचा के घर।"

"मम्मी मैं जानता हूँ तुम मुझे ये सब भुलवाना चाहते हो जो एक महीने के लिए कह रही हो।" इतना सुनकर मम्मी मुस्कुराती हुई वहाँ से चली गई।

रात बारह बजे मैं पापा के कमरे में गया, "पापा उठो।"

"हाँ बोलो।" पापा ने उठते हुए कहा।

"पापा, क्या मैं कभी अपनी मर्जी से जी पाऊँगा? आप मेरी जिंदगी के सारे फैसले लेते हो पापा, पर मैं अब बड़ा हो गया हूँ। अपना भला-बुरा समझता हूँ। मैं अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए खेती-बाड़ी करूँगा। मेरी तरह की खेती में मेहनत कम है। और ज्यादा कुछ होगा तो मजदूर रख लूँगा। मैंने इन सब की तैयारी पहले ही कर ली है। आप अपने बेटे पर विश्वास कर सकते हैं। आप मुझे ये सब करने दीजिए। मैं अगर कुछ नहीं कर पाया तो कभी कुछ करने के लिए आप से नहीं कहूँगा। आप एक मौका तो मुझे दे ही सकते हैं, प्लीज पापा।" पापा अब पिघल गए। वे शायद समझ गए की जवान होते बच्चों पर अपनी सोच को थोपा नहीं जा सकता है। उन्हें भी नई सोच बना लेना चाहिए।

"ठीक है, तेरी जैसी मर्जी। मैं तो तुम्हें समझा रहा था कि बड़ी परेशानी होगी। तुम्हें ये काम करने में साथ में पढ़ाई भी करनी है पर जो तुम चाहो कर सकते हो बेटा, अब तुम जवान हो गए हो। धीरे-धीरे सब समझ जाओगे। ऐसे ही बाल सफेद नहीं किए हैं मैंने। जाओ तुम खेती ही करो।"

पापा ने अपने आँसू पोंछते हुए कहा। मम्मी भी वहीं पर लेटी हुई थी। वो उठकर बोली पापा से, "ये क्या कह रहे हो आप? जानते नहीं कि इससे नहीं होगा?"

पापा ने कहा, "एक मौका तो देना चाहिए। कर लेने दो इसे अपने मन की।"

इतना सुनकर मैं हवा में उछल पड़ा और पापा से कहा, “नौ-दस लाख भी देने होंगे आपको।”

“अरे दस लाख किसलिए बेवकूफ? वो मेरी तो जीवन भर की पूँजी है।” पापा चिल्लाए।

तभी मम्मी ने हँसते हुए कहा, “अब मान गए हो तो दे दो। इसे भी पता चलेगा कि शादी के लिए रखे पैसे भी पानी में गए।”

मैंने कहा, “मैं चंडीगढ़ जा रहा हूँ कल ही।”

“पर वहाँ क्यों?” मम्मी ने पूछा।

“खेती के बारे में पता करने।”

“पर ये खेती कैसी खेती है?”

“जब करूँगा तो पता चल जाएगा।”

“अच्छा अब खाना तो खाले।” मम्मी रसोई में गई और राजमा चावल ले आई।

“पापा के लिए भी ले आओ।” मैंने कहा तो मम्मी उनके लिए खाना लाने चली गई।

अगले दिन शाम को चंडीगढ़ के लिए निकल गया। सुबह वहाँ पहुँचकर मैंने अपनी जानकारी एक फिल्म मेली। बाजार से कुछ जरूरी सामान खरीदा जो मुझे गाँव मेजरूरी था और वहाँ नहीं मिलता था। फिर वहाँ से रात को ही घर के लिए चल दिया।

उधर पापा ने चाचा से भी अपनी जमीन वापसी के लिए कहा। थोड़ी ना-नुकुर के बाद वो मान गए। मैंने अमित से भी दो दिन के लिए गाँव जाने को कहा पर उसने कहा कि उसके दसवीं के एगजाम आने वाले हैं और स्कूल मेजरूरी टेस्ट भी है। मैं सुबह-सुबह ही अपने गाँव गागोली के लिए निकल गया। ये खेती क्या थी, मेरे अलावा किसी को पता नहीं था। तीन घंटे बाइक चलाकर मैं सोहना से अपने गाँव पहुँचा। पहुँचते ही मैंने चाचा-चाची के पाँव छुए तो उन्होंने आधे मन से आशीर्वाद दिया। मैं फिर अपने भाई से मिला जिसका नाम था सत्ते। सत्ते तो मुझे देखकर खुश था पर चाचा-चाची को मुझसे मिलने की कोई खुशी प्रतीत नहीं हो रही थी। चाची ने मुझे काली चाय दी और कहा, “बेटा इस जमींदारी का तुम्हें कुछ पता भी है जो अचानक ही यहाँ आ गए। अभी तो तुम्हारे खेतों में हमारी फसल खड़ी है, उसे तो काट लेने देते।”

“चाची, खेतों में कौन-सी फसल है?”

“ज्वार की फसल है बेटा।”

“ठीक है, मैं आपको ज्वार के पैसे दे दूँगा।”

“दो लाख की ज्वार है दे पाओगे इतने पैसे?” चाचा ने कमरे में आते हुए कहा।

“हाँ क्यों नहीं। दे दूँगा।” ये सुनकर चाचा ने कहा, “पर तुम करोगे क्या यहाँ पर?” “वो मैं बता दूँगा क्या करूँगा।” इतना सुनकर चाचा मुँह बनाते हुए वहाँ से चले गए।

शाम को सत्ते ने कहा, “चलो गाँव में तुम्हें घुमा लाता हूँ।”

“नहीं यार, अभी थका हुआ हूँ। कल चलेंगे, अभी तीन घंटे बाइक चलाकर आया हूँ।”

“ठीक है, तुम मेरे कमरे मेलेट जाओ। मैं बाहर जा रहा। खेत से थोड़ी ज्वार भी लानी है।”

“तू लाएगा ज्वार? कौन काटेगा ज्वार को? आती भी है क्या तूमने ये काम कभी किया भी है?”

“हाँ, मम्मी काट देती है और मैं अपनी बाइक पर ले आता हूँ।”

मैं सत्ते के कमरे में आ गया। उसने कमरा बहुत अच्छी तरह सजा रखा था। हॉल के मुकाबले कमरे में ऐसी भी था, जो मैं देखकर दंग रह गया। फिर मैं घर के पीछे गया तो देखा एक जेनरेटर भी था जिसे खेतों में पानी निकालने वाले इंजन से जोड़ रखा था। मुझे पता था गाँव में बिजली दिन में कुछ घंटे ही रहती है। इस समय घर में कोई नहीं था। मैं दूसरे कमरे में गया, ये कमरा चाचा-चाची का था। इस कमरे में भी ऐसी था। मैं फिर घर के ऊपर गया, यहाँ पर भी दो कमरे थे। अब सिर्फ एक कमरा बचा था जहाँ मैं नहीं गया। ये कमरा चचेरी बहन किरण का था। उस में गेहूँ पीसने वाली एक चक्की लगी थी। चक्की काफी बड़ी थी, ये शायद गाँव के लोगों के लिए थी जिस में पैसों में गेहूँ पीसा जाता था। चक्की को डीजल के इंजन के साथ-साथ मोटर से भी जोड़ रखा था। बस पट्टे से जोड़ना था।

उस घर में केवल तीन लोग ही रहते थे। किरण की शादी हो चुकी थी। गाँव मेलड़कियों की शादी जल्दी कर देते हैं। मैं सत्ते के कमरे में चला गया जहाँ पर हल्की ठंड रह गई थी ऐसी के चलने के बाद। मैंने कमरे में अलमारी को देखा जहाँ पर एक लैपटॉप भी था। ऐसा लग ही नहीं रहा था ये किसी गाँव वाले का घर हो। किचन को भी मैंने देखा, यहाँ पर गैस सिलेंडर से लेकर मिक्सी तक थी। घर पर

एक समरसिबर भी था, पहले यहाँ पर हैंडपंप हुआ करता था जिससे सारे घर का पानी मिलता था। घर में एक ही कमी थी, बस गाड़ी नहीं थी। देखने से लगता था चाचा चार-पाँच साल में धनी व्यक्ति हो गए हैं। मैं फिर सत्ते के कमरे मेजाकर सो गया। ये सोचते हुए कि सत्ते के कमरे में एक भी किताब नहीं देखी थी ना और किसी कमरे में थी। शायद उसने पढ़ाई छोड़ दी थी। पर चाचा ने तो पापा से कहा था सत्ते बी.ए. के पहले साल में है। ये सब सोचते-सोचते मेरी आँख लग गई।

रात को जब घर की घंटी बजी तब मेरी नींद खुली। अब रात के नौ बज रहे थे चाचा-चाची घर आ गए थे। मैंने पूछा, “चाचा इस समय घर आए, अभी तक कहाँ थे?”

“अरे बेटा, खेती ऐसे ही नहीं होती। बड़ी मेहनत का काम है।” चाची ने कहा।

“क्या चाचा, घर में चक्की लगी है? आप ने गेहूँ पीसने की दुकान बना रखी है?” मैंने पूछा।

“हाँ बेटा, खेती से क्या काम चलता है? कुछ और भी करके इस महँगाई मेजीवन कटता है।”

मैंने उन्हें और ज्यादा कुछ नहीं कहा। असलियत में चाचा-चाची आस-पड़ोस में ये कहने गए थे कि देखो रमेश भाई साहब का लड़का अब खेती-बाड़ी करने आ गया है। हम उनकी जमीन से दो रोटी खा लेते थे, पर उन्हें मंजूर नहीं कि कोई चैन से रहे। लड़का पढ़ा नहीं तो कसूरवार हमें ठहरा रहे हैं। रात-दिन जमींदारी में पिसेगा तब पता चलेगा यहाँ क्या बचता है और क्या नहीं। देख लेना दो महीने में ही भाग जाएगा।

मैं रात बारह बजे तक खाने का इंतजार करता रहा पर अभी खाना नहीं बना था। घर में चक्की की आवाज आ रही थी, जहाँ चाची गेंहूँ पीसने मेलगी थी। मैंने रसोई मेजाकर देखा तो पाया चाची ने खाना तो बना दिया था, पर मुझे नहीं दिया था। चाचा घर के बाहर फिर से चले गए थे। तभी सत्ते आया और कहा, “राघव खाना खा लिया?”

“नहीं अभी नहीं खाया। किसी ने कहा ही नहीं।”

“अरे मम्मी चक्की सँभाल रही है। वो शायद काम मेलग गई होगी। मैं अभी खाना लाता हूँ तुम्हारे लिए।”

उसने खाना परोस दिया। कद्दू की सब्जी थी जिस में दुनिया भर की मिर्ची थी। जैसे ही मैंने पहला निवाला मुँह में डाला, मुँह जल गया। यही हाल सत्ते का भी

हुआ। उसने खाना नहीं खाया और चाची के पास जाकर चिल्लाने लगा, “मम्मी क्या मिर्ची सब्जी से भी ज्यादा डाल दी, कौन खाएगा ऐसा खाना?”

“अरे बेटा डाली तो उतनी ही थी पर मुझे क्या पता था मिर्ची ज्यादा तीखी थी। तू शक्कर से रोटी खा ले।” मैं सब समझ रहा था कि वे मेरे आने से खुश नहीं थी।

“पर राघव किससे खाएगा?”

“उसे भी शक्कर दे दो।”

सत्ते रसोई में गया और दो कटोरी शक्कर में घी डालकर ले आया जिससे मैंने और सत्ते ने खाना खाया। मैंने सत्ते के मुँह से शराब की बदबू महसूस की पर बोला कुछ नहीं। मैं खाना खाकर ऊपर चला गया। फिर देव और सोनू से बारी-बारी से बात की।

सत्ते भी थोड़ी देर में ऊपर आ गया तो मैंने सत्ते से पूछा, “यार तुने पढ़ाई छोड़ दी है क्या?”

“हाँ दसवीं में दो बार फेल हो गया था, इसलिए पापा ने पढ़ाई बंद करवा दी ताकि कोई मजाक ना बनाए कि उनके लड़के का...”

“तो अब क्या करते हो? शराब की बदबू भी आ रही है तुम से।”

सत्ते हँसते हुए बोला, “मुझे पढ़ाई करने की क्या जरूरत? मुझे कौन-सी नौकरी करनी है? गाँव भर में पापा का नाम है, जमीन-जायदाद की कमी नहीं है। यार तू भी देख जब साल में चार लाख के चावल दो-दो लाख के गेंहूँ और ज्वार हो जाए तो क्या तुम पढ़ते? साथ में रोज चक्की का एक हजार रुपया अलग से आ जाता है। जानते हो, पूरे गाँव में पापा का नाम चलता है।”

“पर ये सब तो उनका है। तुम्हें भी तो कुछ करना चाहिए न?”

“अरे अकेला हूँ। कौन से दो-तीन भाई हैं जो कमाना पड़े! मेरे पापा ने मेरे लिए कौन-सी कमी छोड़ी है? अब तो मेरे लिए शादी के भी रिशते बड़े-बड़े घर से आने लगे हैं। मेरी शादी में स्विफ्ट गाड़ी मिल ही जाएगी।”

मुझे उसे अब कुछ नहीं समझाना था। समझ गया कि बैल बुद्धि है, उसको कुछ समझ में नहीं आने वाला। मगर सत्ते जैसा भी था, दिल का साफ था। वो मुझे प्यार भी बहुत करता था, नहीं तो मुझे ये सब नहीं बताता।

“तू बता तेरे दिमाग में खेती करने की क्या घुस गई जो मैंने कभी नहीं सोचा?” सत्ते ने पूछा।

“यार कॉलेज में एडमिशन नहीं हुआ इसलिए।”

“पर तेरे परिणाम में 81 प्रतिशत नंबर थे।”

“इससे भी ज्यादा चाहिए थे।”

“हमारे यहाँ तो बस बारहवीं में पास हो जाने पर ही एडमिशन हो जाता है।”

“चलो ठीक है, अब कल बात करना, मुझे सोना है।”

“ठीक है तू सो जा।”

सत्ते की बात सुनकर मैं सारी रात सोच में चकित था कि पापा तो कह रहे थे खेती-बाड़ी में बड़ी मेहनत है, पर पैसे नहीं हैं। लेकिन यहाँ तो उल्टी गंगा बह रही थी। सोचने लगा कि चाचा तो पापा के सामने गरीबी का नाटक करते हैं, पर असलियत कुछ और है। वो तो गेहूँ-चावल ना भेजने का कारण कम उपज बताते हैं, साथ में पापा से किरण की शादी में चार लाख ऐंठ भी लिए थे। तीन साल हो गए हैं पर पैसे वापस नहीं दिए हैं। जब भी मम्मी ने उनसे पैसे वापसी के लिए कहा तो वो कहते रहे कि फसल अच्छी नहीं हुई है।

अगले दिन मैं गाँव में घूमने निकला। मैंने देखा कि ये गाँव वैसा गाँव नहीं रह गया था। यहाँ तो बहुत बदलाव आ गया था। गाँव में जो पहले कच्ची सड़क थी या गली थी उसकी जगह पर कंकर-ईंट की पक्की सड़क बन गई थी। साथ में जो नालियाँ कच्ची थी, उनकी जगह सीवर की लाइन पड़ गई थी। मैंने सत्ते से पूछा, “इन सीवर लाइन का गंदा पानी कहाँ छोड़ा जाता है।”

“वो गाँव की पोखर में जो गाँव के बाहर है।”

मैं गाँव के घर भी देख रहा था। सारे गाँव के घर सुंदर बन गए थे। मैंने कुछ गाँव के पुराने घर भी देखे जो पहले के जैसे थे, पर फिर भी नए घर ज्यादा थे। गाँव में घूमने से पता चला कि अब इस गाँव के लोग काम भी नए तरीके से कर रहे थे। ये लोग मवेशियों का चारा भी खेत से बाइक से लाते थे। साथ में खेतों में भी काम आसान हो गया था। यहाँ अब खेत की फसल हाथ से काटने के बजाय मशीन से काटी जाती थी। सड़क किनारे के कई घरों के बाहर मशीन भी देखी।

सत्ते से पता चला इन मशीनों से एक दिन में पाँच से दस हजार भी गाँव के लोग कमा रहे थे जिनके पास ये मशीनें थी। मैंने कुछ दलितों के घर भी देखे। वे भी पक्के बन चुके थे। सत्ते से पता चला कि गाँव के लोग अब खेती पर ही निर्भर नहीं थे, वे अब नौकरी भी करते थे, कोई फैक्ट्री में तो कोई कंपनी में। शायद बड़े शहर के पास होने से ये सँभव हो पाया।

मैंने सत्ते से पूछा, “क्या गाँव के दलितों पर भी कुछ फर्क पड़ा या अब भी वे गरीब ही रह गए हैं?”

“अरे उनकी तो सबसे ज्यादा मौज है। थोड़ा बहुत पढ़-लिख जाने से ही उन्हें सरकारी नौकरी मिल जाती है। पर फिर भी गाँव में छुआछूत है। लोग उन्हें अब भी छोटा ही मानते हैं, पर असलियत मैं इनकी माली हालत सबसे अच्छी है।”

मैंने एक बड़ी हवेली देखी जो अब भी ठीक-ठाक हालत में थी। जिसकी ये हवेली थी, मैं उन्हें जानता था। मैंने सत्ते से कहा, “ये हवेली अभी तक वैसी ही है। क्या ये लोग अब गाँव में सबसे पैसे वाले नहीं रहे?”

सत्ते हँसा, “अरे अब ये बड़े जाटों के लोग हवेली में नहीं रहते हैं। वे अब अपने खेतों में बड़े से बंगलो में रहते हैं। उन्होंने तो पाँच साल पहले ही बंगला बना लिया था और वहाँ बस गए थे।”

“अब भी वे गाँव में सबसे ज्यादा खेत रखते हैं?”

“हाँ अब भी वे गाँव में सबसे ज्यादा खेत रखते हैं। कोई सौ एकड़ भूमि तो होगी ही, पर घर मेज्यादा लड़के होने के कारण उन पर ज्यादा खेत अब हिस्से नहीं आते हैं।”

मैं हँसने लगा, “क्या लड़कों की जगह लड़कियों को जमीन नहीं दी जाती है?”

“लड़की की शादी हो जाने पर उन्हें जमीन नहीं मिलती है, दी जाती तो जमीन ही नहीं बचती।” मैं और सत्ते इस बात पर हँसने लगे।

“अब वे बड़े जाट क्या करते हैं? मतलब उनका धंधा क्या है?”

“उनका धंधा वही है, ईंटों के दो भट्ठे हैं। किसी के पास रोड़ी डस्ट बनाने की मशीन है।”

“फिर तो उनके पास पैसों की क्या कमी?”

“हाँ यही सच है। चलो आज उनके लड़कों के साथ पार्टी करते हैं। वे मेरे अच्छे दोस्त हैं।”

हम गाँव में घूमकर रोड पर आ गए। और रोड के मंदिर में आकर माथा टेका। मैंने सत्ते से पूछा, “यहाँ क्या अभी भी इस मंदिर में दलितों को आने की मनाही है?”

उसने मंदिर के बाहर जूते पहनते हुए कहा, “हाँ अब भी इस मंदिर में दलित नहीं आ सकते हैं, पर उनके पास भी मंदिर है जो उनके घरों के पास है।”

मैंने भी मंदिर के बाहर जूते पहने, “यार तू कह रहा था कि तेरी दोस्ती बड़े जाटों से है। कौन है वो जो तेरी उम्र का है या तेरे से बड़ा है?”

“अरे रघुवीर है मेरे साथ पढ़ा है, मेरी ही उम्र का है। तो आज पार्टी मेरी तरफ से कहीं अच्छी जगह करते हैं।”

“ठीक है पार्टी की जगह उसके खेत में भट्ठे पर है, पर उसके साथ एक लड़का और आएगा।”

गाँव घूमकर हम सड़क पर आ गए। मैंने सत्ते से कहा, “क्या अब चाचा-चाची भैंस नहीं रखते हैं?” मैंने इसलिए पूछा की वो कल ज्वार लाया था पर मुझे सारे घर में भैस या गाय नहीं देखी थी।

“रखते हैं, मैं कल उनके लिए ही तो ज्वार लाया था।”

“पर कहाँ पर है भैंस रखने की जगह?”

“प्लॉट में है जहाँ हम घूमा करते थे पहले वहीं पर।”

तभी सत्ते ने कहा, “यार तूने मेरी भाईली तो देखी नहीं।” भाईली का नाम सुनकर मैं हैरान रह गया ये सोचते हुए की ये क्या बला है।

“ये भाईली क्या होती है?”

“गर्लफ्रेंड, जिसे हम भाईली कहते हैं। चले क्या वहाँ?”

“कहाँ रहती है तेरी ये भाईली?”

“पास के ही गाँव मिडकोला में। मेरी ही कक्षा में पढ़ती थी जब हम स्कूल में थे।”

“ठीक है मिला देना।”

“चलो अभी चलते हैं। मैं घर से तुम्हारी बुलेट ले आता हूँ।”

“क्या मेरी? अपनी ले आ।”

“अरे बुलेट से छाप अच्छी पड़ेगी।”

“ठीक है।”

वो फिर चला गया और दस मिनट में मेरी बुलेट लेकर वापस आ गया। हम मिडकोला के लिए चल दिए। उसने बुलेट को गाँव के बाहर लगाई और अपनी भाईली या गर्लफ्रेंड को फोन करने लगा। कुछ ही देर में उसकी भाईली सामने थी। उसने मुझे देखते हुए कहा, “ये शहरी कबूतर कौन है?”

“ये मेरा भाई है, ताऊ का लड़का। यहाँ गाँव में कुछ काम से आया है।”

उसने

मेरे से हाथ मिलाया। ये देखकर मैं हैरान रह गया कि गाँव की लड़कियाँ भी लड़कों से हाथ मिलाती थी। मैंने पूछा, “आपका नाम क्या है?”

“नीतू, और तुमारा?”

“मेरा नाम राघव है।”

“कहाँ रहते हो?”

“दिल्ली में महरौली।”

वो बहुत गोरी लड़की थी पर उसके बाल भूरे थे। उसने सूट-सलवार पहना था। सूट घुटने से ऊपर था। मैंने सत्ते से कहा, “तुम इनसे बातें करो, मैं सड़क तक घूम आता हूँ।”

गाँव के बाहर बहुत-सी दुकानें थी। वहीं पर एक चाय की टपरी पर मैं चाय पीने लगा और गाँव के बारे में सोचने लगा कि यहाँ कितना बदलाव आ गया है। पहले गाँव भर में एक ही गाड़ी हुआ करती थी, वो भी बड़े जाटों के घर पर, वो भी छोटी ही जेन। पर अब गागोली गाँव में ही हर चौथे-पाँचवें घर में गाड़ी थी। कैसे गाँव में पहले कच्ची सड़कें हुआ करती थी, पर अब तो गाँव में सीवर भी है। अब देश तरक्की पर है। अब देश में बदलाव देखा जा सकता है।

अध्याय-13

गाँव की सड़कों पर कारखाने लग गए थे। गुरुग्राम शहर पास में ही था। शायद देशभर में शहर और बढ़ जाएँ तो विकास तेज हो जाए। सोचने लगा कि देश की सरकार अभी तक सारे देश में बिजली-पानी-सड़क तक मौलिक सुविधाएँ भी नहीं दे पाई है आजादी के इतने सालों में। सत्ते से पता चला कि गाँव में खेतों की कीमतें भी बढ़ गई हैं। वो जमाना चला गया जब एक एकड़ भूमि एक-दो लाख रुपये में मिल जाती थी। अब इनकी कीमत बीस गुना तक बढ़ गई है। जहाँ गाँव भर में बड़े जाटों का दबदबा था, वहाँ अब दलित भी अपनी जगह बना रहे थे।

शाम के पाँच बज गए थे। मैंने सत्ते को फोन किया कि घर चलना चाहिए तो उसने कहा, "यार नीतू तुझसे एक बार और मिलना चाहती है।"

मैंने कहा, "फिर कभी मिल लेंगे, अभी घर चलते हैं।"

सत्ते दस मिनट में मेरे पास आ गया। हम घर की तरफ चल दिए।

"यार आज पार्टी भी करनी है।" सत्ते ने कहा।

"मैं तो भूल ही गया था। रास्ते से पार्टी का सामान भी लेना पड़ेगा।"

फिर हमने शराब की बोतल और अपने लिए एक बीयर भी ली। हमें खाने में चिकन भी खरीदना था। वो रास्ते की दुकान से चिकन भी खरीद लाया। मैंने पूछा, "चिकन कौन बनाएगा?"

"रघुवीर का नौकर है, वो इसे बना देगा।"

"पर पार्टी कहाँ है?"

"रघुवीर के खेत में एक कमरा है वहीं पर।"

हम दोनों रघुवीर के खेतों में पहुँच गए। वहाँ उसका नौकर था जो हमें देखते ही समझ गया कि आज पार्टी है। सत्ते ने उसे चिकन बनाने को कहा। सत्ते ने रघुवीर को फोन किया तो उसने आठ बजे तक खेत में पहुँचने को कहा।

हम खेतों में घूमने लगे। कोई आठ बजे खेत में एक फॉर्चुनर एस.यू.वी. गाड़ी आकर रुकी। उस में से दो लड़के उतरे हम भी उनके पास गए सत्ते ने हमें मिलवाया। ये मेरा भाई जो दिल्ली में रहता है और ये रघुवीर और विजय, रघुवीर ने कहा, "तू तो अकेला था, तेरा भाई कहाँ से आ गया?"

"ये मेरे ताऊ जी का लड़का है। ये किसी काम से यहाँ आया है।"

रघुवीर ने मेरे से हाथ मिलाया। चिकन भी बनकर तैयार था। रघुवीर ने अपने नौकर से बाहर कुर्सी- मेज निकालने को कहा।

“इस दारू को किसके साथ पिएँगे? नमकीन लाए हो?” रघुवीर ने पूछा।

सत्ते ने कुछ पैकेट नमकीन पॉलीथिन से निकाले। मैंने आज पहली बार बीयर शुरू की। रघुवीर ने पहले पैक के साथ ही कहा, “तुम्हारे पापा शहर में क्या काम करते हैं?”

“वो सरकारी नौकरी करते हैं। और तुम्हारे पापा का क्या काम है?” बस एक भट्ठा है ईंट का, पर काम में मंदी है अभी।”

तभी रघुवीर का दोस्त विजय ने कहा, “सुना है शहर में सब की गर्लफ्रेंड होती है? तुम्हारी भी होगी?”

“नहीं। बस एक लड़की से दोस्ती है, पर सत्ते की गर्लफ्रेंड है। उसी को इस बारे मेज्यादा पता है।”

उसने लगभग मुँह बनाते और हँसते हुए कहा “इस घोंचू की कौन भाईली है?”

मैंने कहा, “साथ के गाँव में नीतू नाम की लड़की है वो इस की भाईली है। मैंने उसे आज पहली बार देखा है।” रघुवीर हँसने लगा, “अरे वो भी क्या भाईली है, उसके तो आशिकों की लंबी लाइन है बड़ी चालू लड़की है। दो महीने से ज्यादा किसी की भाईली नहीं रही है वो। मेरी भी बोल-चाल है उससे।”

मैंने बीयर का आखिरी गिलास खत्म किया। मेरे दिमाग में बीयर चढ़ी थी। मैंने सत्ते की सारी बात नशे के कारण बताई। तब तक सत्ते भी नशे में हो गया।

मैंने अपने काम की बात अब रघुवीर से की, “यार यहाँ कोई जे.सी.बी. वाला है?”

“हाँ मैं कई जे.सी.बी. वालों को जानता हूँ। पर काम क्या है?”

“बस खेत में एक पाँच-छह फीट का तालाब बनाना है।”

“पर किसलिए।” रघुवीर ने पूछा।

“मैं वहाँ मछली पालना चाहता हूँ। अगर जानते हो तो कल मिलवा दो।”

रघुवीर ने कहा, “ठीक है, कल वो तुम्हारे घर आ जाएगा। खेत की मिट्टी का क्या करोगे? अगर बेचनी है तो मैं खरीद लूँगा।” वो मिट्टी इसलिए लेना चाहता था इस मिट्टी से वो अपने भट्ठे में ईंट बनाता।

“मिट्टी तो बेचनी ही पड़ेगी। दो एकड़ के तालाब के लिए काफी मिट्टी निकलेगी।”

“विजय, जरा जे.सी.बी. वाले का नंबर तो मिला, आज ही उससे बात करते हैं।”

विजय ने जे.सी.बी. वाले का नंबर मिलाया और रघुवीर से बात करवाई। उसने सुबह ही गाँव आने की हाँ कर दी। हमने फिर खाना खाया।

रात में हम दस बजे सत्ते के घर पहुँचे। जैसे ही हम घर में गए चाची ने दरवाजा खोला। सत्ते के पैर शराब के नशे के कारण लड़खड़ा रहे थे। चाची ने उसे एक थप्पड़ जड़ दिया।

“पीकर आया है?”

“नहीं रघुवीर ने पिला दी थी इसलिए।” सत्ते भी थप्पड़ पड़ते ही हिल गया। पर नशे के कारण उसे कोई फर्क नहीं पड़ा । वो लड़खड़ाते हुए घर में घुस गया।

“खाना खाना है या वो भी नहीं?”

“नहीं खाना है।”

असलियत में चाची मुझे दिखाने के लिए नाटक कर रही थी क्योंकि वो कभी सत्ते से पूछती ही नहीं थी।

रात भर मैं बिस्तर में पड़ा-पड़ा नशे को महसूस करता रहा। जब बीयर का नशा उतरा तभी मैं सो पाया और सुबह देर तक सोता रहा। चाची ने मुझे ग्यारह बजे चाय दी जब मैं उठा।

“बेटा ये मछली पालन का क्या काम है मुझे भी समझा। मैं भी मछली पालन के लिए सत्ते से कह रही थी। इस काम को करने में कितने पैसे लगते हैं?”

“चाची ज्यादा नहीं बस सात-आठ लाख ही लगते हैं।” शायद चाची इतने पैसे किसी काम पर लगाना नहीं चाहती थी उन्हें डर था की उनकी पूजी डूब ना जाए अगर काम धन्धा ना चले तो।

“क्या मछली पालने और उनके मरने से जीव हत्या का पाप नहीं लगता है?”

“अरे चाची दुनिया बदल गई है और आप पाप-पुण्य पर अटकी पड़ी हैं।”

चाय पीते ही मेरे फोन की घंटी बजी। फोन रघुवीर का था। उसने जे.सी.बी. वाले को मिलने को कहा। मैंने कहा, “उसे घर भेज दो मैं घर पर ही हूँ।”

कुछ ही देर मेजे.सी.बी. वाला घर आ गया। मैंने उसे दो एकड़ में पाँच से छह फीट गहरी खुदाई के लिए कहा। उसने दो लाख रुपए में हाँ कर दी। उसने ये काम कल से करने के लिए कहा और पचास हजार रुपए भी कल ही एडवान्स देने को कहा। बाकी के पैसे उसने काम के बाद मेलेने को कहा। मैंने भी डील पक्की कर

दी। वो जब चला गया तो मैंने कोलकाता फोन लगाया। वहाँ मछली का व्यापारी था जिससे मैंने मांगुर मछली के बीज मँगाए। उसने दस दिन में मांगुर मछली के बीज पहुँचाने के लिए हाँ कर दी।

अगले ही दिन से खुदाई का काम चल पड़ा। मैंने खुदाई की मिट्टी बेचने के लिए भी रघुवीर से बात कर ली थी जिससे मुझे अच्छे पैसे मिट्टी के मिल गए। तालाब को खोदने में दस दिन लगे। मैंने इसी बीच खेत में चदरों से ढ़का एक हॉल भी बनवाना शुरू कर दिया था।

मैं मछली पालन के साथ गाय भी पालना चाहता था। मैंने एक आदमी को भी नौकरी पर रखा। वो इसलिए कि गाय के गोबर हटाने, चारा करने के साथ दूध भी दूह सके। मैंने गोबर को डालने के लिए दस फीट का गड्ढा भी खुदवाया। गोबर से खेत में खाद का काम करना था। दस दिन में खुदाई का काम हो गया। इसी बीच मैंने सत्ते के साथ कुछ विदेशी गाय भी देखी। मैं पाँच गाय खरीदना चाहता था। मैं इन से दूध बेचकर मुनाफा कमाना चाहता था। मैंने सबसे अच्छी गाय खरीदी। एक चारे के बोंगे के साथ ज्वार भी खरीदी। गाय को खिलाने के लिए खल बाट की भी इसी दौरान खरीदारी की। मैंने गाँव वालों से गाय की जानकारी भी इकट्ठी की कि इनका रख-रखाव कैसे करते हैं। ये जानकारी बहुत जरूरी थी जिसे वही बता सकते थे। मैं मवेशियों के बारे में कुछ नहीं जानता था। जैसे ही तालाब बना मैंने खेत में ट्यूबवेल भी लगवाया तालाब में पानी भरने के लिए। वैसे खेत में ट्यूबवेल तो था पर वो चाचा के खेत में था।

मैंने ट्यूबवेल से तालाब में पानी भरना भी शुरू कर दिया। अब तक गाय के लिए हॉल भी बन गया था और गाय भी उस में थी। मैंने सत्ते से पूछ कर दूध खरीदने वाली कंपनी से भी बात कर ली थी जो सुबह आकर दूध भी ले जाती थी। दूध के पैसे मुझे हफ्ते में मिलने लगे। मैंने गाँव में भी सभी घरों में बात पहुँचाई कि वे यहाँ से दूध बेच सकते हैं। गाय से मुझे हर रोज पचास लीटर दूध बेचने को मिलता था। सुबह एक टैंकर आकर मेरा दूध ले जाता था एक लीटर दूध के मुझे पैंतीस रुपये मिलते थे। फिर मछली का बीज भी कोलकाता से आ गया। मैंने मछली का चारा भी एक स्थानीय बाजार से खरीदा। गाँव में अब मेरी नई तरह की खेती की बातें होने लगी थी। कोई कहता लड़का समझदार है, हम सब ये नहीं कर पाए पर इसने कर दिखाया। कुछ ये भी कहते कि गाय तो ठीक है पर ये मछली पालन से जीव हत्या होगी। सबके अपने-अपने तर्क थे। कुछ लोग तो अपना दूध भी बेचने मेरे

खेतों में भी आने लगे थे जिसके उन्हें अच्छे पैसे मिलते थे। उन लोगों में एक लड़की भी आती थी जो दलित थी, नाम था पूनम। वो कोई बीस लीटर दूध बेचती थी। वो इसे साइकिल से लाती थी। मेरी ही हम उम्र की रही होगी। लोगों से पता चला कि पूनम के पिता गुजर गए थे और उसकी माँ गूँगी-बहरी थी। इसलिए पूनम अपने दो भाई और बहन को पालने के लिए शादी नहीं करना चाहती थी। लड़की के विचारों से मैं बहुत प्रभावित था।

मेरे चाचा-चाची मेरे काम से चिढ़े हुए थे। वे नहीं चाहते थे कि मेरा काम सफल हो। वे तो चाहते थे कि मैं साल-छह महीने में यहाँ से चला जाऊँ। नहीं तो वे एक अच्छी आमदनी खो देते। वे नहीं चाहते थे कि उन्हें मेरे खेतों की फसल से हाथ धोना पड़े।

एक दिन चाची ने मुझे कहा, “राघव हम तुम्हें नहीं रख सकते हैं। आज की महँगाई में हमारा ही पेट भर जाए वही काफी है।”

मैंने कहा, “चाची मैं महीने दो महीने में अपना ठिकाना बना लूँगा।”

“बेटा एक बात और करनी थी, तुमने खेतों की हमारी फसल के पैसे भी देने हैं।”

मैंने उन्हें इस बात की भी हाँ कर दी। मैंने खेतों में दो कमरे और एक बरांडा भी बनवाना शुरू कर दिया। अभी तक मुझे दूध से अच्छी आमदनी भी होने लगी थी। एक दिन सत्ते को भी पता चल गया कि उसकी माँ मुझे नहीं रखना चाहती है। इसलिए उनमें मेरी गैरमौजूदगी में तूतू-मैंमैं हुई थी। पर वो इस बारे में कुछ नहीं कर पाया था। मैं भी चाची के पास नहीं रहना चाहता था एक तो वे खाने में नमक-मिर्च ज्यादा डालती थी और खाने में कुछ भी स्वाद नहीं रहता था। वे जान-बूझकर रोज ही दाल बनाती थी जिससे मैं गाँव से निकल जाऊँ। जब उन्होंने देखा कि मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा तो उन्होंने मुझे घर से निकल जाने को कहा।

मैंने भी जब खेत में दो कमरे और बरांडा बन गया तो चाचा का घर छोड़ दिया। मैंने अपने खेतों में सब्जी उगा ली थी। मेरे पास दूध की भी कमी नहीं थी, बाकी का खाना बनाने का सामान मैंने सोहना से खरीदा। खाना बनाने के लिए मैंने ब्लैक से रसोई गैस सिलेंडर भी ले लिया। बुरे वक्त में फँस जाने पर मैं खाना बनाने का काम भी जानता था, जिसे मेरी माँ ने सिखाया था।

अध्याय-14

इतने काम में मैं मशगूल हो गया की निधि को बिल्कुल भूल ही गया था। मुझे उस की याद ही नहीं थी कि मैं उससे प्यार भी करता हूँ। ये मेरी जिन्दगी में पहली बार हुआ था जब से मैं उसके प्यार में पड़ा था। वैसे मेरे दर्द में कमी आई थी या वक्त ने मेरे दर्द पर मरहम लगा दिया था। वंश को भी मैं भूल गया था। एक दिन इसी बीच निधि का भी फोन मेरे पास आया। उसने कहा, "राघव गाँव में ही बस गए हो क्या? कभी अपने घर भी आ जाया करो।"

"मेरा अभी गाँव में काम है, कुछ दिन बाद आ जाऊँगा। और बता क्या चल रहा है?"

"कुछ नहीं बस पढ़ाई मेलगी हूँ। सुना है तुमने गाँव में मछली पालन और दूध की डेयरी का काम कर लिया है?"

"हाँ कुछ समय से ही।"

"राघव मैं तुझे कल तुम्हारे गाँव में मिलने आ रही हूँ।"उससे बाते करके मैं फिर से उसी झमेले में पड़ गया। मुझे अब वंश भी याद आ गया।

"आ जाना, मेरा गाँव सोहने के पास है। क्या तेरा दोस्त वंश भी आएगा?"

"नहीं हमारी बोलचाल खत्म हो गई है।"

"तुम्हारा ब्रेकअप हो गया है पर किस बात की लड़ाई है?" मैं ये ब्रेकअप की बात इसलिए कर रहा था की वंश और उसके बीच अब क्या पक रहा है देखना चाहता था।

"मेरा ब्रेकअप... मैं उसे प्यार नहीं करती जो ब्रेकअप होता।"

"अच्छा तो फिर तुम्हारे बीच क्या था?" अब मैंने उससे सीधी बात की पर लड़कियों से बात निकलवानी आसान चीज नहीं होती है।

"छोड़ो उसे तुम ये बताओ तुम्हारे गाँव का नाम क्या है? और रास्ता भी बताओ।"

"गाँव का नाम है गागोली, ये सोहने से दाईं तरफ के दूसरे कट पर है।"

"ठीक है।"

"अमित को भी ले आना, बहुत समय हो गया है उससे मिले।"

"वो क्या करेगा आके? हमारे बीच कबाब में हड्डी बनेगा।"

मैंने कहा, "किस टाइम आएगी कल?"

"मैं शाम को पहुँचूँगी।"

“और बता, वंश से बोलचाल कैसे बंद हो गई है तुम्हारी?”

“अरे दोस्ती थी पर वो कुछ और ही चाहता था इसलिए।” मैं थोड़ा मुस्कराया सोचने लगा लड़कियाँ कितनी एक्पर्ट होती है बात छुपाने में ।

“घर पर क्या बोलकर आओगी कि कहाँ जा रही है?”

“कुछ नहीं बोलूँगी। जब गाँव से वापस घर जाऊँगी तब कोई बहाना बना लूँगी।”

“अकेली ही आओगी कि कोई और भी होगा?”

“अमित होगा, तुमने ही कहा था कि उसे ले आना। अच्छा अब फोन रखती हूँ।”

उसने फोन काट दिया। मैं अपने काम मेलग गया। मैं बहुत खुश था कि निधि ने वंश से बात करनी बंद कर दी थी। मैंने अपने लिए चाय भी बनाई। जब मैं बहुत खुश होता हूँ तो अक्सर चाय बनाता था। उसके बाद मैं गाँव की दुकान से नमकीन और बिस्कुट लेकर आया निधि के लिए। मवेशियों को चारा डालने का समय भी हो गया था। मैंने चारा डालने के लिए रहीम को बोल दिया। रहीम मेरे लिए काम करता था।

अगले दिन शाम का समय था। कोई पाँच बजे थे कि अमित और निधि मेरे खेत में अपनी गाड़ी से आए। निधि ने आते ही कहा, “यार अपनी मछलियाँ दिखाओ।”

“पानी में काई की परत जमी है, इसलिए मछलियाँ नहीं दिखेगी।”

“तो मछलियों के पकोड़े ही बनवा दो।”

“नहीं अभी मछलियाँ बड़ी नहीं हैं। तुम तब तक उनका मजा नहीं ले सकते हो जब तक वे बड़ी नहीं हो जाती।” असलियत ये थी की मैं मछली पकड़ना जानता ही नहीं था इसलिए मैंने बहाना बनाया था

मैंने रहीम को आवाज लगाई तो रहीम वहाँ हाजिर हो गया, “हाँ भईया।”

“दो गिलास दूध में शक्कर मिलाकर लाना।”

वो खेत में बने कमरे में गया और दो गिलास दूध गर्म करने लगा।

“यार पढ़ाई कैसी चल रही है?” मैंने निधि से पूछा।

“हाँ ठीक चल रही है।”

“और बता इतनी दूर मुझसे मिलने की वजह क्या है?” मुझे अब भी विश्वास नहीं था वो वंश को छोड़ कर मेरे और बस मेरे से मिलने आई है।

“वजह क्या, मैं तेरी बचपन की गर्लफ्रेंड हूँ इसलिए आई हूँ।”

“मैं सब समझता हूँ तुम क्यों आई हो।”

“क्या समझते हो सच में? मैं तुम से मिलने आई हूँ।”

तभी अमित ने बातों में घुसते हुए कहा, “यार राघव ये तुझ से मिलने आई है, बात को समझो।”

“ठीक है पर...” और मैं कुछ कहते हुए रुक गया। मुझे निधि की हर बात से चिढ़ होने लगी थी।

“क्या पर? मैं तेरे से मिलने नहीं आ सकती हूँ? तुम्हें क्या हो गया जो छह-सात महीने से हर बात के उल्टे-सीधे जवाब मिल रहे हैं?”

“कुछ नहीं लगता है, राघव काम के कारण चिड़चिड़ा हो गया है।” अमित ने माहौल को शांत करने के लिए ऐसा कहा। रहीम दो गिलास दूध लेकर आ गया।

“मलाई डाली है इसमें?” मैंने रहीम से पूछा।

“हाँ भईया।”

“ठीक है गाय का दूध दुहना शुरू करो।” वो चला गया।

निधि ने कहा, “दूध तो बिलकुल हैवी है, बहुत अच्छा लग रहा है।” निधि सच कह रही थी यहाँ का दूध बड़ा ही हैव्वी और मजेदार होता है।

“बिल्कुल प्योर है। चलो तुम्हें डेयरी दिखाता हूँ।” और मैं वहाँ से खड़ा हो गया। मैंने उन्हें गाय के बैठने की जगह दिखाई जिस जगह की रहीम ने अच्छे-से सफाई कर रखी थी। फिर भी गोबर की गंध आ रही थी। निधि ने अपनी नाक रुमाल से ढक ली थी।

“एक बात बताओ राघव, एक गाय कितना दूध एक दिन में देती है? और ये कितने का बिकता है?”

“एक गाय दस से बारह लीटर दूध देती है और ये पैंतीस रुपये में एक लीटर बिकता है। रोज के हिसाब से ये दो हजार का तो बिकता ही है।”

तभी अमित ने कहा, “यानी साठ हजार का तो बिक ही जाता होगा महीने में। मैं ठीक कह रहा हूँ न।”

“हाँ तुम सही हो अमित। लेकिन इनको खिलाने के लिए चारा भी खरीदना पड़ता है जिसका अच्छा-खासा खर्च हो जाता है। मैंने इन्हें खिलाने के लिए दो लाख की ज्वार की फसल खरीदी है। साथ में खल बाट के साथ पचास हजार रुपये का भूसा भी। इसके साथ ही ये कामगार महीने में सात हजार मासिक वेतन भी लेता है।

इन गाय से मासिक पैंतीस हजार ही बचता है। सभी को मिलाकर साल में चार लाख ही गाय से कमा सकते हैं।"

अमित और निधि ने ये बड़े ध्यान से सुना। मुझे ये सब बताने में बड़ा ही अच्छा लग रहा था।

"भाई तुम तो इस काम को एक कंपनी की तरह चला रहे हो। मुझे तेरे जैसे भाई पर गर्व है।"

निधि ने कहा, "और मछलियाँ कितने की बिकेंगी ये नहीं बताया।"

मैंने एक मुस्कान से कहा, "शायद पाँच-छह लाख से लेकर अच्छी फसल हुई तो आठ लाख रुपये तक।"

यह सुनकर निधि बहुत खुश हुई और मेरे पास आकर मेरे गाल पर एक चुंबन देने की कोशिश की, पर मैं पहले ही पीछे हट गया। तब उसने मुँह बना लिया। अमित ने ये देखकर मेरी तरफ आँख मारी।

"यार राघव, जो खेत बचे हैं उस में क्या बोया है?" मैंने मुस्कराते हुए कहा

"मैंने छह एकड़ जमीन जो पापा की बची है उसे किसानों को पट्टे पर खेती के लिए दे दी है जिसके बदले में वे हर एकड़ के तीस हजार रुपये मुझे साल में देंगे। साथ में खेत से चारा ठीक कीमत पर मुझे देंगे।"

अमित ने मेरी तरफ देखकर एक मुस्कान दी तो निधि ने मेरी तरफ देखकर ताली बजाई।

"यार तुम तो मंजे हुए खिलाड़ी हो मैं तुम से इंप्रेस हूँ।" निधि ने कहा।

शाम के छह बज चुके थे। मैंने निधि से कहा, "तुम्हें अब घर के लिए निकल लेना चाहिए नहीं तो रात हो जाएगी।"

"अरे राघव अभी दिन छुपने में दो घंटे हैं और हम कार से आए हैं, चले जाएँगे कौन-सी देर हो रही है।" निधि ने कहा। "यार चलो गाँव में घूमने चलते हैं मैंने कभी गाँव को पास से नहीं देखा है। शाम भी हो गई है फिजा में गर्मी भी नहीं है।"

"यार तेरे कपड़े देखकर सारा गाँव डर जाएगा।" मैंने कहा तो निधि हँसने लगी। उसने जींस और टॉप पहना था। उसकी जींस कई जगह से फटी थी। साथ मेजींस कुछ ज्यादा ही टाइट थी। ऊपर उसने गुलाबी टॉप पहना था जो कमर से ऊँचा था। उसकी कमर साफ दिख रही थी जो बहुत पतली थी। नाभि पर एक बाली टँकी थी। कान में बड़े-बड़े छल्लेनुमा टॉप्स थे। बाल उसने खुले छोड़ रखे थे

जिसकी वजह से वो कुछ ज्यादा ही सुंदर दिख रही थी। मैं जानता था, गाँव में आदमी हो या औरत लोग उसे घूर-घूरकर देखेंगे।

"भाई मुझे सत्ते भाई से भी मिलना है, अरसा हो गया उसे मिले।" अमित ने कहा

"वो इस टाइम नहीं मिलेगा। वो किसी दोस्त के साथ शराब पी रहा होगा।"

"ठीक है चाचा-चाची से ही मिल लूँगा।"

"मैं उनके घर नहीं जाऊँगा, तुम्हें घर छोड़ दूँगा।"

"ठीक है।" अमित ने कहा। हम खेतों से गाँव की तरफ चल दिए। चाचा का घर गाँव के शुरू में ही था। अमित वहीं रह गया। मैं और निधि गाँव में घूमने लगे। गाँव के लोग निधि को घूर रहे थे। निधि भी मजाकिया तौर पर घूरते लोगों को गौर से देख रही थी। निधि ने कहा, "गाँव तो बिल्कुल साफ-सुथरा है। यहाँ पर गंदगी नाम की चीज नहीं है। शांति तो ऐसी है जैसे स्वर्ग में हूँ।"

सच में गाँव साफ-सुथरा था। बीच-बीच में ट्रैक्टर की आवाज आ रही थी जिससे लोग खेतों से घर आ रहे थे। गलियों में भी ज्यादा लोग नहीं थे। घरों से धुआँ निकल रहा था। गाँव में सब घरों में औरतें खाना बना रही थी। गाँव में खाना जल्दी बन जाता है, वजह थी बिजली रात में कभी भी चली जाती है।

निधि ने कहा, "गाँव में बहुत से मंदिर है।"

"हाँ गाँव मेलोग ज्यादा धार्मिक होते हैं। एक वजह यह है कि यहाँ दलितों के अलग मंदिर और ऊँची जाति के अलग मंदिर हैं। गाँव में छोटी जाति के लोग ऊँची जाति के मंदिर में नहीं जाते हैं। अगर ऐसा कोई करे तो उसकी अच्छी पिटाई गाँव के लोग करते हैं।"

निधि हँसने लगी, "क्या दलितों के अलग भगवान होते हैं और ऊँची जाति के अलग?"

मैं भी सुनकर हँसने लगा। फिर मैं गंभीर हो गया, "तुम सच कहती हो अलग ही होते होंगे। लोग कितने सेल्फिश होते हैं। ये लोग गाय या भैंस का दूध तो पी सकते हैं पर दलित को छूने भर से हाथ धोते हैं। गाँव में कुछ तो छूने भर से नहाते हैं पर गाय भैंस का गोबर उठाने में उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है। दलित की भैंस खरीदकर उसका दूध पी सकते हैं उनका गोबर उठा सकते हैं पर उन्हें अपना बर्तन तक छूने नहीं देते। ऐसा होता है यहाँ। इंसान को इंसान ना समझकर उसे

जानवर से भी नीचे समझा जाता है।" हँसते हुए मैंने कहा, "चलो इस दुकान से बंटा पीते हैं।"

"ये बंटा क्या है?"

"कंचे वाली कोल्डड्रिंक।"

"वाउ! वो मिलती है यहाँ? काफी समय से नहीं पी है मैंने।"

हम एक दुकान पर गए। मैंने दस के दो नोट दुकानदार को दिए और कहा, "दो बंटा दो।"

पैसे लेकर वो निधि को निहारता रहा। ये सब देखकर निधि हँसने लगी। दुकानदार ये सब देखकर शरमा कर दूसरी तरफ देखने लगा। बंटा पीकर हम खेतों की तरफ चल दिए।

रास्ते में हमने अमित को बुलाया। मैंने निधि से कहा, "अब तुम्हें घर के लिए निकलना चाहिए।"

"अभी नहीं... अभी तो बस आठ ही बजे हैं। कुछ टाइम बाद चलेंगे।"

हम खेतों में घर पर थे तभी बिजली चली गई। चारों तरफ अँधेरा था। निधि आसमान को देखने लगी, "यार राघव कितने तारे निकले हैं जैसे गाँव में ही रहते हों और गाँव के भोलेपन में घुल-मिल गए हों। मैंने इतने तारे पहली बार देखे हैं। तारों को देखकर लगता है ये गाँव में किसी की बारात लेकर आए हों।"

सुनकर अमित हँसने लगा। निधि ने उसके सर पर हाथ मारा। रहीम ने आवाज लगाई, "भईया खाना तैयार है।"

"क्या बनाया है खाने में?"

"आलू गोभी की सब्जी और बाजरे की रोटी।"

मैंने अमित और निधि को खाना खाने को कहा। रहीम की बीवी ने तीन थाली में खाना परोस दिया। हम सब हाथ धोकर खाना खाने लगे। बाजरे की रोटी वो चूल्हे से गरम-गरम सेंक कर देती रही जिस पर बहुत-सा मक्खन लगा था। सबने खाने की बड़ाई की। निधि ने इतना अच्छा खाना बनाने पर रहीम की बीवी को सौ रुपये दिए। हम फिर खेत में खाट पर बैठ गए।

कुछ ही देर हुई थी बैठे हुए कि एक फॉर्च्यूनर एस.यू.वी गाड़ी आकर हमारे पास रुकी। गाड़ी में रघुवीर और सत्ते थे। मेरे पास निधि को देखकर दोनों ढीले हो गए। मैंने निधि से कहा, "ये है सत्ते मेरा भाई और ये है रघुवीर मेरा दोस्त।"

गाँव वालों की तरह ही रघुवीर भी निधि को देखकर देखता ही रह गया। तो निधि की हँसी छूट गई। रघुवीर भी थोड़ा शरमा गया। मैंने कहा, “क्या हाल है तुम लोगों के?”

रघुवीर शरमाते हुए बोला, “अगले हफ्ते मेरी सगाई है, तुम्हें न्योता देने आया हूँ। पार्टी का जो अगली बारह तारीख को है।”

मैंने कहा, “ये तो बहुत खुशी की बात है।”

रघुवीर ने दो कार्ड निकाले। एक पर मेरा नाम लिखा था तो दूसरे पर कुछ नहीं लिखा था। आप भी अगर पार्टी में आओगी तो मुझे बड़ी खुशी होगी। आपका नाम क्या है कार्ड पर लिखना है। निधि ने अपना नाम बता दिया।

“क्या आप भी महरौली में रहती हैं?”

“हाँ मैं राघव के घर के ही पास रहती हूँ और मैं राघव की मंगेतर हूँ।” निधि ने एक हल्की-सी मुस्कान दी। मैं निधि की बात पर थोड़ा-सा गुस्सा हुआ।

“इसे मजाक करने की आदत है, मैं इसका मंगेतर नहीं हूँ।” इस पर निधि ने सड़ा-सा मुँह बनाया, “मैं तेरी गर्लफ्रेंड तो हूँ।”

मैंने कहा, “ऐसा मजाक करना ठीक नहीं।” माहौल अब गर्म हो गया। निधि ने अमित से कहा, “जब हम तुम्हारे कुछ नहीं हैं तो हम यहाँ फालतू में हैं। चलो अमित घर चलते हैं।” उसने कार में बैठते हुए कार को तेजी में धूल उड़ाते हुए मोड़ा और तेजी में वहाँ से चली गई। मुझे भी अब अपनी गलती का एहसास हुआ शायद मुझे उससे नरमी से पेश आना था पर मुँह से निकले वाक्य वापस नहीं हो सकते थे पर मुझे पता था की निधि ये सब दो ही दिन में भूल जाएगी।

रघुवीर सोचता रहा कि ऐसा क्या हो गया कि लड़की मुँह बनाकर ऐसे चली गई। रघुवीर बस मेरी तरफ देखता रहा। मैंने कहा, “रघुवीर कहाँ खोया है?”

“यार बड़ी ही सुंदर है तेरी गर्लफन्ड" सत्ते ने कहा। “भाई इतनी सुंदर लड़की को क्यों रुला दिया?”

“वो रो नहीं रही थी, बस भड़क गई थी।”

“मैंने देखा वो रो रही थी। उसकी आँखों में आँसू आ गए थे।”

तभी रघुवीर ने कहा, “अभी चलता हूँ। मुझे और भी न्योता देने हैं।” वो मेरे गले मिला और चला गया।

मैंने वहीं खाट पर सोने की कोशिश की। पर मुझे नींद नहीं आई। मैं निधि पर उलझा था कि क्या मैंने उसका अपमान कर दिया या फालतू में ही मुँह बनाकर

चली गई। कभी मुझे वंश का वो चेहरा याद आ जाता जब उसने कहा था कि तुम्हारी गर्लफ्रेंड मेरे नीचे दो बार लेट चुकी है। मैं अंदर तक उसकी शरारती मुस्कान से जल रहा था। जब सोया तो सपने भी ऐसे ही आए। मैं सुबह पाँच बजे तक सोता रहा। मुझे सुबह रहीम ने उठाया, "भईया पाँच बजे हैं, दूध वाली गाड़ी आने वाली है।"

"तुमने दूध दुह लिया?"

"हाँ जी भईया।"

फिर मैंने मुँह धोया। तब तक दूध की गाड़ी आ गई। मैंने दूध को नपवाया। कुछ और लोग भी गाँव के थे जिन्होंने नाप कर गाड़ी वाले को दूध दिया।

गाड़ी वाले ने दूध की पर्ची सब को दी जिस में दूध कितना है और पैसे लिखे थे। तभी सुबह–सुबह ही मेरे फोन पर घंटी बजी। फोन निधि का था।

"हेलो, आज सुबह–सुबह ही उठ गई?"

"मैं सोई ही कब थी जो उठ जाती।"

"सोई क्यों नहीं?" मैंने अन्जान बनते हुए कहा

"तुम्हारे कारण। किस बात का बदला तुम मेरे से ले रहे हो? मैं समझ नहीं पा रही हूँ तुम्हारी बातों से। कल मैं सारी रात नहीं सोई। अगर तुम्हें लगता है मेरा अफेयर वंश से है तो मैं साफ कह रही हूँ हमारे बीच कुछ नहीं है। मैं तो उसे केवल दोस्त मानती थी। जब से तुम्हारा व्यवहार मेरे लिए बदला है, मैंने वो दोस्ती भी तोड़ दी है। प्लीज मेरे से तुम ठीक से पेश आया करो। मैं प्यार करती हूँ तुमसे, पर तुम मेरी कहीं भी बेइज्जती कर देते हो।"

ऐसे में मैंने बात को दबाने के लिए पहले से ही अपनी तैयारी कर रखी थी मैं जानता था की वो ये सब मुझे जरूर कहेगी इसलिए मैंने जवाब पहले ही तैयार कर रखा था।

"यार तुम समझती नहीं हो। जहाँ तुम आई थी वो शहर नहीं गाँव है जो तुम्हारी बातों पर ध्यान नहीं देते। लोग यहाँ ये सब छुपकर ही करते हैं। जहाँ तक तुम्हारे प्यार की बात है, मेरे मन में तुम्हारे लिए बस प्यार की फीलिंग की जगह गहरे दोस्त की ही फीलिंग है। मैं तुम्हें धोखे में नहीं रखना चाहता हूँ।" मैं उसे समझाना चाहता था कि वो ज्लदी से मेरे से दूरी बना ले पर मैं जानता था निधि को ये सब समझने में शायद बहुत समय लगने वाला है।

निधि हँसने लगी, “मुझे माफ करो, कोई ऐसा कर सकता है कि कुछ टाइम कोई किसी से प्यार करे और फिर वो उसका दोस्त बन जाए?”

मैंने कहा, “ऐसा ही है, मैं प्यार नहीं करता हूँ तुम से।” पर वो मानने वाली ही नहीं थी मैं पहले ही जानता था वो मुझ से टूटकर जो प्यार करती थी पर जबसे उसकी दोस्ती वंश से खत्म हुई थी वो शायद मुझसे और भी प्यार करने लगी थी।

“मैं नहीं मान सकती कि प्यार दोस्ती में बदल सकता है, हाँ धीरे-धीरे दोस्ती प्यार बन सकती है। और सुनो मैं रघुवीर की सगाई मैं जरूर आऊँगी चाहे तुम भले मना करो और मैं ये भी जानती हूँ कि तुम महरौली में क्यों नहीं आना चाहते हो ताकि मेरे से ना मिलना पड़े। पर ये प्यार है, ऐसे ही पीछा नहीं छोड़ेगा। तुम प्यार को पकड़ो और दोस्ती को छोड़ो। मैं जानती हूँ प्यार दोस्ती नहीं बन सकता है। वो प्यार ही रहेगा।” फिर निधि हँसने लगी। उसने फोन काट दिया। शायद निधि प्यार को मेरे से ज्यादा जानती थी। वो सच कह रही थी प्यार करके आदमी किसी को दोस्त या दोस्ती नहीं कर सकता था।

सात दिन बाद रघुवीर की सगाई थी। मैं जानता था निधि सगाई मेजरूर आएगी इसलिए मैं नए कपड़े खरीदने गुरुग्राम गया। वहाँ से मैंने सफेद कुर्ता-पाजामा खरीदा। कपड़े तो मैंने इसलिए खरीदे थे कि मैं निधि से कम ना लगूँ और निधि पर भी अपना इंप्रेशन डालना चाहता था। मैंने कुर्ते-पाजामें के साथ जूतियाँ भी खरीदी। जिस दिन की सगाई थी उस दिन निधि का फोन आया। उसने पूछा, “मैं गाँव में किसी को नहीं जानती हूँ, तुम कब पार्टी में पहुँचोगे?”

मैंने कहा, “शाम आठ बजे मैं पार्टी मैं पहुँच जाऊँगा।”

शाम को आठ बजे मैं रघुवीर की पार्टी को निकला। ये पार्टी रघुवीर की कोठी में थी। यह पार्टी दो भागों में थी। एक तो सब लोगों के लिए एक एकड़ में टेंट लगा था और दूसरे मैं खास लोगों के लिए कोठी में खाने का इंतजाम था जहाँ पर कई नेता भी आए थे।मेरा कार्ड कोठी का था। मैं वहाँ पहुँचा। घर के लॉन में एक जगुआर और बी.एम.डब्लू. कार खड़ी थी जिसे लड़की वालों ने दहेज में दी थी। जगुआर रघुवीर की थी और बी.एम.डब्लू. उसके पिताजी को लड़की वालों ने उपहार में दी थी। अभी वहाँ पहुँचा ही था की निधि का फोन आ गया। निधि ने पूछा कि कहाँ आना है? तो मैंने उसे रघुवीर के घर का रास्ता बताया। कुछ देर में निधि मेरे पास पहुँच गई।

हम रघुवीर के घर में घुस गए। निधि ने कहा, “बहुत मालदार लोगों की पार्टी है। सगाई मेजगुआर मिली है।”

मैंने कहा, “मालदार पार्टी तो है ही।”

हम तब तक हॉल में थे हॉल काफी बड़ा था। यहाँ कोई दो सौ लोग थे जिस में हरियाणा सरकार के कई मंत्री भी थे। हॉल काफी सुंदर दिख रहा था। यहाँ आदमी की संख्या महिलाओं से ज्यादा थी। सभी महिलाएँ सूट या साड़ी में थी। सगाई हो चुकी थी। अब पार्टी चल रही थी। निधि ने जींस और टॉप पहना था। ये उसके नॉर्मल कपड़े थे। जींस घुटने से फटी थी और टॉप से उसकी पतली कमर दिख रही थी। बाल भी हमेशा की तरह ही खुले थे। मेरे हिसाब से वो पार्टी में सबसे सुंदर लग रही थी। उसने चेहरे पर कोई मेकप नहीं कर रखा था। जैसे ही पुरुषों ने हमें देखा सबकी नजर हम पर थी। सच में निधि सुंदर दिख रही थी। मैंने सत्ते को ढूँढना शुरू किया, पर वो मुझे नहीं दिखा।

कुछ देर में हमारे पास वेटर शराब लेकर आया। निधि ने एक छोटा पैक स्कॉच का लिया और वो उसे पीने लगी। एक और वेटर हमारे पास आया। उसके पास स्नैक्स थे। मैंने भी स्नैक्स लिए और एक वेटर से बीयर मँगवाई। वो बार से एक हनी कैन का प्वॉइंट लेकर आ गया।

मैंने देखा सत्ते और रघुवीर दोस्तों के साथ शराब पी रहे थे। मैंने निधि से कहा, “वो रहा रघुवीर, चलो उसे विश करते हैं।”

हम दोनों उसकी तरफ चल दिए। मैंने उसके पास जाकर कहा, “बहुत-बहुत बधाई!”

निधि ने भी उसे एक गुलदस्ता दिया तो रघुवीर ने धन्यवाद कहा। सत्ते ने भी हमसे हाथ मिलाया। रघुवीर ने अपने दोस्तों से कहा, “ये है राघव और ये इनकी गर्लफ्रेंड निधि।” सब दोस्त हमारी तरफ देखने लगे। एक लड़के ने कहा, “ये तो यहाँ के नहीं लगते हैं, कहाँ के हैं आप?” मैं बोलना ही चाह रहा था कि निधि ने कहा, “हम महरौली, दिल्ली से हैं पर राघव यहाँ छह महीने से रह रहा है।”

सभी तरफ से निगाहें निधि पर थी। ऐसे में निधि कंफर्टेबल महसूस नहीं कर रही थी। तब रघुवीर ने कहा, “आप जैसी लड़की इन लोगों को फिल्मों में ही देखने को मिलती है, इन लोगों से डरो नहीं। आप दोनों पार्टी का मजा लो।” निधि थोड़ी मुस्कुराई।

असलियत में निधि को ये सब नॉर्मल ही लगता था। पर उसकी परेशानी औरतों से थी जो उसे देखकर बातें कर रही थी। निधि फिर भी अपने को नॉर्मल ही दिखने की कोशिश कर रही थी। कुछ देर में रघुवीर भी फ्री हो गया। उसने अपने परिवार से हमें मिलाया। पहले उसने अपनी बहन से मिलवाया, उसके बाद अपने मम्मी पापा से। परिवार के सभी लोग मिलनसार थे। रघुवीर की मम्मी बोली, "तुम्हारी जोड़ी बहुत अच्छी लगती है।" रघुवीर की बहन ने भी निधि की तारीफ की।

रात दस बजे हमने खाना खाया फिर हम वहाँ से निकल लिए। निधि ने कहा, "सब लोगों को हमारी जोड़ी अच्छी लगी, तुम क्या कहोगे?"

मैंने कहा, "अभी तो तुम घर जाओ, नहीं तो रात में पुलिस बैरिकेट लगाकर जगह-जगह चेकिंग करती मिलेगी। तुमने शराब पी रखी है।"

"तो क्या हुआ? पुलिस तो सौ दो सौ में मान जाती है।" और वो हँसने लगी। मैंने निधि को गाड़ी तक छोड़ा। वो जब महरौली के लिए चली गई तब मैं भी अपने खेतों की तरफ निकल लिया। मुझे भी नशा हो रहा था। मैंने भी अपने ठिकाने पर जाकर चाय पी, फिर मैं सो गया।

अध्याय-15

मुझे गागोली गाँव में रहते हुए आठ साल हो गए थे। मैंने इस बीच अपने काम में कई उतार-चढ़ाव देखे पर मैं सफल रहा। जब से मैंने काम शुरू किया था तब से बीस-तीस गुना तरक्की कर ली थी। अब मैं पच्चीस-छब्बीस साल का नवयुवक हो गया था। मेरे पास पाँच गाय से बढ़कर सौ गाय हो गईं। साथ में मैंने सत्ते के साथ मिलकर एक डेयरी ईढरी गाँव में भी लगाई जिस में सौ गायें थी। मैंने इस टाइम में कुछ एकड़ भूमि भी खरीदी। अब इससे आगे का प्लान भी बना लिया।

निधि के साथ प्यार के सफर में अब उतना प्यार नहीं रह गया था जितना उस समय में था। निधि मेरे पास एक साल से नहीं आई थी। वो भी महरौली से वसंत कुंज मेजाकर रहने लगी थी। पर उसका कपड़ों का शोरूम अब भी महरौली में ही था। उसकी पढ़ाई भी बंद थी। इसलिए वो अब अपने पापा का हाथ बटाने के लिए शोरूम में बैठती थी। उसके पिता अब बुजुर्ग से लगने लगे थे।

अब भी वो हर चार-पाँच घंटे में मेरे पास फोन कर देती थी। मैं अब भी उससे प्यार तो करता था, पर शादी उससे नहीं करना चाहता था। वजह था वंश। इतने साल बाद भी वंश के कहे वाक्य मुझे चुभन और दर्द दे रहे थे। निधि की बेवफाई मेरे लिए इसका कारण थी। पर मैं नहीं जानता था मेरे और निधि के रिश्ते की गहराई कितनी है। इन आठ सालों में सत्ते की भी शादी हो गई थी रघुवीर की ही तरह। पर सत्ते चाचा-चाची की तरह ही खुश नहीं था क्योंकि वो दहेज में जो गाड़ी चाहता था वो उसे नहीं मिली थी। ऐसा नहीं था कि वो गाड़ी नहीं खरीद सकता था। वो तो महँगी गाड़ी इसलिए चाहता था जिससे उसका रुतबा गाँव में और दोस्तों में बढ़ सके।

अभी तो मैं गाँव में ही एक बंगला बनवा रहा था और उसी में उलझा था। ये तीन मंजिला मकान था जिसमें मैं अपने परिवार को लाना चाहता था जो मेरे खेत में ही रोड पर था। मैं चाहता तो पास के शहर गुरुग्राम या सोहना या पलवल में इस बंगले को बनवा सकता था पर काम के लिए मुझे गागुली गाँव में ही आना पड़ता। साथ में मैं इस गाँव से बहुत जुड़ा हुआ था। बंगले का काम तेजी से चल रहा था। वैसे तो काम लगभग खत्म था पर अभी इटालियन मार्बल टेल्स इंटीरियर का काम ही रह गया था। बंगले के इंटीरियर के लिए मैंने एक शहर के ही इंटीरियर डिजाइनर को पकड़ा था।

इसी बीच मेरे पापा की रिटायरमेंट पार्टी भी थी। भाई ने सुबह–सुबह ही फोन करके बता दिया था। "भाई, सुबह ही गाँव से निकल जाना, मैं पार्टी के सारे काम नहीं देख सकता।" अमित ने कहा।

"ठीक है, पर मैं कल से पहले नहीं पहुँच सकता हूँ क्योंकि मकान का भी काम चल रहा है। लेकिन मैं देव और सोनू से तुम्हारी मदद के लिए कह देता हूँ। प्लीज मैं आज नहीं आ सकता हूँ।" और मैंने फोन काट दिया। मैंने फिर देव और सोनू को फोन करके अमित का काम बाँटने को कहा। मैं फिर मकान का जो काम चल रहा था, उसी के लिए इटालियन मार्बल लेने गुरुग्राम चला गया। आते-आते ही शाम हो गई। मैं अब थक गया था और मुझे अगले दिन महरौली भी जाना था। इसलिए मैंने रहीम को कल का काम समझाया और सोने चला गया। सुबह मुझे पता चला कि एक गाय को बच्चा होने वाला है। इसलिए जानवरों के डॉक्टर को बुलाया गया। डिलीवरी आसानी से हो गई थी पर दोपहर हो गई। मैं महरौली के लिए निकल ही रहा था कि तभी मकान के इन्टीरियर वाले ने कुछ फीट मार्बल और लाने को कहा। इसलिए ही शाम तक मैं बिजी रहा।

रात को मैंने अमित से बिजी रहने की सारी बात बताई। अमित ने कहा, "ठीक है। देव और सोनू ने सारा काम सँभाल लिया। पर कल वक्त से आ जाना।" मैंने फोन रखा ही था कि चाची का फोन आ गया। उन्होंने कहा, "बेटा तुम जा ही रहे हो तो हमें भी साथ ले जाना, अलग से पेट्रोल नहीं लगेगा।"

"ठीक है, पर मैं सुबह छह बजे ही चला जाऊँगा। आप सब समय पर तैयार हो जाना।"

मैं सुबह सारे काम निपटाकर तैयार था।मेरे साथ सत्ते, चाचा-चाची और उनकी बहूँ थी। इसके अलावा रघुवीर भी गाँव से जाना था, शाम को उसे अलग से अपनी गाड़ी मेजाना था। वैसे तो मेरी गाड़ी सेवन सीटर थी पर चाची ने कहा कि गाड़ी में तो हम फँसकर ही आएँगे, जिसका मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

जैसे ही हम रोड पर पहुँचे तो चाची ने कहा, "बेटा तेरी संगत के कारण ही सत्ते इतना बदल गया है। अब तो डेयरी से चार पैसे भी कमा लेता है। नहीं तो अब तक शराब में ही डूबा रहता था।" मैंने हँसते हुए सोचा की शराब तो सत्ते अब भी पीता है। मैं कुछ और भी सोच रहा था पर चाची ने अगली बात छेड़ दी।

"सुना है बेटा तू कोई दूध का प्लांट लगाना चाहता है? बेटा इस सत्ते को भी अपनी कंपनी में हिस्सेदार बना लेना।" मैंने कोई जवाब नहीं दिया। तो चाची ने

कहा, “क्या बेटा कुछ हिस्सेदारी नहीं दोगे?”

“हाँ चाची मेरी कंपनी में सत्ते कुछ हिस्सेदार तो रहेगा ही, पर मेरे अकेले के बस की बात नहीं है। कई करोड़ का काम है। साथ मेलोन भी चाहिए होगा और रघुवीर ने भी इस प्रोजेक्ट के बारे में कुछ साफ नहीं कहा है। जैसे ही कुछ होगा इस पर काम करेंगे।”

“क्या वो बड़े जाटों का लड़का भी इस में शामिल होगा?”

“हाँ चाची।”

“बेटा बचकर रहना उस लड़के से, देखा नहीं कैसे उसने सत्ते को शराबी बना दिया था।” अक्सर हमारे देश में हर मॉ-बाप अपने बच्चो की गलती को औरों पर मढ़ देते है जैसे उनके बच्चे तो दूध के धुले हो।

“नहीं चाची, सत्ते तो अपने आप ही ज्यादा पीने लगा था। उसकी गलती को औरों पर ना थोपो। और फिर इतने बड़े काम के लिए कोई तो पार्टनर होना चाहिए जो धंधे में पैसे लगा सके। ये काम बच्चों का नहीं है।”

“कहते तो तुम सही हो, जब अपना ही सिक्का खोटा हो तो दूसरे पर इल्जाम नहीं लगाना चाहिए।”

मैंने फिर कुछ नहीं कहा। तभी चाची ने फिर कहा, “राघव, तुम्हारे लिए मेरे पास एक रिश्ता आया है। अगर तुम हाँ कर दो तो आगे बात करें।”

“नहीं चाची, मैं अभी तीन-चार साल शादी नहीं करना चाहता हूँ।”

सत्ते ने बात में घुसते हुए कहा, “भाई की भाईली है, ये उनसे ही शादी करेंगे।” चाची ने मुँह पिचकाते हुए कहा

“हाँ शहर में तो भाईली होती ही है पर भाईली भी कोई अच्छे खानदान की होती है सोचकर ही शादी करना उससे। मैंने भी देखा है उसे बड़े ही फैशन में रहती है। क्या तुम्हारे लिए खाना बनाएगी?” सत्ते फिर से बात में घुसा, “भाई को ये सब अपनी बीवी से कराने की क्या जरूरत है?” सत्ते की बात काटते हुए चाची ने कहा, “जिस लड़की का तुम्हारे लिए रिश्ता आया है, वो लोग एक करोड़ शादी मेलगाएँगे।” सुन कर मेरा पारा बढ गया मैं शादी करके बिकना नहीं चाहता था मैं दहेज के लिए शादी तो हरगिज नहीं कर सकता था।

“वो बात नहीं चाची, मैं सच में अभी शादी नहीं करना चाहता हूँ। और इस बात को यहीं खत्म कर दो।”

"तुम चुप नहीं रह सकती हो? सारे रास्ते टर्र-टर्र करती आ रही हो!" चाचा ने चाची को धमकाते हुए कहा। ये बात उनकी बहूँ भी सुन रही थी जिसकी अब उल्टियाँ लग रही थी तो वो खिड़की से उल्टियाँ करने लगी। मैंने सत्ते से कहा, "कोई गुड न्यूज है क्या जो इन्हें उल्टियाँ लग रही हैं।" और मैं हँसने लगा।

"नहीं भाई, ममता को डीजल की गाड़ियों में उल्टियाँ लग ही जाती हैं।"

"अगर उल्टियाँ नहीं रुक रही हैं तो आप ममता को आगे बैठा सकती हैं।" मैंने चाची को कहा।

"नहीं बेटा, होने दो इसे उल्टियाँ। आगे बैठने से क्या रुक जाएगी इसकी उल्टियाँ?"

"हाँ चाची, आगे बैठने से रुक जाती हैं उल्टियाँ।" पर चाची राजी नहीं हुईं। "गाँव में अपने जेठ के इतने पास कोई बहूँ नहीं बैठती है।" कहकर चाची ने पल्ला झाड़ लिया।

जब तक हम महरौली पहुँचे चाची की चपड़-चपड़ चलती रही। महरौली में गाड़ी मेरे घर तक नहीं पहुँच सकती थी, इसलिए मैंने गाड़ी स्थानीय पार्किंग मेलगाई और चाचा-चाची के परिवार के साथ मैं घर की तरफ चल दिया। रास्ते में बाजार भी पड़ता था। मैं ये सब कई साल बाद देख रहा था। मेरी नजर एक दुकान पर पड़ी। उसमें बैठा आदमी मुझे जाना-पहचाना लगा। सोचता रहा ये कौन है। वो आदमी सर से गंजा था, पेट भी निकला हुआ था। मैं फिर आगे बढ़ गया। मैंने देखा निधि का शोरूम बंद पड़ा था। सोचा निधि तो ब्यूटी पार्लर में तैयार हो रही होगी पर उसके पापा को तो शोरूम में होना चाहिए। सोचते-सोचते मैं घर पहुँच गया।

घर पहुँचा तो वहाँ अव्यवस्था फैली थी। सभी लोग पापा के दफ्तर पहुँचने के लिए तैयार हो रहे थे। निधि भी वहीं कुर्सी पर बैठी थी और मुझे देखकर मुस्कुरा रही थी। पापा ने आज कोट-पैंट पहने थे जो उन पर जँच रहे थे। पर मम्मी तैयार नहीं हो रही थी।

"क्या मम्मी आप पापा के ऑफिस नहीं जाएँगी?" मैंने मम्मी से कहा।

"नहीं बेटा, तुम सब लोग जाओ। यहाँ मेहमानों को भी देखना है।"

"मम्मी मैं देख लेता हूँ मेहमानों को, आप जरूर जाइए।"

तभी पीछे से किसी ने कहा, "आप जरूर जाएँ, ये सब आप राघव पर छोड़ दें।" ये निधि के पापा थे जो मम्मी से कह रहे थे।

काफी ना-नुकर के बाद मम्मी जाने को तैयार हो गई और मैं सोचने लगा निधि के पापा मेरे पापा के साथ उनके ऑफिस जा रहे हैं। मैंने उन दोनों के बीच कभी बातें भी नहीं होती देखी थी पर वे यहाँ आए और काम भी सँभाल रखा था। वैसे तो निधि के पापा जब तक कोई उनके स्टैंडर का ना हो तो वो उससे बात भी नहीं करते थे। उनका आना बड़ा अजीब था।

"क्या निधि, तुम भी पापा के ऑफिस जाओगी?" मैंने ऐसे ही पूछ लिया जिस पर निधि ने कहा, "तुम्हें क्यों जलन हो रही है मैं अगर जा रही हूँ? ये तेरे पापा ही नहीं मेरे अंकल भी हैं।" निधि ने ताना मारते हुए कहा। मैंने फिर उससे कोई मजाक नहीं किया।

मैं फिर मेहमानों को चाय-पानी पूछने लगा। उसके बाद जहाँ पार्टी होनी थी वहाँ के लिए चल दिया। ये पार्टी वसंत कुंज के कम्युनिटी सेंटर में थी। मैंने सोनू, देव और भोपले को फोन करके वहाँ बुला लिया। देव तो वहीं था। सोनू और भोपला टेंट लगवाने के काम से टेन्ट हाउस गए थे। जैसे ही मैं टेंट में पहुँचा तो देव ने मुझे गले लगा लिया। मेरी आँखों में आँसू आ गए। बहुत वक्त से हम नहीं मिले थे।

"देव और बता क्या हाल है?" मैंने आँसू पोंछते हुए पूछा।

"कुछ खास नहीं।"

"आजकल क्या कर रहा है?"

"एक कंपनी में काम कर रहा हूँ जो गुरुग्राम में है।" तभी भोपला और सोनू भी वहाँ आ गए। भोपला मेरे पास भागता हुआ गले मिला तो सोनू ने भी गले लग कर कहा, "यार कितने दिनों बाद मिले हो। क्या काम दोस्तों से भी जरूरी हो गया है? सुना है बहुत पैसा कमा लिया है तुमने और गाँव में बंगला बना रहा है। अमित ने बताया। सच में तरक्की तो इसे कहते हैं। लेकिन यार पैसा क्या दोस्ती खरीद सकता है?"

"फुरसत नहीं मिलती है काम से और निधि से दूर रहने के लिए भी मैं नहीं आता हूँ यहाँ। मैंने सोनू से कहा। "मैंने अभी देखा बाजार में वहाँ वंश की दुकान नहीं थी और दुकान में अजीब-सा जाना पहचाना चेहरे का आदमी बैठा था जिसकी परचून की दुकान थी।"

वे तीनों सुनकर हँसने लगे सभी पेट पकड़कर इतना हँसे कि पूछो मत। मैंने कई बार पूछा, "भाई क्या बात है जो तुम इतना हँस रहे हो?" कई बार पूछने पर देव ने सबको चुप कराया।

"यार वो जाना-पहचाना चेहरा वंश का था। कई साल पहले वंश के पिता की मृत्यु हो गई थी। उसके बाद तीनों भाइयों की नहीं बनी तो वे अलग हो गए और तीनों अपना-अपना काम करने लगे।"

"तो क्या वंश रणजी की टीम से बाहर हो गया?" मैंने उत्सुकता से पूछा।

"तू पूरी बात तो सुन। वंश के हिस्से जो शोरूम आया था तीनों में से उसका काम उसने वर्करों पर छोड़ दिया। लेकिन जूतों का वो शोरूम घाटे में आ गया। लड़कों की तनख्वाह भी नहीं निकल पा रही थी। ऊपर से वंश भी खराब खेल के कारण रणजी से बाहर हो गया था वंश की गाड़ियाँ तक बिक गईं थी खाने तक के लाले कुछ दिन में पड़ गए थे। उसकी मर्सिडीज कार भी बिक गई। हारकर वंश ने किसी पंडित के कहने पर जूतों की दुकान की जगह पर परचून की दुकान कर ली। और उसकी शादी भी गरीब परिवार में बड़ी मुश्किल से हुई।" सुन कर मुझे झटका लगा मैं उस से इतनी नफरत तो नहीं करता था जो उसका ये हाल हो जाए। पर बातें सुन कर मुझे मजा जरूर आया।

"क्या उसने निधि से शादी के लिए नहीं कहा?"

"निधि के पापा के पास उसने अपने भाई के जरिये रिश्ता भेजा पर निधि के पापा ने रिश्ता यह कहकर ठुकरा दिया की लड़का पसंद नहीं है। शायद इसका कारण यह था कि वंश बहुत बदनाम था और निधि भी उससे शादी नहीं करना चाहती थी। उसकी शादी भी बड़ी मुश्किल से हुई थी। निधि जैसी भी है, वो तेरे से प्यार करती है।" भोपले ने कहा, जिसका मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

"पर वंश तोंदू और गंजा कैसे हो गया?" यह सुनकर सबने ठहाका लगाया। शाम तक हम काम के साथ हँसते रहे तो कभी हम स्कूल की बात करते रहे और इतने साल ना मिलने का गम बाँटते रहे। शाम को अमित का फोन आया। उसने कहा कि पापा आ रहे हैं। वो रोड से भीड़ के साथ आएँगे तुम सब भी चले आना। पापा के साथ ऑफिस के लोग भी होंगे।

ऑफिस के लोग ऑफिस की पार्टी के बाद यहाँ आ रहे थे। सभी लोग पापा की गाड़ी के आगे नाच रहे थे। वे कुछ टाइम बाद टेंट में पहुँचे। जैसे ही वे पार्टी में आए वे शराब पर टूट पड़े। गुप्ता अंकल भी पापा के साथ ही थे। निधि भी अमित के साथ बीयर पी रही थी एक गाड़ी में। महरौली के स्थानीय एम.एल.ए. भी पार्टी में आए थे। रघुवीर भी आया था और उसने पापा को फूलों की माला पहनाई।

हम चारों दोस्तों ने रात बारह बजे तक किसी ने शराब पी तो किसी ने बीयर पी।

सत्ते भी रघुवीर के साथ शराब पीने लगा। पर मैंने बीयर या शराब नहीं ली।

रात को जब पार्टी समाप्ति पर थी तो मेरे चाचा मेरे पास आए और कहा, “शहर के लोग कैसे खुले में शराब पी लेते हैं पर हमारे गाँव में अगर कोई ऐसे शराब पिए तो हमारे बुजुर्ग हाय-तौबा मचा देते हैं।” मैंने इस बात पर सिर्फ हाँ कहा।

“जानते हो, जो रिश्ता तुम्हारे लिए आया है, बड़े ही पैसे वाले लोग हैं। अगर तुम अपने बिजनेस में पैसा लगाना चाहते हो तो वे लगा देंगे। लड़की भी बहुत खूबसूरत है। ये निधि भी क्या चीज है उसके सामने पानी भरती लगेगी। गाड़ी भी रघुवीर जैसी ही एक करोड़ की देंगे। कहो तो आगे बात चलाऊँ?”

“नहीं चाचा, मैं शादी में दहेज नहीं चाहता हूँ और मैं अभी शादी भी नहीं करना चाहता हूँ।” पर चाचा के पास इस बात का भी तर्क था मैं नहीं जानता था वे इस शादी के लिए क्यों इतने उत्सुक थे।

“ये कोई दहेज नहीं है, वे ये सब अपनी मर्जी से दे रहे हैं। दहेज तो वो होता है जो लड़के वाले माँगें। वे तो अपनी खुशी से ये सब दे रहे हैं। तेरे जैसे आम लड़के को इससे अच्छा क्या मिलेगा? लड़की सुंदर है सुशील है बेटा, ऐसी मोटी पार्टी तुझे नहीं मिल सकती है। लड़की का फोटो तुम्हें मोबाइल में दिखाते हैं।” और चाचा जेब से मोबाइल निकालने लगे।

“चाचा इस बारे में मेरे पापा से बात करना।” कहकर मैं वहाँ से खिसकने का बहाना ढूँढने लगा। “चाचा, अमित का फोन आ रहा है। मैं अभी आता हूँ।” कहकर मैं खिसक लिया।

देर रात शराब चलती रही। बारह बजे के बाद ही लोग अपने घर जाने लगे पार्टी से। पापा-मम्मी, चाचा-चाची, अमित, सत्ते हमारे घर लौट आए पर मैं रात को बीयर पीने लगा। इसलिए अभी तक बीयर नहीं पी थी कि कोई काम ना पड़ जाए। जैसे ही मैंने बीयर खोली वहाँ निधि भी आ गई।

“यार अकेले-अकेले पियोगे? चलो गाड़ी में बैठकर पीते हैं।” निधि ने मुझे कहा। पर मुझे लगा वो बहुत पी चुकी थी। फिर भी मैंने उसे पीने को ना नहीं किया।

“ठीक है चलो। पर तूने तो पहले ही पी रखी है और क्या पियोगी?” हम तब तक गाड़ी में बैठ गए थे।

अक्टूबर का महीना था। हल्की-हल्की ठंड थी। मैंने निधि से कहा, "गाड़ी का ऐसी चलाऊँ या ऐसे ही बैठना है?"

"ठंड है, ऐसे ही रहने दो।" मैंने दो गिलास में बीयर उडेल दी और चियर्स करके हम दोनों पीने लगे। निधि ने कहा, "यार राघव, हम कहीं घूमने चलते हैं जहाँ हम कुछ वक्त अकेले में बिताएँ।" मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। "कहाँ खोए हो, क्या नशा हो गया?"

"चलेंगे थोड़े समय के बाद। अभी मेरे पास फुरसत नहीं है। गाँव में मकान का काम चल रहा है।"

"एक हफ्ता काम नहीं रोक सकते?"

"ठीक है, पर जाना कहाँ है?"

"मैं तुम्हारे साथ गोवा जाना चाहती हूँ।"

"पर हम वहाँ अकेले बोर नहीं हो जाएँगे? कहो तो सत्ते और रघुवीर से भी पूछ लेते हैं?"

"पर हम वहाँ जोड़े के रूप मेजाएँगे। वे हमारे बीच क्या करेंगे?" मैं सोचने लगा ये जोड़े का क्या मतलब है मैंने सोचा शायद प्यार करने वाले जोड़ो की तरह।

मैंने कहा "वे भी अपनी पत्नियों के साथ जाएँगे।"

"तो फिर ठीक है।"

"पर तेरे घर वाले ऐसे तुम्हें मेरे साथ जाने देंगे?"

"मैं कोई बहाना बना लूँगी।" मैं सोचने लगा हाय ये लड़कियो के बहाने किसी को भी इन के बहानो पर शक नहीं होता अगर लड़का हो तो अभीभावक यही सोचते लड़का कहीं बिगड़ तो नहीं गया पर लड़कियों की हर बात उन्हें सच लगती है।

मेरे हाथ की बीयर खत्म हो गई थी तो निधि ने बीयर का तीसरा गिलास भर दिया। मेरी आँख भारी होने लगी थी। मैंने जल्दी से बीयर का गिलास खाली किया। गाड़ी की फ्रंट सीट पर मैं आँख बंद करके लेट गया। तभी मुझे एहसास हुआ कि निधि मेरे पास अपने होंठ लाई और मेरे होंठों को चूमने लगी। रात के दो बज रहे थे। वो मेरे पास ही सो गई। सुबह चार बजे निधि ने मुझे उठाया। मैं जल्दी से उठ गया और गाड़ी से बाहर निकला। उस समय टेंट का सामान जा रहा था। निधि भी गाड़ी से बाहर आ गई। मैंने हलवाई के पास आकर देखा तो वहाँ एक बड़े भगोने में

चाय बन रही थी। ये उन लोगों के लिए थी जो वहाँ काम कर रहे थे। मैंने निधि से कहा, “चाय पीनी है?”

उसने हाँ कहा तो मैंने एक वेटर से कहा, “दो कप चाय हमें भी दे देना।” फिर मैंने निधि से कहा, “बीयर की वजह से हैंग ओवर हो रहा है।”

“मुझे भी हो रहा है।”

तभी रघुवीर भी वहाँ आ गया। निधि ने रघुवीर से पूछा कि चाय पीनी है? तो उसने भी हाँ कर दिया। कुछ देर हम बातें करते रहे। तभी निधि ने रघुवीर से गोवा जाने के बारे में पूछा। वो फौरन मान गया। इस तरह कार्यक्रम बना दीपावली के बाद नवंबर में गोवा चलने का। सत्ते को भी मुझे जाने के लिए तैयार कर लेना था। सारी बात कर लेने के बाद रघुवीर गाँव के लिए निकल गया। मैं भी अपने घर आ गया। सुबह के छह बजे थे। मुझे गाँव भी लौटना था।

घर पर सब लोग जाग रहे थे। मुझे पता चला कि मेरी शादी की बात की जा रही थी। चाचा पापा से कह रहे थे, “भाई साहब राघव का एक रिश्ता मेरे पास आया है बड़े ही नेक लोग हैं। खाते-पीते घर के हैं और लड़की भी सुंदर है। आप कहें तो आगे बात चलाऊँ?”

“पहले राघव से ही पूछ ले कि वो शादी करना चाहता है भी नहीं।”चाचा ने मुँह बनाते हुए कहा “बच्चों से क्या पूछना? मैंने भी तो सत्ते से पूछे बगैर ही उसका रिश्ता कर दिया था। आप जानते नहीं हैं, होडल के कितने जाने-माने लोग हैं। साथ ही लड़की का चाचा एम.एल.ए. हैं नूह से।”

“लड़की कितनी पढ़ी है?” पापा ने चाचा से पूछा।अब चाचा को सुन कर साँप सूँघ गया वे ये बात छुपाना चाहते थे पर फिर भी उन्होंने कहा

“पढ़ी तो दसवीं तक ही है पर बहूँ के रूप में देखने-दिखाने लायक है।”

“हमारे राघव की शादी की बात कहीं और चल रही है, इस रिश्ते को आप अभी रहने दे।”

चाची ने कहा, “भाई साहब, शादी में वे अस्सी लाख की गाड़ी दे रहे हैं।” पापा को अब गुस्सा आ गया लगता था वे भी मुझे बिकता नहीं देख सकते थे वे दहेज के बिलकुल मेरी तरह ही खिलाफ थे पर उन्होंने संयम बरता। और कहा

“बहन हमारा लड़का तो चार-पाँच करोड़ की गाड़ी पर भी हाँ नहीं करने वाला है। आप रहने दो, उस लड़की की बात किसी और घर चलाओ।” इतना

सुनकर चाचा-चाची के मुँह सिल गए। मैंने भी उनसे इस बारे में बात नहीं की और गाँव जाने के लिए तैयार होने लगा। मैंने चाचा से भी तैयार होने को कह दिया।

असलियत में चाचा-चाची का इस रिश्ते को करवाने का कारण था। उन्हें बिचौलिए के तौर पर पैसे मिल रहे थे। ये बात सत्ते को भी पता नहीं थी पर पापा के ना कर देने से बात खत्म हो गई।

कुछ देर बाद मैं गाँव के लिए निकल गया। सारे रास्ते चाची चुप ही रहीं। मैं शांति से गाड़ी चलाता रहा। गाँव पहुँचकर मैं जो मकान बनवा रहा था, उसका सामान खरीदने चला गया। मैंने आकर इंटीरियर डिजाइनर से पूछा कि काम में अब कितना समय लगना था और क्या मैं एक हफ्ते के लिए गोवा जा सकता था, तो उसने कहा कि कुछ सामान की खरीदारी के बाद जा सकते हो।

अध्याय-16

गोवा जाने में दो दिन थे। मैंने गोवा जाने से पहले मकान के लिए जरूरी सामान की खरीदारी कर ली थी और अपनी पैकिंग भी की थी। सत्ते और ममता ने भी जरूरी काम के साथ पैकिंग की। रघुवीर और उसकी बीवी भी तैयारी कर रहे थे।

दो दिन के बाद हम रघुवीर के ड्राइवर के साथ इंदिरा गाँधी एयरपोर्ट के लिए निकले। फ्लाइट की टिकट हमारे लिए निधि ने बुक की थी। समझ के बाहर था कि निधि के पापा ने उसको जाने की कैसे हाँ भरी थी।

हम सब एयरपोर्ट पर मिले। निधि ने सबसे पूछा, "सब अपनी आईडी लाए हैं न?" तो सभी ने हाँ कर दी। हमारी फ्लाइट सुबह दस बजे की थी। अभी एक घंटा बाकी था। हमने एयरपोर्ट से बोर्डिंग कार्ड लिया फिर हम एक सीट पर बैठ गए।

रघुवीर और सत्ते की बीवी हमसे बातें कम कर रही थी। दोनों ने सूट पहन रखा था, एक ने गुलाबी तो दूसरी ने पीला। सर पे चुन्नी डालकर दोनों बैठी थी। निधि ने दोनों के पल्लू सर से हटा दिए पर सत्ते की बीवी ममता ने फिर से पल्लू सर पर रखने की कोशिश की तो निधि ने कहा, "आप इन मान-मर्यादा को रहने दो।"

ममता ने कहा, "भाई साहब के सामने मैं कैसे रह सकती हूँ?"

"हम मजे करने के लिए आए हैं।" निधि की इस बात पर हम सब हँसने लगे। मैंने ममता और साक्षी से कहा, "आप ऐसे भी रह सकती हैं, मुझे कोई दिक्कत नहीं है।"

निधि ने काली कैपरी पहनी थी। ऊपर उसने नीला टॉप पहना था। गले में उसने एक गोल्ड चेन पहनी थी। बालों की कसकर उसने चुटिया बना रखी थी। चेहरे पर उसने हल्का मेकप कर रखा था। पैरों पर वैक्स करवाया था।

मैंने निधि से कहा, "तुम्हें इन कपड़ों में ठंड नहीं लग रही है?"

"दो घंटे की फ्लाइट के बाद ठंड नहीं रहेगी।" ममता ने कहा।

"क्या गोवा में गर्मी है?"

निधि ने कहा, "हाँ और क्या! तुम गर्म कपड़े तो नहीं लाई हो न?" इस बात पर सब हँसने लगे मैंने कहा, "गोवा में सुबह और शाम को हल्की ठंड इन दिनों में रहती है।"

रघुवीर ने कहा, "किसी को कोल्डड्रिंक चाहिए? मैं लेने जा रहा हूँ।" मैंने और निधि ने हाँ कहा, पर सत्ते और सबने ठंड की वजह से नहीं कहा। तभी अनाउंस

हुआ कि हमारी फ्लाइट जाने को रेडी है। हम फ्लाइट मेजाने के लिए चल दिए। प्लेन में बैठने से पहले हमारी चेकिंग हुई। धीरे-धीरे सब पैसेंजर प्लेन में बैठ गए। कुछ देर एयर होस्टेस ने सुरक्षा उपकरण और सुरक्षा के बारे में बताया। फिर हवाई जहाज उड़ गया। मेरी और निधि की सीट पास-पास थी। मैं पहली बार हवाई जहाज में बैठा था। वैसे निधि के अलावा सभी पहली बार बैठे थे। हम बारह बजे गोवा के एयरपोर्ट पर थे। हमारे होटल की बुकिंग पहले ही निधि ने करवा दी थी। एयरपोर्ट से निकलते ही हमें होटल ले जाने के लिए दो टैक्सी लेने आईं। एक में सत्ते और रघुवीर और उनकी बीवियाँ थी। एक में मैं और निधि थे। हमें दो घंटे में ही टैक्सी ने होटल पहुँचा दिया। होटल मेलड़कों ने सामान हमारे कमरों में रख दिया।

जब मैं रूम की तरफ गया तो हैरान रह गया। यहाँ सिर्फ तीन रूम ही बुक थे एक रघुवीर और साक्षी का था तो दूसरा सत्ते और ममता का था। तीसरे में मैं और निधि रहने थे। मैंने निधि से कहा, “हम दोनों एक ही रूम में कैसे रह सकते हैं?”

“हम जोड़ों के रूप में आए हैं इसलिए हम एक ही रूम में रहेंगे।” अब मेरे समझ में आया उस दिन निधि ने जो कहा था की हम जोड़ो के रूप में वहाँ जाएँगे शायद इस का मतलब था हम शादीशुदा लोगो की तरह एक ही कमरे में रहेंगे।

मैंने ज्यादा बहस उससे नहीं की और मैं रूम में आ गया। रूम को अच्छी तरह से सजाया गया था। रूम की पहली दीवार पर रिबन से आई लव यू लिखा था जिसके चारों तरफ गुब्बारे लगे थे। मैं अंदर गया तो रूम के साथ एक रूम और जुड़ा था। एक में डबल बेड था तो दूसरे में सिंगल बेड था। मैं बाथरूम में गया और हाथ-मुँह धोकर एक हाफ पैंट पहन ली ये सोचते हुए कि मुझे एक ही रूम में निधि से दूरी बनाकर रखनी है। मैं जैसे ही बाथरूम से आया तो निधि ने मुझे गले लगा लिया और बेड पर गिरा दिया। फिर वो दूर हो गई। मैंने निधि से कहा, “दो कप चाय होटल से मँगवा लो।” उसने कहा, “मैं चाय नहीं पिऊँगी, दो कॉफी मँगवाते हैं।”

उसने रूम सर्विस से फोन से ऑर्डर कर दिया। बेड के पास ही एक फ्रिज था जिस में बीयर भरी पड़ी थी। निधि बाथरूम में गई और उसने एक निकर पहन लिया जिससे उसके पैर कुछ ज्यादा ही दिख रहे थे। उसकी कमर पर बाल नाम की चीज नहीं थी। उसकी टाँगें बहुत अच्छी लग रही थी। मैंने सोचा मुझे उसकी टाँगें नहीं देखनी चाहिए।

कुछ देर में दो कॉफी आ गई। ये होटल कैंडोलिम बीच पर था। मुझे निधि ने बताया। हम कुछ ही देर में पैदल ही बीच पर जा सकते थे। हमने जल्दी ही कॉफी खत्म की तो निधि ने कहा, “चलो अब बीच पर जाने की तैयारी करते हैं।” फिर उसने सत्ते और रघुवीर को बीच पर चलने के लिए फोन कर दिया। कुछ ही देर में हम सभी बीच के लिए निकल गए। बीच पर जाते समय हमेलाल रेत मिली। इस तरह की रेत मैंने पहली बार देखी थी। सत्ते और रघुवीर ने लोअर पहने थे। दोनों की ही बीवियों ने सूट पहना था। हम समुद्र के पास थे। मैंने समुद्र पहली बार देखा था। निधि ने सभी को समुद्र मेजाने को कहा। हम सब पानी में चले गए।

हम वहाँ घंटा भर नहाते रहे। सबसे पहले मैं पानी से निकला। मैंने बीच पर ही एक रेस्टोरेंट में बीयर ऑर्डर की। कुछ ही देर में वे पाँचों भी आ गए। निधि ने तीन बीयर मँगवाई जिस में दो सत्ते और रघुवीर की थी और एक निधि की। ममता और साक्षी ने दो जूस ऑर्डर किए। मैंने निधि से कहा, “मैं सिगरेट पी सकता हूँ?” तो उसने हाँ कहा।

एक घंटे में हमने चार बीयर खत्म कर दी। तभी रेस्टोरेंट में एक विदेशी के कहने पर संगीत बजा तो निधि भी डांस करने लगी। हम सब भी नाचने लगे। कई घंटे बाद हम होटल में आ गए। हमने होटल के रेस्टोरेंट में खाना खाया। किसी ने वेज तो किसी ने नॉनवेज।

रात दस बजे हम अपने रूम में थे। निधि ने कहा, “यहाँ कैसीनो भी है क्या हम कुछ खेलने वहाँ जा सकते हैं?”

“ये कैसीनो कहाँ है?”

“यही बागा बीच पर।”

“ठीक है, हम वहाँ खेलने कल जाएँगे।” नशे के कारण मुझे नींद आने लगी और मैं दूसरे कमरे मेजाकर लेट गया। मैं इससे ज्यादा देर जाग नहीं पाया पर निधि तो अब भी एक्टिव थी और फ्रिज से बीयर निकाल कर पी रही थी।

रात को दो बजे मेरी आँख खुली तो देखा निधि और दोनों महिलाएँ बीयर पी रही थी, कमरे की लाइट बंद करके। मैंने जैसे ही देखा तो ममता और साक्षी वहाँ से भाग गईं। मैं उन्हें देखकर हँसने लगा और कमरे का पर्दा लगाकर फिर से सो गया।

रोज की तरह मैं सुबह पाँच बजे उठ गया। मेरी खट-पट से निधि ने कहा, “इतनी जल्दी क्यों उठ गए? कुछ देर शांत रहो मुझे सोना है।” लेकिन मैंने उस पर से कंबल हटा दिया तो उसने मुझे गंदी गाली दी। मैंने भी उसे कमर में एक चपत

लगाई। निधि ने कहा, "राघव, मैंने तुम्हें कभी गाली देते नहीं देखा है, क्या तुमने कभी गाली नहीं दी किसी को?"

"जब मैं दसवी कक्षा में था, मैंने तब से गाली देनी छोड़ दी थी। मैंने दो साल ही गाली बकी थी जीवन में, उसके बाद मुझे गाली देने वालों से नफरत-सी हो गई थी। मैंने फिर उसे कहा, "दो चाय ही ऑर्डर कर दो तब तक।"

"नहीं, मैं तो बीयर पीऊँगी। तुम्हें चाय पीनी है तो पी सकते हो।" उसने बीयर फ्रिज से निकाल ली। मैंने भी उसके साथ बीयर पी। निधि मेरे पास आई और मुझे चूमने लगी। मैंने कुछ देर उसे कुछ नहीं कहा। उसकी टाँगें और कमर मुझे लुभाती रहीं। फिर मैं उससे अलग हो गया।

"क्या मैं सुंदर नहीं हूँ जो तुम दूर हो गए?" ऐसे अजीब सवाल पर मैं क्या जवाब दूँ मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

"ये सब मैं अपनी पत्नी के साथ करूँगा।" मैं नहीं जानता था ऐसे जवाब पर मैंने मधुमक्खी के छत्ते में हाथ डाल दिया था।

"क्या हम आगे शादी नहीं कर रहे हैं?"

"नहीं।" मैंने तपाक से कहा। ये बात वो बरदार्शत नहीं कर सकती थी। तब वो चिल्लाई, "चुप! मैं तेरे साथ इस कमरे में क्यों हूँ? क्या तुम समझ नहीं सकते?"

मैं थोड़ा मुस्कुराया, "छोड़ो इसे, चलो बाहर जाकर कुछ खा लेते हैं।"

"मेरी बात का जवाब दो, हम शादी करेंगे या नहीं?" निधि के चेहरे से लगा वो मुझसे ये नहीं चाहती थी की हम शादी ना करे। उसकी आँखें लाल थी नशे से या गुस्से से मैं नहीं जानता था।

"जब उसका टाइम आएगा तब सोचा जाएगा। तुम क्यों अभी से परेशान हो।"

"तुम मेरी बात का सही से जवाब दो। मैं तेरे लायक नहीं हूँ या तुम्हारी इन भाभियों जैसी नहीं हूँ?"

मैं उसके ये कहते ही उसके होंठों पर टूट पड़ा। मैं समझ नहीं पाया कि मैंने उसे ऐसे क्यों चूमा। लेकिन जल्दी ही मैं फिर उससे दूर हो गया।

निधि ने कहा, "बस हवा टाइट हो गई? इससे आगे बढ़ते नहीं हो। प्यार मुझसे और शादी किसी और से करोगे।"

मैं बोतल में पड़ी कुछ और बीयर पीने लगा। मैंने उससे कहा, "सच पूछो तो मैं तेरे से प्यार नहीं करता।"

"क्या ये सच है? एक बार मेजवाब देना।"

"हाँ सच है।"

निधि मेरे गले लग गई और रोने लगी, "राघव जब से मैंने प्यार को जाना है मैंने सिर्फ तुमसे ही प्यार किया है और तुमने भी मेरे से। तो फिर क्या हो गया जो तुम मेरे से सालों से दूर हो। बताओ मुझे हमारे बचपन के प्यार पे किसने नजर लगा दी?"

मैं उसे वंश के बारे में बताकर शर्मिंदा नहीं करना चाहता था। सच पूछो तो मेरा प्यार बस निधि ही थी, पर मैं सालों से वंश के बारे में सोचकर नहीं सो पाता था। मैं निधि के बारे में भी सोचकर जलने लग जाता था पर आज तक मैंने अपनी जलन किसी को नहीं बताई थी तो निधि को भी बताकर क्या फायदा था। मैंने निधि को कहा, "निधि चुप हो जाओ, मैं तो मजाक कर रहा था।" मैंने जैसे-तैसे उसे चुप कराया। मैंने सोच लिया था कभी और सही, मैं उससे पीछा छुड़ा लूँगा। मैं इससे शादी तो नहीं करने वाला हूँ। कुछ देर मेजब निधि शांत हो गई तो हमने चाय पी लेकिन जब तक निधि मुझे घूर-घूरकर देखती रही। फिर हम बीच के लिए निकल गए।

हमें चार दिन हो गए थे गोवा में। निधि अब भी मेरे से ठीक से बात नहीं कर रही थी पर मैं उससे नॉर्मल ही व्यवहार कर रहा था। हम बागा बीच पर कैसीनो जाने को तैयार हो रहे थे। निधि बाथरूम में थी। मैं कमरे में कपड़े बदल रहा था। निधि दस मिनट में बाथरूम से बाहर आ गई। उसने बाहर आकर बाथरूम का दरवाजा धड़ाम से बंद कर दिया। "तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हो? क्या तुम्हें और कोई लड़की मिल गयी है जिसे मैं जानती हूँ? कोई नहीं होगी मैं जानती हूँ। क्या तुम्हें दहेज चाहिए?" मैंने कभी भी दहेज के लिए शादी करने के बारे में नहीं सोचा था ये बात निधि भी जानती थी पर मैं ये जरूर चाहता था की मैं शादी अपनी मर्जी से ही करूँ अरेन्ज या लव मैरीज।

"ऐसा कुछ नहीं है, मुझे जिंदगी में बहुत कुछ अभी पाना है, अभी इसलिए शादी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता हूँ। मेरे कुछ सपने हैं उन्हें पूरा करना है मुझे।"

" क्या तुम्हारे सपने मेरे नहीं हैं वे अलग कैसे हो सकते हैं। क्या तुम्हें बिल गेट्स बनना है? पैसे कमाने वाली मशीन? क्या यही चाहते हो?"

"ऐसा कुछ नहीं है।"

“तो फिर क्या है जो तुम्हें घर से इतने दूर भी मेरे करीब आने से रोकता है? क्या मैंने कुछ ऐसा कर दिया है? मेरा सुंदर चेहरा तुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर रहा है? मैं बस तेरे लिए सजती हूँ। सोच लो, अगर मेरी शादी किसी और से तुम्हारी बेवकूफी से हो गई तो सारी जिंदगी पछताते रहोगे।”

मैं कहना तो चाहता था ऐसा हो जाए तो बहुत अच्छा हो पर कहा, “हम घूमने आए हैं। तुम अभी से इस बात पर क्यों परेशान हो? एंज्वॉय करो। चलो कैसीनो चलते हैं।”

“मैंने अपने और तुम्हारे लिए ये एक ही रूम लिया है, मैं तुम्हें पाना चाहती हूँ। और तुम मेरे इतने पास होकर भी पास नहीं आते हो।”

असलीयत तो उसके पास ना जाने की ये थी की मैं चाहता था की मैं शादी के बाद ही किसी लड़की के पास जाऊँ बेशक मेरी सोच पुरानी लगे पर मैं ऐसे ही माहौल में रहा था कि मैं सदा पवित्र रहूँ। ये सोच मेरे अन्दर बचपन से ही थी मेरे पेरन्टस के दिये मेरे संस्कार ऐसे ही थे।

मैंने कहा, “अभी दूरी है कुछ समय इस दूरी को और रहने दो।”

“मैं छब्बीस साल की हूँ। मेरे घर वाले ज्यादा समय और मेरी शादी के लिए नहीं रुक सकते हैं।”

“मुझे भी तो अपने घर वालों से शादी के लिए अभी पूछना है। और क्या फर्क पड़ता है हम अलग-अलग शादी कर भी लें तो?” निधि ने सुनते ही झन्नाटेदार थप्पड़ मुझे मारा जिसकी आवाज बहुत तेज थी। वो फिर रोने लगी। मैं सोचने लगा, थप्पड़ का गम मनाऊँ या उसे चुप कराऊँ। मैंने सोचा उसे चुप ही कराना ठीक रहेगा। मैंने जैसे-तैसे उसे मनाया। उसने भी मुझे थप्पड़ मारने के लिए माफी माँगी।

उसने अपनी आँखें धोईं और हम कैसीनो के लिए निकले। रास्ते में मैंने सोचा मुझसे एक साल बड़ी है, थप्पड़ मारा तो क्या हुआ। आखिर मुझे ही तो प्यार करती है।

हम रात ग्यारह बजे कैसीनो पहुँचे। कैसीनो में एक हजार की टिकट के भी हमें अलग से पैसे देने पड़े। मैंने कैसीनो पहली बार देखा था। निधि ने दस हजार के टोकन लिए और वो एक चकरी वाले गेम की ओर बढ़ गई। उसी ने बताया कि कुछ नंबर के ग्रुप पर टोकन लगाने होते हैं, फिर चकरी को घुमाया जाता है। अगर चकरी लगाए हुए ग्रुप पर रुक जाती है किसी एक नंबर पर तो पैसे तिगुने हो जाते

हैं। एक सिंगल नंबर पर भी टोकन मनी लगा सकते हैं और नंबर आ जाए तो पैसे चार गुना हो जाते हैं।

कुछ ही देर में निधि सारे पैसे या टोकन हार गई। तो मैंने उसे दस हजार रुपये और दिए जिसके उसने और टोकन ले लिए। हम वहाँ पर एक ड्रिंक भी ले सकते हैं मैंने अपनी ड्रिंक के साथ निधि की भी ड्रिंक ले ली। मैंने एक औरत को देखा जिसके हाथ में एक सूटकेस था और उसकी आँखें नम थी। लग रहा था रोने ही वाली थी। उसका पति जुआ खेल रहा था। शायद सूटकेस के पैसे हार रहा था। मेरे से ये देखा नहीं जा रहा था पर मैं कर भी क्या सकता था। मैंने निधि को पास बुलाकर ये सब बताया पर उसने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। वो खेल में मगन थी।

निधि खेल में कभी जीतती तो कभी हार जाती। आखिरी में वो सारे टोकन हार गई। हमने वहाँ पर ही खाना खाया जो टिकट के साथ ही शामिल था।

रात को हम किराए की स्कूटी पर होटल के लिए निकले। निधि से मैंने रास्ते में कहा, “वो औरत बहुत रो रही थी।”

निधि ने कहा, “शायद कुछ बेचकर आए होंगे और सब हार गए होंगे। कैसीनो में ये सब करके लोग आते हैं पर अपना सब हार जाते हैं।”

“ मेरी भी समझ में आ गया कि जुआ एक लत है और तुम भी कभी जुआ नहीं खेलोगी।”

“यार कौन-सा रोज खेलती हूँ और कभी पाँच-दस हार भी जाऊँ तो इस में भी मजा है।”

“पाँच-दस नहीं बीस हजार हारी हो।”

“छोड़ो ना यार, कमाते हैं तो कुछ खर्च भी करना चाहिए।”

“तुम्हारे लिए मजा है पर कैसीनो वालों के लिए तो कमाई है। और उनका क्या जो पूरा सूटकेस हार गए?”

लड़ते-झगड़ते हम होटल पहुँच गए। रूम में घुसते ही निधि सो गई। मैं बिस्तर में पड़ा-पड़ा उस औरत और उसके पति के बारे में ही सोचता रहा जो पूरा सूटकेस पैसों का हार गए थे। मुझे नींद नहीं आ रही थी तो मैंने फ्रिज से कोक निकालकर पीने लगा।

सुबह-सुबह ही हमें अगवाडा फोर्ट के लिए निकलना था। मैं अपनी तैयारी कर रहा था। बाथरूम में मैंने क्लीन शेव की, नहाकर बाहर आ गया तो निधि बाथरूम

में चली गई। कोई पंद्रह मिनट बाद वो बाथरूम से निकल कर आई। वो सुंदर लग रही थी। उसने सफेद स्कर्ट के साथ ही टॉप भी सफेद पहना था जिस पर कढ़ाई हो रखी थी। मैं बस देखता ही रह गया।

“क्या देख रहे हो, कोई लड़की नहीं देखी?”

मैंने झट से कहा कि चलो जल्दी करो, चारों हमारा इंतजार कर रहे हैं। उसने हील वाली सैंडिल पहनी और रूम के बाहर आ गई। हम होटल के बाहर पार्किंग में आ गए। सभी अपनी-अपनी स्कूटी पर बैठे और निकल लिए। निधि मेरे से सटकर बैठी थी। उसका सीना मेरे पीठ पर टच हो रहा था। रास्ता ज्यादा लंबा नहीं था। मैंने भी ऐसे में स्कूटी से हल्के-हल्के बर्क कई बार लिए। ये सब हमारे पीछे चल रहा सत्ते देख रहा था। करीब बीस मिनट की ड्राइव के बाद हम अगवाडा फोर्ट पर थे। हमने स्कूटी पार्किंग मेलगाई और किले में चले गए। किला पुर्तगालियों ने नीले या काले पत्थरों से बनाया था। हम किले को देखते हुए ऊपर चढ़ गए। यहाँ ऊपर ज्यादा गर्म महसूस हो रहा था।

मैं सत्ते और रघुवीर आपस में बातें कर रहे थे और पीछे तीनों महिलाएँ। सत्ते और रघुवीर कुछ आगे चले गए तो मैं तीनों महिलाओं की बातें एक दीवार के पीछे से सुनने लगा। ममता ने कहा, “तुम एक ही कमरे में एक-दूसरे से कैसे दूर रहते हो, ऐसा कैसे हो सकता है?”

“क्या मैं तुम्हें झूठ बोल रही हूँ? मैंने उसे छूने भी नहीं दिया।”

“क्या तुम्हारे बीच कुछ भी नहीं हुआ?” साक्षी ने पूछा।

“हाँ, मैंने उसे बस चूमने दिया तीन बार।”

“भईया बहुत सीधे हैं, नहीं तो पता नहीं कोई और हो तो जाने क्या हो।”

“वो तो मैंने उसे सीधा कर रखा है।” निधि की इस बात पर तीनों हँसने लगी।

“पर तेरा मन कैसे मान जाता है अपने होने वाले पति से दूर रहने का?”

निधि शरमा गई। इसी तरह बात करते हुए वे आगे बढ़ गए। मैं भी वहाँ से चुपचाप खिसक लिया।

मैं सत्ते के पास चला गया। सामने ही वहाँ से लाइट हाउस दिख रहा था। हम उसे देखने लगे। मैंने रघुवीर से कहा, “किला ज्यादा बड़ा नहीं है पर ये किला दिल्ली की पुराने समय की इमारतों के आगे टिकता नहीं है। ये देश की सभी इमारतों से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता है, इसलिए ही इसे देखा जा सकता है।”

कोई दो घंटे बाद हम किले से बाहर आ गए। सामने ही किले से निकलते ही कुछ खोमचे वाले बैठे थे। वहाँ बंटा और छोले-भटूरे वाले को देखकर सभी महिलाएँ मचल गईं। निधि ने बंटा पिया और मैंने भी, जिसे बंटा बेचने वाले ने नींबू के साथ काले नमक से टेस्टी बना दिया था। फिर एक प्लेट छोले-भटूरे के बाद सब तृप्त हो गए। हम स्कूटी पर बैठकर वहाँ से वापस चल दिए। मैं एक पेट्रोल पंप पर रुका। मैंने स्कूटी में पेट्रोल भरवाया पर निधि ने कहा कि ज्यादा तेल भरवाने की जरूरत नहीं क्योंकि हमें कल ही दिल्ली की फ्लाइट पकड़नी थी। हम बातें करते हुए होटल में पहुँचे जहाँ हमने चाय और एक कॉफी ऑर्डर की।

निधि ने कॉफी पीते हुए कहा, “मैं बहुत परेशान हूँ राघव। मेरे घर वालों ने मेरे ऊपर दबाव बना रखा है कि मैं जल्दी शादी कर लूँ। पर तुम हो कि शादी के लिए मान नहीं रहे हो। प्लीज जल्दी करो, पापा ने मुझे कई रिश्तों के बारे में बताया है।”

“तो फिर हाँ क्यों नहीं कर देती हो?” मैंने उसे छेड़ते हुए कहा

“तुम फिर से थप्पड़ खाओगे। मैं बस तुम्हारी दुल्हन बनूँगी।”

मैंने बातों का रूख बदलते हुए कहा, “यहाँ पर कुछ दूरी पर बाजार है, कुछ खरीदारी कर लाते हैं।”

“मेरा मूड नहीं है, मैं दो घंटे रूम मेजाकर सोना चाहती हूँ, तुम जा सकते हो।”

मैंने चाय और कॉफी का बिल दिया और बाजार की तरफ चल दिया। मुझे बाजार में एक जैकेट पसंद आई। मैंने एक बेल्ट के साथ एक लकड़ी का बुद्ध भगवान भी लिया। टहलते हुए आइसक्रीम का मजा भी लिया। होटल जाते-जाते मैं थक गया। जब मैं रूम में पहुँचा तो निधि सोकर उठ गई थी। वो अपने बाल बना रही थी। उसने अपने बालों का जूड़ा बनाया और मुझसे कहा, “चलो बीच पर चलते हैं।”

“नहीं मैं बहुत थक गया हूँ। तुम बाकी सब के साथ चले जाओ।”

“पर गोवा में हमारा आखिरी दिन है। कल रात को ही हमें वापस जाना है। साथ में चलते हैं न।”

“नहीं यार थका हूँ। नहीं जा सकता हूँ। तुम ही चली जाओ।”

“तो मैं भी नहीं जाती।” गुस्से में उसने एक बीयर फ्रिज से निकाली और पीने लगी।

“यार एक बात बताओ, तुम इतनी बीयर पीती हो और सब कुछ खा लेती हो फिर भी तुम्हारा वेट कंट्रोल में रहता है?”

“हाँ रहता है। मैं घर पर जिम में मेहनत के साथ हल्की डाइटिंग जो करती हूँ।”

“मैं तुम्हारी कमर का फैन हूँ।”

“ऐसा तुमने कभी नहीं कहा। ये कमर सदा के लिए तुम्हारी हो सकती है।”

“जानता हूँ शादी करके। पर... मैं अब सो रहा हूँ। तुम को जाना नहीं है बीच पर?”

“नहीं जाना। अगर जाना होगा तो तुम्हारे साथ ही जाऊँगी।”

मैं अंदर के रूम में सोने चला गया और दस मिनट में ही सो गया। सोते हुए मुझे सपना आया।

निधि वंश के साथ मेरी बुलेट पर है। वो गोवा में ही है। वो निधि की कमर को एक हाथ से पकड़े हुए है। वंश ने कई ब्रेक लगाए बाइक के जिससे उसका सीना कई बार वंश की पीठ से छू गया। वो मेरे चारों और चक्कर काट रहा था। निधि मेरी तरफ देखकर मुस्कुरा रही थी। वंश ने कहा, “यार तेरी गर्लफ्रेंड मैं शेयर कर रहा हूँ।” और फिर वो हँसने लगा। निधि भी हँस रही थी। फिर वंश ने बाइक की रेस बढ़ा दी। मैंने कहा, “वंश मेरी निधि को उतार बाइक से।” मैं उसके पीछे-पीछे भाग रहा था पर निधि कहे जा रही थी, “वंश और तेज और तेज।” और वो हँस रही थी।

“राघव-राघव-राघव...” इस आवाज पर मेरी नींद खुल गई। निधि मुझे जगा रही थी। मैं उठा और निधि को गले लगा लिया। मैं डरा हुआ था। निधि ने कहा, “क्या सपने में देखा था तुमने जो कभी वंश-वंश कर रहे थे तो कभी निधि-निधि?”

“कुछ नहीं, बुरा सपना था। तुम बीच पर नहीं गई?”

“नहीं गई थी। मैं वापस घूमकर आ गई। दस बज रहे हैं, तुम्हें खाना नहीं खाना क्या? होटल का रेस्टोरेंट बंद हो जाएगा, चलो चलते हैं।”

“मैं हाथ-मुँह धो लेता हूँ पर ज्यादा भूख नहीं है।”

“जितनी है उतनी खा लेना।” निधि ने कहा, “मैं तो एक बार डर ही गई थी कि तुम्हें क्या हो गया अचानक। मैं तुम्हें पाँच मिनट से जगा रही थी कि तुम निधि-निधि कर रहे थे पर तुमने इतने दिनों बाद वंश को कैसे देख लिया सपने में? बड़ी ही अजीब बात है।”

“सपना है, कभी भी आ सकता है और किसी के बारे में भी।”

“ठीक है, खाना खाने चलते हैं।”

मैं सपने को देखकर अभी भी डरा हुआ था। खाना खाने के बाद मैंने निधि से कहा, “चलो बीच पर चलते हैं।”

“जब मैंने पहले कहा था तो तुमने मना क्यों कर दिया था? अब कैसीनो चलते हैं।”

“नहीं, मुझे कैसीनो में मजा नहीं आता है। बीच पर इस वक्त अच्छी हवा चलती है।”

हम बीच के लिए चल दिए। बीच पर हमें चाय-कॉफी, पाइनएप्पल, खिलौने, लेजर लाइट आदि बेचने वालों ने घेर लिया। मैंने एक चाय वाले से चाय ली तो निधि ने कॉफी। मैंने किसी बेचने वाले को खाली हाथ नहीं जाने दिया। मैंने सभी को सौ-सौ रुपये दिए। हम बीच पर अपनी-अपनी चप्पल उतारकर चुपचाप घूमते रहें। कुछ देर बाद मैंने निधि से कहा, “निधि बचपन कितना अच्छा था, जब हमारे पास फोन नहीं था। हम एक-दूसरे को लेटर लिखा करते थे।”

“हाँ वो टाइम मुझे आज भी याद है। तुम नौवीं कक्षा में थे और मैं दसवीं में थी। टाइम कैसे जल्दी बीत जाता है न राघव। एक बात पूछूँ? तुमने मेरे अलावा किसी को किस किया है?”

“नहीं किया।”

“और सेक्स?” ये कहकर वो हँसने लगी।

“हाँ किया है, बाथरूम में।” ये सुनकर वो जोर से हँसने लगी।

“निधि तुम गोवा कितनी बार आई हो दोस्तों के साथ?”

“कई बार आ चुकी हूँ।”

“पर तुम मेरे साथ क्यों नहीं आई?”

“मैंने सोचा कि तुम गोवा का खर्च नहीं उठा पाओगे और साथ में तुम्हारी पढ़ाई के कारण तो कभी पापा के डर से।” वो सच कह रही थी मेरे पापा उस समय मेरा गोवा जाने का खर्च नहीं उठा पाते शायद साथ में मेरी पढ़ाई का भी चक्कर था नहीं तो मैं निधि के साथ गोवा जरूर जाता।

“पर पापा का डर तो तुझे अब भी होगा?”

“नहीं, अब मैं अपनी जिंदगी के फैसले अपने आप करती हूँ। पापा ने मुझे छूट दे रखी है।”

मैं एक सिगरेट जलाने लगा तो वो बोली, “यार इतनी सिगरेट पीते हो, मरना है क्या जो तुम रोज दस सिगरेट पी जाते हो? छोड़ो इसे।”

उसने मेरे हाथ से सिगरेट छीनते हुए कहा और सिगरेट पानी में फेंक दी।

“यार कल इस सुंदर समय का दी एंड हो जाएगा।” मुझे ये एहसास अब हो रहा था कि मैं शायद कभी भी निधि के साथ गोवा नहीं आ पाऊँगा। शायद उसकी शादी हो जाए किसी और से। मैं उससे बेशक शादी नहीं करना चाहता था पर प्यार तो उसी से करता था

“हाँ सच में। मुझे बड़ा दुख होगा। पता नहीं ऐसा मौका हमें यहाँ आने का कब मिलेगा।”

हम किनारे से उठ गए तो निधि ने कहा, “मुझे भूख लग रही है, सामने वाले रेस्टोरेंट में चाय के साथ ऑमलेट खाते हैं।”

“तुम खाते-खाते परेशान नहीं होती? अभी ही तुमने कॉफी पी है।”

उसने बड़े धीरे से कहा “क्या करूँ, घर पर तो कुछ अच्छा डाइटिंग के कारण नहीं खाती। यहाँ मन को खुला छोड़ देती हूँ इसलिए।”

“अगर तुम कुछ खाओगी तो मैं सिगरेट पीऊँगा।” मुझे सिगरेट की तलब हो रही थी।

“ठीक है यार पी लेना। तुम मानने वाले कहाँ हो।”

तभी मुझे मेरे इंटीरियर डिजाइनर का फोन आया, “हेलो मैम! क्या चल रहा है?”

“हाँ सब ठीक है। बस घर के लिए पेंट और दो झूमर का इंतजाम करना है। आप कल आ रहे हैं न?”

“हाँ कल आ तो रहा हूँ पर आधी रात को गाँव पहुँचूँगा। पर आप तो कह रही थी कि एक हफ्ता आगे के काम में लग जाएगा।”

“वर्करों ने काम जल्दी कर दिया है, पर कोई बात नहीं, आप से परसों मुलाकात हो जाएगी।”

“ठीक है। और बताएँ।”

“और तो कुछ नहीं, मैं फोन रखती हूँ।”

बात करने के बाद हम बीच पर ही एक रेस्टोरेंट में बैठ गए। मेज पर एक कैंडिल जल रही थी। निधि ने वेटर को बुलाया। दो चाय और ऑमलेट का ऑर्डर दिया।

"मैडम, इस वक्त चाय नहीं मिल सकती है। आप कुछ और मँगा सकती हैं।"

"तो ऐसा करो, एक बीयर ले आओ।"

"कितनी बीयर पियोगी?" मैंने निधि को डाँटते हुए पूछा।

"तो ऐसा करो, एक नहीं दो बीयर ले आओ।" निधि ने खींझते हुए कहा। वेटर ऑर्डर लेकर चला गया।

"मैं इस वक्त बीयर नहीं पी सकता हूँ। दो किसलिए मँगवाई है?"

"मुझे डाँटने के जुर्म में।"

"चलो यहाँ से कहीं और चलते हैं। तुम पी-पीकर पूरी नशेड़ी हो गई हो।" ये सुनकर निधि हँसने लगी और मेज के नीचे मेरे पैर पर एक लात मारी। लात लगते ही मैंने धीरे से आउच कहा। कुछ देर में वेटर दो बीयर और ऑमलेट ले आया। हमने बीयर के साथ ऑमलेट खाया। रात के बारह बज चुके थे। बिल मैंने जल्दी से मँगवाया और निधि से कहा, "जल्दी करो, जल्दी से यहाँ से निकलते हैं, नहीं तो होटल जाने का रास्ता सुनसान हो जाएगा।"

"पर इतनी भी जल्दी क्या है?"

"रास्ते में आवारा कुत्ते मिलेंगे वरना।"

"तुम कुत्तों से डरते हो?"

"वो आवारा हैं, रास्ते में काट लिया तो?" निधि थोड़ी हँसी और फिर मुस्कुराई। हम वहाँ से तुरंत निकल लिए और जैसा मैं जानता था, रास्ते में कुत्ते हमें मिल भी गए। कोई चार कुत्ते जो आवारा थे, हमारे पीछे-पीछे भागते हुए चलने लगे। एक कुत्ता हमारे पास भौंकता हुआ आया तो निधि की चीख निकल गई। उसे देखकर मैं भी चीख पड़ा। निधि मेरे पीछे छुपने लगी और कुत्ते को शी-शी करके भगाने लगी। हम उससे बचते हुए होटल की तरफ चलते गए। हम जब तक होटल में नहीं पहुँच गए, हमारी साँस अटकी रही।

रूम में घुसकर निधि इतना हँसी कि उसके पेट में बल पड़ गए। मैंने निधि से कहा, "बड़ी ही डरपोक हो, कुत्ते को देखकर मेरे पीछे छुप गई थी।"

"तो क्या हुआ, तुम कुत्ते से मेरी सुरक्षा नहीं कर सकते थे! थोड़ा काट ही लेता बस। इतना भी कोई डरता है? कुत्ते को देखकर चिल्ला पड़े थे।"

"पहले तुम चीखी थी, मैं नहीं। तुम्हारे चिल्लाने से मैं डर गया था। नहीं तो मैं नहीं चीखता।"

हम एक-एक बीयर लेकर पीने लगे। तभी सत्ते ने डोरबेल बजाई। फिर तो मैं, सत्ते और निधि देर तक पीते रहे। हमने रात को दो बजे पीना बंद किया। मैं रात को तीन बजे सोने गया। मैं दूसरे कमरे में परदा लगाकर सो गया और निधि कमरे के दूसरे बेड पर सोई। सुबह दस बजे हम उठे तो पता चला कि वे चारों बागा बीच पर चले गए थे।

मेरा मन बाहर जाने का नहीं था, न ही निधि का था, क्योंकि आज ही हमें रात को फ्लाइट दिल्ली के लिए पकड़नी थी।

मैं अपने कपड़े बैग में ठूँसने लगा। निधि ने कहा, “ऐसे भी कोई कपड़े रखता है? लाओ मैं कपड़े ठीक से रखती हूँ।” उसने कपड़े बड़े ढंग से बैग में रखे।

“तुम साबुन, शैंपू, तौलिया, पेस्ट और ब्रश बाथरूम से ले आओ।” मैंने बाथरूम से सारा सामान लाकर निधि को दे दिया।

मैंने निधि से कहा, “मेरे सारे कपड़ों पर सिलवट पड़ी है। मैं फ्लाइट में क्या पहन कर जाऊँगा?” उसने कपड़ों को देखा और एक जींस-टीशर्ट और जैकेट को निकाला जो गोवा से ही खरीदी थी और रूम सर्विस से बात करके उन कपड़ों पर प्रेस के लिए दिया। कोई बीस मिनट बाद मेरे कपड़ों को एक लड़का प्रेस करके दे गया। मैं फिर अच्छी तरह से नहाया। मेरा रंग बीच पर नहा-नहाकर थोड़ा काला-सा पड़ गया था। निधि के रंग में भी कुछ फर्क पड़ गया था। पर वो अब भी ठीक दिखती थी। हमने होटल पर ही नाश्ता या लंच किया। हमें आज ही एयरपोर्ट के लिए निकलना था।

जब हम नाश्ता करके उठे तो वे दोनों जोड़े भी आ गए। उन्होंने भी नाश्ता किया। बारह बजे मैं और निधि मार्केट में घूमने चले गए। निधि ने मार्केट से अपने लिए और मेरे लिए भी सजावट का सामान लिया। हम दोपहर दो बजे तक घूमते रहे, फिर हम दो टैक्सी में बैठकर एयरपोर्ट के लिए चले गए। एयरपोर्ट पहुँचने में दो घंटे लगे। एयरपोर्ट पर हमने बोर्डिंग पास लिए और कॉफी पीने लगे। अभी फ्लाइट के दो घंटे थे। सब गोवा की बातें करने लगे। सत्ते ने कहा, “हम अगले साल फिर से गोवा आएँगे।” सबने हामी भरी। ममता ने निधि से कहा, “आप और भईया यहाँ शादी के बाद हनीमून पर आना।” निधि ने मुँह फुला कर मेरी तरफ देखा। और कहा , “पहले शादी तो हो जाए, जब ही तो हनीमून की सोचें।”

तभी फ्लाइट अनाउंसमेंट हुई और अपनी चैकिंग कराकर हम हवाई जहाज में बैठ गए। ये फ्लाइट एयर इंडिया की थी जिस में हमें रात का डिनर भी दिया

गया। रात दस बजे हम दिल्ली पहुँचे। एयरपोर्ट पर हमें लेने रघुवीर का ड्राइवर आया। निधि भी टैक्सी पकड़कर वहाँ से चली गई। हम रघुवीर की गाड़ी में थे। रघुवीर ने कहा, "यार तेरी भाईली है तो कमाल पर तेज भी है। शादी से पहले ही सुहाग रात के मजे ले लिए।" सुनकर सब हँसने लगे। मैंने कहा, "हमारे बीच ऐसा कुछ नहीं हुआ। मैं गाय माता की कसम खाता हूँ।" रघुवीर और सत्ते जानते थे कि मैं गाय की कसम झूठी नहीं खाता था, क्योंकि मैं गाय को अपनी रोजी-रोटी मानता था।

रघुवीर ने कहा, "ऐसा मौका तुने ऐसे ही जाने दिया?"

"तुम नहीं जानते, गले पड़ जाती वो। कोशिश तो उसने बहुत की थी ये सब करने की, पर मैंने दो-चार किस के अलावा उससे दूर ही रहा। किस भी उसने जबरदस्ती ले लिए थे।" गाड़ी में बैठे सब शांत हो गए। मैंने सबसे कह दिया कि कोई इस बारे में किसी से नहीं कहे, नहीं तो बेवजह मजाक उड़ेगा।

"भाई हमें क्या ऐसा समझा है जो अपने ही भाई की बदनामी करेंगे?" सत्ते ने कहा।

रघुवीर ने कहा, "भाई लड़की सुंदर है। बस शराब ही तो पीती है। भाई तुम इससे ही शादी करना।" सोचने लगा की पता नहीं निधि सब पर क्या जादू कर देती है जो सब को भा जाती है शायद ये सुन्दरता और मुँहफट होना ही इस का कारण हो।

"मैं भी इस चालू लड़की को जानता हूँ। इसके कितने भी दबाव में इससे शादी नहीं करूँगा।"

ममता ने कहा, "भाई, कितने साफ दिल की लड़की है। सुना है तुम्हारा चक्कर उससे तेरह साल की उम्र से है। मुझे तो बड़ी ही प्यारी लगी।"

"सुना तो तुमने सही है, पर मेरा प्यार उससे खत्म हो गया है। इतने साल प्यार नहीं रह पाया है।"

साक्षी ने कहा, "भईया झूठ नहीं बोलो, प्यार इतने साल में और बढ़ जाता है और मैं निश्चित तौर पर कह सकती हूँ कि शादी तो आप दोनों की होगी ही। भगवान के घर देर है अँधेर नहीं। देखते नहीं कितना खुश रहती है वो आपके साथ। आप दोनों के बीच कोई बात है जो आप उससे शादी नहीं करना चाहते हो?"

सुनकर मैं कुछ नहीं बोल पाया। सारे रास्ते फिर एक चुप्पी-सी छाई रही। हम रात एक बजे गाँव की सरहद में थे। सबसे पहले रघुवीर का घर पड़ता था। उसने

अपना सामान घर पर पहुँचकर उतारा। फिर गाड़ी मुझे और सत्ते को छोड़ने चल पड़ी।

मैं घर पर आकर नहाया गर्म पानी से। रहीम अभी उठा हुआ था। उसने चाय के लिए पूछा, पर मैंने मना कर दिया। यहाँ ज्यादा ठंड थी। मैं बिस्तर पे लेट गया। अगली सुबह जब मैं उठा तो मेरे एक कर्मचारी ने बताया कि 04 नंबर की गाय मर गई है, क्योंकि गाय को गलघोटू हो गया था।

"तो डॉक्टर को नहीं बुलाया?"

"डॉक्टर को भी बुलाया था पर नहीं बच पाई।"

"किसी और गाय को तो संक्रमण नहीं हुआ न?"

"नहीं भईया, बाकी सभी गाय सुरक्षित है।"

"उस गाय को कहाँ दफनाया?"

"उसे गाँव से दूर नमक डालकर दफनाया है।"

अब मैं क्या ही कर सकता था। काम पर लग गया। मैंने सारे दूध को नपवाकर टंकर में भिजवाया। फिर मैं दस बजे दूध के पैसे लेने के लिए दूध वाले के ऑफिस गया। मैंने बंगले के काम को भी देखा जहाँ पर बहुत बदलाव काम के कारण आ चुका था। मोडुलर किचन का काम तेजी से हो रहा था। बंगले के एक हॉल में पी.ओ.पी. का काम पूरा हो गया था। दूसरे हॉल में तो पी.ओ.पी. का काम पहले ही हो गया था। मजदूर और मिस्त्री ने काम बड़ी तेजी से कर दिया था। मुझे लगा कि आज से ही इन में पेंट का काम भी होने वाला होगा। दोपहर तक इंटीरियर वाली भी आ गई जिसने आते ही पेंट लाने को कहा। मैं पेंट लेने गुरुग्राम चल दिया।

क्रीम और हल्का आसमानी रंग का पेंट एक दुकान से ले रहा था तभी निधि का फोन आया। उसने कहा, "राघव, मेरे पापा परसों तुम्हारे पास आएँगे।"

"पर किसलिए वो यहाँ आएँगे?"

"ऐसे ही, वो गाँव देखना चाहते हैं।"

"क्या तुम भी आओगी?"

"नहीं मैं शोरूम में रहूँगी। पर तुम परेशान मत होना वो दोपहर को तुम्हारे पास आ जाएँगे।"

पेंट लेने के बाद मैं बाजार के एक शोरूम में गया जहाँ मैंने दो झूमर भी खरीदे और मैं गाँव के लिए निकल गया। सोचने लगा कि गुप्ता अंकल मेरे गाँव क्यों आ रहे हैं। मुझसे ऐसा क्या काम पड़ गया या वो मेरी और निधि की शादी की बात

तो नहीं करने आ रहे! या बंगला देखने या कोई जमीन खरीदने आ रहे होंगे शायद। इसलिए मैंने निधि के पास फोन लगाया -पर उसने कहा कि उसे कुछ नहीं पता।

फिर मैंने सोचा कि जब आएँगे तब देखा जाएगा।

अध्याय-17

अगले दो दिन मैं यही सोचता रहा कि गुप्ता अंकल क्यों आ रहे हैं। वजह समझ में नहीं आ रही थी। और दो दिन यूँ ही निकल गए। मैं सोच रहा था कि वो गाय का तबेला जरूर देखेंगे इसलिए मैंने अपने कर्मचारियों से तबेले की अच्छी तरह से सफाई करवाई। सोहना बाजार से मैं खाने-पीने की चीजें लेकर आया, जिसमें नमकीन बिस्कुट मिठाई आदि थे।

गुप्ता अंकल दो बजे दोपहर को गाँव आ गए। वो अपनी बी.एम.डब्लू. कार से आए थे। आते ही मैंने उनसे ठंडा या गरम, चाय-कॉफी लेने को पूछा। पर मैं ये भी सोच रहा था की मैं उनसे क्या बात करूँ क्योकि वे मेरे से ऊम्र में बहुत बड़े थे मेरे दिमाग में से बातें ही नहीं निकल रही थी। असलियत में मैं तो अपने पापा से भी बात नहीं कर पाता था वे उनके ही उम्र के थे। फिर निधि के पापा ने ही बातें शुरू की।

“इतनी सर्दी है, गरम ही चलेगा। आज पता नहीं ठंड ज्यादा लग रही है।”

“हाँ अंकल, यहाँ ठंड ज्यादा ही रहती है। गाँव में पोलूशन नहीं है इसलिए।”

मैंने रहीम को आवाज लगाई कि वो दो गिलास गर्म दूध ले आए। अंकल ने कहा, “बेटे मैं दूध नहीं पीता हूँ, आप चाय ही बनवा लो।”

मैं रसोई में गया और रहीम को कहा, “रहीम दो चाय बनाओ। कम चीनी के साथ अच्छे से पकाकर टेस्टी बनाओ।” फिर मैं अंकल के पास चला गया।

“तुम इन दो कमरों में रहते हो?” अंकल ने पूछा।

“हाँ अंकल, एक को तो मैं अपने आराम के लिए रखता हूँ, दूसरे में मेरा ऑफिस है। वैसे मैं एक घर भी बना रहा हूँ।” अंकल ने मुझे थोड़ा सामान्य किया।

“ठीक है बेटे, पर तुम वैसे यहाँ क्या काम करते हो? निधि बता रही थी तुम डेयरी चलाते हो।”

“हाँ अंकल मैं दूध बेचता हूँ।”

“क्या तुम दूध को दिल्ली ले जाकर बेचते हो?” मैंने हँसते हुए कहा कि

“नहीं अंकल, मैं मदर डेयरी की गाड़ी को दूध दे देता हूँ।”

“पर यहाँ तो ना गाय है ना भैंस ही है।” मैं फिर से हँसने लगा उन्हें इतनी भी क्या ज्लदी है मेरी गाय देखने की सोचते हुए मैंने कहा “सब है अंकल, यहाँ से पीछे ही तबेला है। आप पहले चाय पी लीजिए, फिर हम उसे देखने चलेंगे।” फिर मैंने हिचकते हुए पूछा, “अंकल, आप इतनी दूर गाँव में किसलिए आए हो?”

“काम तो कुछ नहीं। मैं अपनी दुकान से निकलता नहीं हूँ। काफी समय से मैं गाँव देखना चाहता था। निधि ने बताया तुम गाँव में रहते हो और उसी ने बताया कि वो गाँव कई बार देख चुकी है, इसलिए मैं सैर-सपाटे के लिए यहाँ आ गया।”

“अच्छा किया अंकल जो आप यहाँ आए। मैं आपको गाँव दिखा दूँगा।”

रहीम चाय बनाकर ले आया और मैंने मेज पर नमकीन, बिस्कुट और मिठाई रख दी। हम चाय पीने लगे। तभी रहीम की बेटी रेशमा वहाँ आ गई। रहीम ने उसे आवाज लगाई कि वो वहाँ से चली जाए, लेकिन वो मिठाई को घूरती रही। गुप्ता अंकल ने उसे एक-एक मिठाई दोनों हाथों में थमा दी। वो मुस्कुराती हुई चली गई। अंकल ने कहा, “हम तो रोज ये सब खाते ही रहते हैं। असलियत में ये बच्चे ही इन मिठाइयों के असली हकदार होते हैं।” मैंने मुस्कुराते हुए हाँ में सर हिला दिया।

चाय खत्म होते ही अंकल ने कहा, “बेटा बीस गाय तो होगी ही तुम्हारे पास?”

मैंने कहा, “आप चलकर ही देख लें।”

उन्होंने कहा, “चलो। कुछ नया भी देखना चाहिए। कोई तीस साल से मैंने कोई तबेला नहीं देखा है।”

हम दोनों वहाँ से घर के पीछे चले गए। इतने बड़े तबेले को देखने में हमें आधा घंटा लगना था। अंकल इतने बड़े तबेले को देखकर हैरान रह गए। इस तबेले में हर लाइन में बारह-बारह गायें थी और कुल दस लाइन थी। ऊपर कोणीय आकार में छत थी। अंकल ने एक लाइन की गाय को गिना और पूछा, “क्या हर लाइन में बारह गाय है?”

“हाँ अंकल। एक एकड़ में बस गाय ही है।”

“बहुत शानदार! यानी दस लाइन में 120 गाय। पर पास ही एक और तबेला है, उसमें क्या है?”

“वहाँ गाय के बछड़े-बछिया हैं। ये भी सौ से ऊपर हैं।”

“इन बछड़े और बछिया का तुम क्या करते हो?”

“बछड़ों को तो गाँव में बेच देते हैं और बछिया को हम गाय बनाते हैं। ये तीन-चार साल में गाय बन जाती है।”

“बहुत अच्छा। इनसे निकले गोबर का क्या करते हो?” मैं सोचने लगा की अंकल को सच में नहीं पता की गोबर का क्या काम है या वे जानबूझ कर कह रहे हैं की गोबर का क्या करते हैं।

“इसे हम खेत में खाद के लिए इस्तेमाल में लाते हैं।”

“इन सब गाय के रख-रखाव के लिए कितने कामगार हैं?” बड़ा ही अजीब सवाल है वे तो ऐसे मेरे काम को पूछ रहे थे की जैसे उन्हें भी ये काम करना हो। पर फिर भी मैंने बता देना ही ठीक समझा।

“पंद्रह कामगार हैं। उन्हें मैं दस से पंद्रह हजार रुपये महीना देता हूँ। इस तबेले के अलावा एक और तबेला है, जिसको मेरा चचेरा भाई देखता है। उसमें मेरी आधे की हिस्सेदारी है।”

“उस में कितनी गाय हैं बेटा?”

“सौ हैं उस तबेले में।”

“बेटा, इन गायों से कितना दूध निकलता है?”

“एक हजार लीटर दूध का उत्पादन तो इन गायों से हो जाता है इस तबेले से हर रोज।”

“और कितने का बिक जाता है?”

“यही कोई पैंतीस हजार रुपये का हर रोज इस तबेले से बिक ही जाता है। और दोनों तबेलों से पचास हजार का दूध तो बिक जाता है रोज।”

“मैं सोच रहा हूँ अगर मेरा एक बेटा होता तो मैं उसे यह काम करने को कहता।”

उनकी इस बात पर हम दोनों ही हँसने लगे। अंकल ने कहा, “तुम्हें इन पशुओं के लिए ढेर सारा चारा भी लेना पड़ता होगा। कहाँ से ये सब खरीदते हो?”

“मैं ये चारा गाँव से ही खरीद लेता हूँ। इसके अलावा मैं बाजार से भी गुड़, खल, बिनोला आदि भी खरीद लेता हूँ। अंकल मेरे पास इसके अलावा तालाब भी है जिस में मैं मछली पालता हूँ।”

“बेटा ये काम तुम गलत करते हो। मछली पालने से जीव हत्या होती है। इन्हें मारने के लिए मत पाला करो।”

“वो तो अंकल अपनी-अपनी सोच है। मैं आपकी बात से इत्तेफाक जरूर रखता हूँ। मैं भी कई बार इसे बंद करने की सोचता हूँ।”

“हाँ बेटा जब तुम इस काम से ही इतना कमा लेते हो तो इसे बंद ही कर दो। बेटा राघव, तुम ये बता सकते हो कि काम से कितना बचा पाते हो?” अब तो उनहोंने व्यक्तिगत सवाल ही पूछ लिया पर मुझे भी बताने में संकोच नहीं हुआ आखिरकार किसी को तो मेरे काम की परवाह है और पूछने वाला अगर निधि के पापा हो तो बताने में और ही मजा था।

“अंकल आप घर के जैसे हैं इसलिए बता रहा हूँ। नहीं तो ये सब किसी को नहीं बताता। पिछले साल मैंने एक करोड़ अपने काम से कमाए थे। पर अंकल, क्या आप भी ये काम करना चाहते हैं?”

“नहीं बेटा, ये सब मैं किसी और वजह से पूछ रहा हूँ। तुम कह रहे थे घर भी बनवा रहे हो, वो कहाँ है?”

“वो पास में ही है। आप मेरे साथ चलिए दिखाता हूँ।”

मैंने उन्हें अपना बंगला दिखाया। देखकर वो बोले, “बेटा बंगला तो बड़ा है। इस पर क्या खर्च आया है?” अब तो हद ही हो गई पूछने की सोचते हुए मैंने बताना ही ठीक समझा

“अभी तो ये बन ही रहा है, इस में काम बाकी है। पर अब तक अस्सी लाख लग चुके हैं।”

“राघव, एक बात तो तुमने बताई ही नहीं कि ये डेयरी का काम किसने सिखाया?”

“अंकल मैं आठ साल से इस काम में हूँ। शुरूआत में मैंने इंटरनेट-गूगल से और जहाँ से हो सके इस काम की जानकारी इकट्ठा की थी। इसके अलावा मैंने चंडीगढ़ जाकर एक फिल्म भी उस समय देखी थी जिससे बड़ी मदद मिल गई थी। मैंने पापा से नौ लाख रुपये लिए थे काम शुरू करने के लिए। धीरे-धीरे काम बढ़ता रहा और अब इस स्तर पे पहुँच गया है।”

“वाह! तुम एक सफल इंसान हो जो छोटी-सी उम्र में ये कर पाए हो। कम ही ऐसे लोग होते हैं। मैं तुम से इंप्रेस हूँ। तुमने लाख के काम को करोड़ में पहुँचा दिया। पर बेटा तुम्हारी पढ़ाई कहाँ तक हुई है?” सुन कर मेरा सीना चौड़ा हो गया।

“मैं ज्यादा नहीं पढ़ पाया, पर मैं बी.ए. पास हूँ।”

“राघव, तुम शादी कब करोगे? मैं ये सब इसलिए देखने आया हूँ कि तुम्हारा रिश्ता निधि से कर सकूँ।”

मैं चुप रहा। अंकल को सीधा मना नहीं कर पाया इसलिए मैंने कहा, “आपको इस बारे में मेरे मम्मी-पापा से बात करनी होगी। वैसे भी मैं अभी शादी नहीं करना चाहता हूँ।”

“पर निधि और तुम एक-दूसरे को पसंद करते हो न?”

“मैं और निधि अच्छे दोस्त हैं।”

“ठीक है बेटा, तुम शरमा रहे हो तो मैं तुम्हारे रिश्ते के लिए तुम्हारे अभिभावकों से बात कर लूँगा।”

मैंने उन्हें इस बारे में नहीं बताया, पर मैं शादी के लिए राजी भी नहीं था। मैंने अंकल से कहा, “आप गाँव देखना चाहते थे, अगर कहो तो घूम आते हैं।”

“नहीं राघव, मैं तो तुम्हारे बारे में पता करने आया था। अब मुझे चलना है। गाँव फिर कभी देख लेंगे।”

आखिर में चाय पीकर अंकल अपने घर के लिए चले गए। मुझे डर लग रहा था कि कहीं वो निधि का रिश्ता लेकर मेरे घर ना चले जाएँ। मैं जानता था,मेरे घर के लोग रिश्ता कबूल कर लेंगे। मैंने सोचा कि मैं इस रिश्ते के लिए ना कर दूँगा। सोचते हुए मैं सिगरेट पीने लगा।

गुप्ता अंकल के जाने के बाद निधि का मेरे पास फोन आया। उसने कहा, “पापा से तुमने शादी के लिए हाँ क्यों नहीं की?”

“मैं अभी शादी नहीं करना चाहता हूँ इसलिए।”

“पर क्यों?”

“मुझे जिंदगी में बहुत कुछ करना है।”

“झूठ क्यों बोल रहे हो कि मेरे माँ-बाप से बात कर लेना?”

“टालने के लिए और क्या कहता?”

“अगर तुम कह देते कि शादी के लिए तैयार हूँ तो सारा टंटा ही खत्म हो जाता। और तुम शादी ना करने का क्या नाटक कर रहे हो?” वो समझ ही नहीं रही थी मैं उससे शादी नहीं करना चाहता हूँ।

“मैं सच में शादी नहीं करना चाहता हूँ।”

“चुप करो! मैं अंकल से कहकर तुमसे शादी कर ही लूँगी। तेरे इतने भाव क्यों बढ़े हैं? एक-दो तबेले ही तो है तेरे पास, तू कोई टाटा-बिरला नहीं है।”

“तू ही कौन-सी अंबानी है? एक कपड़ों का शोरूम है बस। वैसे भी लोग ये सब मोल से ही खरीदते हैं। मैंने अपनी मेहनत से तबेला बनाया है, किसी की नकल नहीं की है।”

“बहुत अच्छा काम है। गाय के गोबर की बदबू आती है तुम्हारे कपड़ों से तबेले वाले।”

“तुम लड़ क्यों रही हो?”

“इसलिए कि इतने साल से मेरा दिमाग खराब करके रख दिया है तुमने और अब शादी से ना कर रहे हो। दहेज चाहिए अपने दोस्त की तरह तो जगुआर तो दे ही देंगे, इतना भी भाव ना बढ़ाओ, मेरी जैसी लड़की नहीं मिलेगी।” सोचने लगा क्या खास है इस में जो अपने आप को कहानियों वाली परी समझती है।

“अपनी तारीफ अपने आप ना कर। टेढ़ी नाक कद कम तेरी जैसी पता नहीं कितनी लड़कियाँ हैं।”

“मेरी नाक टेढ़ी है? सब जानती हूँ। तेरे पैंट में जो सामान है, वो तेरी तरह काला है। देखा था गोवा में जब तुम सो रहे थे। बात करता है नाक टेढ़ी है। मेरी जैसी नहीं मिलेगी समझे।”

“मेरी पैंट भी खोल ली तुमने, बड़ी बेशरम लड़की हो।”

“हाँ हूँ बेशरम।” और फिर एक गाली देकर उसने फोन काट दिया। मैं सोचने लगा कि बड़ी ही बेशरम लड़की है। इसे जरा भी शर्म नहीं आई मेरी पैंट में झाँकने में।

मैं सोच रहा था कि मेरे शादी के ना करने पर वो मान जाएगी, पर ऐसा नहीं हुआ। उसने दोबारा फोन कर दिया पर मैंने फोन साइलेंट कर दिया और चाय बनाने लगा।

आकर मैंने फोन देखा तो उसने व्हॉट्सएप पर दो मैसेज भेज रखे थे। स्माइली के साथ सॉरी लिखा था। मैंने उसे कोई रिप्लाई नहीं किया और चाय पीने लगा। उसके कुछ और मैसेज आए। उसने कई फोन भी किए पर मैंने फोन नहीं उठाया। फोन बजता रहा तो तंग आकर मैंने उठा लिया। जैसे ही मैंने फोन उठाया और कहा ‘कमीनी’ तो उधर से अमित की आवाज आई। उसने पूछा, “ये कमीनी कौन है?”

मैंने ये सुनते ही फोन काट दिया। मेरा मन उससे बात करने का नहीं था। लेकिन फिर से फोन की घंटी बजी। फोन निधि का था। मैंने फोन नहीं उठाया और बाहर चला गया।

रात को बारह बजे निधि का फिर से फोन आया, “तुमने पापा को शादी के लिए क्यों मना कर दिया? मैंने बड़ी मुश्किल से उन्हें मनाया था। अगर तुम्हें दहेज चाहिए तो दे देंगे पर ऐसे मेरे से बेवफाई मत कर।”

मैंने बात को काटते हुए कहा, “पर निधि मैं अभी शादी नहीं करना चाहता हूँ।” उसने मेरी बात को पूरा होने से पहले ही कहा, “मैं तेरे लायक नहीं हूँ?”

“ऐसा नहीं है।”

“तो बात क्या है? बदसूरत हूँ? कंगली हूँ? हरिजन हूँ? या बनिया नहीं हूँ? चोर हूँ? बदचलन हूँ? रंडी हूँ? या काली-कलूटी हूँ? कोई तो वजह बता ना करने की।”

“वजह कुछ नहीं, यही समझ ले प्यार नहीं करता हूँ।”वो मुझे बड़ी ही अपसेट लग रही थी फोन से सुनने पर। वो शायद रो भी रही थी मैं उसके रोने को महसूस कर सकता था पर वो शादी अब भी मुझसे ही करना चाहती थी।

“तो प्यार किससे करता है? किसी गाँव की अनपढ़ से जो घाघरा चोली पहनती है?”

“किसी से नहीं, मुझे बस पैसे कमाने से प्यार है।”

“तो कौन रोक रहा है? खूब कमाओ। मैं अपना बोझ भी नहीं डाल रही हूँ। मैं अपने खर्चे अपने आप कर लूँगी, बस तुम मान जाओ। ऐसे फैसले दिल से करो दिमाग को भूल जाओ और पैसे की बात छोड़ दो। तुम्हारे पैसे मेरी कमाई से और बढ़ जाएँगे और क्या चाहते हो?”

“चाहता तो बस यही हूँ कि शादी नहीं करनी है।”

“पर क्यों? मुझे जवाब चाहिए कि तुम क्यों मना कर रहे हो।”

“मैं जवाब नहीं दे सकता। समझो हमारा रिश्ता नहीं हो सकता है क्योंकि जबरदस्ती शादी नहीं कर सकता हूँ।” उस की सिसकियो से अब मुझे साफ पता चल रहा था की वो रो रही थी। पर वो शादी पर अड़ी रही चाहे मैं राजी हूँ या नहीं।

“पर राघव, मेरे पेरेंट्स नहीं मान रहे हैं। वे इस सर्दी में मेरी शादी कर देंगे, फिर क्या करोगे? तुम्हारे मेरे तक पहुँचने के सारे रास्ते बंद हो जाएँगे। मैं तुमसे प्यार करती हूँ। मैंने तुमसे प्यार किया है शादी भी तुम्हारे साथ करना चाहती हूँ। मैं तुम्हारे शादी के खर्च को भी वापस कर दूँगी, अगर तुम्हारे पास शादी के पैसे ना हों तो। अगर तुम कहो तो मैं शादी का खर्च भी अकेले ही उठा लूँगी। खाते-पीते घर से हूँ, ये भी कर ही लूँगी। बस मान जाओ। मैं तो शादी भी डेस्टिनेशन मैरिज करूँगी, तुम्हें खर्च करने की कोई जरूरत नहीं है।”

“पर निधि, हम एक साल और नहीं रुक सकते हैं?” मैंने शादी से बचने के लिए कहा।

“नहीं, मेरे घर के लोग नहीं मान रहे हैं। मेरे पापा किसी और से मेरी शादी कर देंगे।”

“तो फिर ठीक है, कहीं और शादी कर लो।”

“कमीने! सारी जिंदगी तुझे लेटर देती आई हूँ, शादी किसी और से करूँ? तेरे जैसा हरामी मैंने देखा नहीं है।” उसने मेरे ऊपर गालियों की बौछार कर दी और फोन काट दिया। मुझे लगा टंटा खत्म हो गया और अब वो मुझे दुबारा फोन नहीं करेगी। मैं उसके बारे में ही सोचता रहा कि तभी उसने व्हॉट्सएप कर दिया। जिसमें लिखा था- ‘शादी तो होगी, तुम्हारी राजी से या पीटाई करके जैसे भी हो।’ उसने एक स्माइली भेजी थी। मैं उसे देखकर मुस्कुराने लगा।

अध्याय-18

एकदम सुबह पापा का फोन आया और उन्होंने मंगलवार को घर पहुँचने को कहा।

"क्या काम है पापा?"

"वो तुमसे कोई मिलने आ रहा है।"

"कौन आ रहा है?"

"तुम्हारे आने पर पता चल जाएगा।"

"मैं मंगल को नहीं आ सकता।" मैं समझ गया कि निधि के घर से शायद कोई आ रहा होगा। मैंने इसलिए मना कर दिया। मैं किसी भी हाल में इस शादी को हाँ नहीं करना चाहता था। मैं कई साल से वंश की बातों से तड़प रहा था और स्कूल की पार्टी की कही बात मेरे दिमाग में गूँजती रहती थी। पापा ने कहा, "तुम्हें मंगल को क्या काम है?"

"पशुओं के लिए चारा और गुड़ लाना है।"

"तो शाम को घर आ जाना। गुड़ लाने का काम तो घंटे दो घंटे का है।"

"पर पापा नहीं आ सकता हूँ। यहाँ गोबर भी फिकवाना है, बड़ी बदबू रहती है।"

"ये काम तो तुम्हारे लड़के कर लेंगे। मैं ना नहीं सुनना चाहता हूँ।"

खैर, पापा की जिद पर मैंने आने के लिए अनमने मन से हाँ कर दी। रहीम वहीं था। उसने पूछा कि क्या निधि में कोई कमी या दोष है जो मैं उसे शादी से मना कर रहा था।

मैंने उसे डाँटते हुए कहा, "तुझे इससे क्या मतलब?"

ये सुनकर रहीम ने कहा, "भईया, बड़ी बात और छोटा मुँह। इतनी अच्छी लड़की को क्यों छोड़ रहे हो? पूरे गाँव में धमक रहती है जब वो यहाँ आती है। और तो आप से प्यार भी बहुत करती है। सभी गाँव वाले जानते हैं। आप की ही बेगम बनेगी और एक बात और, वो आप की ही जात-बिरादरी की है।"

"तुम नहीं जानते रहीम, वो बड़ी ही तेज लड़की है। मैं ही उसे जानता हूँ। अगर इतनी ही अच्छी होती तो मैं मना क्यों करता?"

फिर रहीम वहाँ से खिसक लिया। मैंने एक कप चाय अपने लिए बनाई। सोचने लगा कि एक ही लड़की से जीवन में प्यार किया, उसी का दिल तोड़ रहा हूँ। कभी वंश की वो बात याद आ जाती जो उसने पार्टी में कही थी। वंश की हँसी मुझे

जलाती रही। मैं पिछले सात साल से तड़प रहा था और प्रेम की आग में जल रहा था। मैं ये भी सोचता था कि निधि ये सब करके भी भोली बनी रहती है। मैं सोचने लगा कैसे निधि और उसके घर के लोगों को टालूँगा मंगलवार को। मैं ये भी जानता था कि अगर निधि से शादी हो गई तो वंश के कहे शब्द मुझे हमेशा घेरे रहेंगे जिसे मैं आठ साल से सुनकर तड़प रहा था।

मैंने मंगलवार को अमित को फोन किया, “अमित, मैं आज नहीं आ सकता, पापा से कह देना।

“पर भाई, तुम्हारा आज आना जरूरी है।”

“मेरा एक्सीडेंट हो गया है, मैं गाड़ी नहीं चला सकता हूँ। मैं सफर भी नहीं कर सकता हूँ।”

“पर भाई, आज निधि के मम्मी-पापा तुम्हारे लिए रिश्ता लेकर आ रहे हैं।”

“अच्छा पापा को फोन दो।”

पापा ने फोन लेते ही कहा, “बेटा क्या बात है?”

“पापा मैं आज महरौली नहीं आ सकता हूँ, मेरा एक्सीडेंट हो गया है। आप निधि के पापा-मम्मी को आज ना बुलाओ। मेरे हाथ में गुम चोट है।”

“पर ये सब कैसे हो गया?” पापा ने चिन्ता में कहा

“कल मैं बुलेट से सोहना गया था। रास्ते में कीचड़ के कारण बाइक फिसल गई जिससे हाथ मैं चोट आ गई।”

“ठीक है, मैं निधि के पापा को मना कर दूँगा। हाथ को किसी डॉक्टर को दिखाया है?”

“हाँ पापा दिखाया है।”

“तो कब तक ठीक होगा?”

“ये तो उन्होंने नहीं बताया, पर लगता है महीना भर तो लग ही जाएगा।”

“तो फिर इतने समय के लिए महरौली आ जाओ। अमित तुम्हारा काम देख लेगा। तब तक कहो तो मैं भी वहाँ आ सकता हूँ।”

“नहीं पापा, मैं ये काम देख लूँगा। आप परेशान ना हो।”

“तो फिर अमित को तुम्हारे पास भेज देता हूँ।”

“नहीं पापा चोट ज्यादा गँभीर नहीं है। आप सब परेशान ना हों। उसे पढ़ाई करनी है।”

"ठीक है राघव, मैं तो तुम्हारी मदद के लिए कह रहा था। जैसी तुम्हारी मर्जी। मैं निधि के पापा से आने को मना कर देता हूँ। पर मैं तुम्हें गाँव में मिलने जरूर आऊँगा। तब तक तुम अपना खयाल रखना।"

"आप यहाँ ना आना। मैं ही कुछ दिनों में सत्ते के साथ महरौली आ जाऊँगा।"

मैंने सोचा अब मुझे क्या करना है जिससे मैं चोट दिखा सकूँ। मैंने एक पट्टी बाँधने की सोची, जिससे लगे कि मुझे चोट लगी है। नहीं तो निधि जरूर सत्ते से पूछ सकती है कि मेरा एक्सीडेंट हुआ भी है या नहीं। मैंने एक पट्टी अपने हाथ में बाँध ली। जैसे ही मैंने पट्टी बाँधी फोन बज गया।

"राघव क्या हुआ तुम्हें?"

"कुछ नहीं, थोड़ी-सी चोट लगी है।"

"ठीक है, एक विडियो कॉल करती हूँ।"

"तुम्हें यकीन नहीं तो करके देख लो।"

उसने एक वीडियो कॉल की। मैंने उसे अपना हाथ दिखाया तो उसने कहा, "माफ करना राघव, मुझे लगा तुम झूठ बोल रहे हो। कब तक ठीक हो जाओगे?" मुझे लगा की झूठ नहीं बोलना चाहिए था पर मैं उसे शादी के लिए साफ इंकार नहीं कर पाया। वो शायद सही कह रही थी मैंने इतने साल उस का दिमाग खराब कर रखा था मुझे सालो पहले ही उससे कह देना चाहिए था की मुझे तुमसे प्यार नहीं है। पर अब क्या फायदा समय निकल चुका था।

"कुछ ही दिन में।"

फिर कुछ हाल-चाल के बाद मैंने फोन काट दिया। करीब पंद्रह मिनट बाद रघुवीर और सत्ते मेरे पास आ गए। सत्ते ने आते ही कहा, "इतने झूठे कि नकली पट्टी भी बाँध ली है।"

"कौन कहता है पट्टी झूठी है?"

रघुवीर ने रहीम को आवाज लगाई। रहीम दौड़ते हुए वहाँ आ गया, "बताओ तुम्हारा भईया आज बाजार गया था?"

"नहीं रघुवीर भईया।"

"तो फिर ये चोट कैसे लगी?"

"मुझे नहीं पता था।"

"तुम अंदर जाओ हमें अकेले में बात करनी है।" रहीम वहाँ से चला गया। मैं सोचने लगा कि अब क्या झूठ बोलूँ। रघुवीर ने सख्ती से पूछा, "अब बताओ ये चोट

कैसे लगी?”

“वो मैं बाथरूम में फिसल गया था।”

“पर तुमने तो कहा कि बाजार में बाइक से एक्सीडेंट हो गया था। अरे तुम्हें निधि जैसी लड़की नहीं मिल सकती है, वो तुम्हें बहुत प्यार करती है। क्यों अपनी जिंदगी से उसे निकाल रहे हो?” उसने बड़ी शांति से मुझे समझाया।

“तुम उसे नहीं जानते जितना मैं जानता हूँ और ये मेरी जिंदगी है, मैं उससे शादी करूँ या नहीं, ये मेरी मर्जी है। मैं किसी के दबाव में शादी हरगिज नहीं करूँगा।”

सत्ते ने कहा, “बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद? कहीं दीया लेकर भी ढूँढोगे नहीं मिलेगी उस जैसी।”

“ठीक है, अपनी सलाह अपने पास रखो। क्या जानते हो उसके बारे में? मैं उसे तेरह साल से जानता हूँ। वो वफादार नहीं रही कभी भी। उससे प्यार करके भी मैं उससे शादी नहीं करना चाहता हूँ।” मैं कहते हुए रुक गया।

“अपने ही प्यार से जलते हो, उसके लिए तुम्हारा प्यार हमने नहीं देखा है।”

“मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता हूँ। ये मेरी मर्जी है, मैं उससे शादी करूँ या नहीं। तुम अपनी सलाह अपने पास रखो।” मैंने कठोरता से कहा मैं बिलकुल नहीं चाहता था की कोई मुझे मेरे ही घर में ऐसे पेश आए। मैं अपनी शादी में किसी का दखल नहीं चाहता था चाहे उस में मेरे सबसे करीबी ही क्यो ना हो।

“ठीक है, हम भी उससे शादी करने के बारे में नहीं कहेंगे। पर कहाँ मिलती है ऐसी लड़की? तुम्हें मिली है पर तुम उसकी कदर नहीं कर सके हो जो तुम्हें इतना प्यार करती है। आज जब उसने तुम्हारी नकली चोट देखी तो फोन पर ही रो पड़ी थी। उसने कई बार कहा कि तुम उसे देखकर आ जाओ, पर मैंने कहा कि वो झूठ बोल रहा है। अगर चोट होती तो क्या मुझे नहीं पता होता? उसने कहा कि वो झूठ नहीं बोलता है। पर तुम्हारे मन में ऐसा क्या जहर भरा है उसके लिए जो तुम हमें नहीं बताना चाहते हो?”

“मैं उससे प्यार नहीं करता हूँ। बात बस इतनी है जो तुम नहीं समझ रहे हो।”

“ठीक है राघव, बड़े एहसान फरामोश हो तुम।” सुन कर मुझे मिर्ची लग गई सोचने लगा क्या एहसान कर दिए हैं उसने

“उसने क्या एहसान कर दिया है?”

“ठीक है राघव हम जाते हैं।” सत्ते ने कहा और वे सब चले गए।

अध्याय-19

मुझे आज घर जाना था। वैसे तो निधि के घरवाले कल मंगल को आने थे, पर मुझे हिदायत दी गई थी कि मैं सोमवार को ही शाम को घर पहुँचना है। मंगलवार को महरौली का बाजार बंद रहता है इसलिए गुप्ता अंकल का शोरूम इस दिन बंद था। उन्हें इस दिन अवकाश मिल जाता है। अमित और पापा ने कहा था कल के लिए कोई कपड़े बाजार से ले आना, पर मैंने कपड़े नहीं खरीदे।

शाम चार बजे मैंने जाने का समय तय किया। इसलिए रहीम को मैंने सारे काम समझा दिया। फिर मैंने बैग में दो जोड़ी कपड़े रख लिए। मैं चाहता था कि मैं गुप्ता अंकल को साफ इनकार कर दूँगा शादी से। मैं दोपहर को खेत में घूमता रहा और अपने काम करता रहा। शाम को चार बजे मैं महरौली के लिए निकल गया। मैं वहाँ जाने से घबरा रहा था और सोच रहा था कि मैं कैसे गुप्ता अंकल को शादी से मना करूँगा। उन्हें इस रिश्ते से बड़ी उम्मीद थी। मैं चालीस की स्पीड से सोहना पहुँचा। मेरा वहाँ जाने का मन नहीं था। मैं ये भी सोच रहा था कि जब निधि को पता चलेगा कि मैं उससे शादी नहीं करना चाहता हूँ तो उस पर क्या बीतेगी। पर मैं शादी तो हरगिज नहीं करने वाला हूँ उससे, यही सोचते हुए मैं धीरे-धीरे चल रहा था। कोई दो घंटे लगे मुझे गुरुग्राम पहुँचने में।

मैं अपने घर के लोगों से क्या कहूँगा, यही सोचता रहा। सबसे मुश्किल था निधि को समझाना कि मैं उससे नफरत करता हूँ, प्यार नहीं।

कभी सोचने लग जाता कि क्या मैं सच में उससे नफरत करता भी हूँ तो लगता कि नहीं यार, मैं प्यार ही करता हूँ। फिर सोचता कि नफरत किससे करता हूँ? तो समझ में आता कि उस वंश से। हाँ मैं उससे ही नफरत करता हूँ और उसके कहे शब्द फिर से मेरे कानों में गूँजने लगे। और उसका हँसना और मुस्कुराना मुझे परेशान करने लगा। मैं अभी उसको थप्पड़ मारना चाहता था। मैंने गाड़ी दो मिनट के लिए रोकी और गाड़ी की पिछली सीट पर रखी बोतल से बहुत-सा पानी पिया। अभी भी वंश मेरी आँखों में था। मैंने निश्चय किया कि सबको शादी के लिए मना कर दूँगा। मैंने गाड़ी की स्पीड बढ़ा दी और तेज चलाते हुए गाड़ियों को पीछे छोड़ते हुए आगे चलने लगा। मैंने किसी भी रेड लाइट पर गाड़ी को नहीं रोका। मैं चलता रहा। शुक्र था कि ना ही ट्रैफिक पुलिस वाला मिला ना ही मेरा एक्सीडेंट हुआ। लाडो सराय जब आया तो अमित का फोन आया। मैंने फोन उठाते ही कहा कि दस मिनट में आ रहा हूँ और तेजी से गाड़ी मैंने महरौली के लिए मोड़

दी। जलन से मेरा चेहरा लाल हो रहा था। महरौली में मैंने गाड़ी पार्किंग में लगाई और मैं घर पर जाने लगा। गाड़ी घर तक नहीं जा सकती थी। घर तक के रास्ते सँकरे थे।

घर पहुँचा तो अमित ने दरवाजा खोला। उसने मुझे गले लगाया। हम हॉल में गए। पापा ने कहा कि हाथ-मुँह धो लो, खाना खा लो। फिर मैंने सभी घर वालों के साथ खाना खाया और अपने कमरे में चला गया। जहाँ मेरे पीछे-पीछे अमित भी आ गया।

“भाई, कल निधि के पापा तुम्हारे लिए रिश्ते की बात करने आएँगे। मैं बहुत खुश हूँ। तुम्हारे और निधि के प्यार को हम सफल लव सटोरी कह सकते हैं।”

मैंने इस पर उसे कुछ नहीं कहा। अमित फिर बोला, “भाई, निधि ने तुम्हारे लिए थियेटर की टिकट बुक कर रखी है। जब रिश्ता हो जाएगा तो तुम और निधि मूवी देखने जाना। जाना तो मैं भी तुम्हारे साथ चाहता था पर निधि ने मना कर दिया है इसलिए नहीं जाऊँगा। सच में निधि जैसी भाभी पाकर मैं खुश हूँ। पर तुम खुश नहीं लगते, क्या बात है?”

“मैं कभी निधि से शादी नहीं करूँगा, वो तेरी भाभी नहीं बनने वाली है।” सुनते ही अमित का चेहरा उतर गया वो शायद मेरे से ऐसे जवाब की बिलकुल भी उमीद नहीं कर रहा था।

“भाई, तेरह साल तक जिससे प्यार किया, अब उससे शादी नहीं करोगे? क्या कमी रह गई उसके प्यार में?” मैंने थोड़ी खामोशी के बाद कहा

“कमी तेरे भाई में है जो प्यार उससे किया।” मेरे इतना कहने के बाद कमरे में खामोशी छा गई।

“भाई, दिल टूट जाएगा उसका। वो तुम्हें जान से भी ज्यादा प्यार करती है।”

“उसका तो दिल ही टूटेगा, मेरा सब टूट जाएगा उससे शादी करके।”

“हमारे बुजुर्ग माता-पिता के बारे में सोच। कितने सपने बुन लिए हैं उन्होंने। तुम साफ-साफ बताओ क्या गलती कर दी है निधि ने जो तेरह साल के प्यार को यूँ उजाड़ रहे हो? उसके नहीं तो उसके माता-पिता के बारे में सोचो। वो तुम्हें दामाद बनाना चाहते हैं। तुम स्वार्थी हो गए हो। उसने अपने और तुम्हारे बारे में सब बता दिया है अपने पापा मम्मी को। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। अगर तुम्हारे और उसके बीच कोई बात है, तो बैठकर हल कर लो।”

“ऐसा कुछ नहीं है, बस प्यार नहीं है उससे, बात इतनी-सी है।” मैंने अमित से आँख चुराते हुए कहा मैंने ना का मन पहले ही से बना रखा था पर घर के और लोगो से पहले अमित से कहना जरूरी था क्योंकि मेरे हिसाब से सबसे पहले उसे ही झटका लगना था मम्मी पापा को तो मैं कैसे भी मना लेता।

“पर मम्मी-पापा को कौन समझाएगा? बड़े सपने बुन लिए हैं उन दोनों ने। खैर, एक बात समझ में नहीं आ रही है, जब तुमने किसी लड़की से कभी रिश्ता ही नहीं बनाया है उसके अलावा तो तुम्हें प्यार किसी और से प्यार कैसे हो सकता है? बचपन से ही तुम्हारे लबों पर बस निधि का ही नाम रहा है। मुझे सही-सही बताओ क्या बात हुई है तुम्हारे बीच जो उससे दूरी बना ली है? तुम्हारे ना कर देने से उसका रिश्ता कहीं और कर देंगे उसके पापा, तब क्या करोगे? सारी जिंदगी भर रोते रहोगे पर वो तो क्या उसकी परछाईं से भी शादी नहीं कर पाओगे। समझ लो ये बात कि ऐसा मौका कभी नहीं मिलेगा तुम्हें। मेरी सलाह है उससे शादी कर लो।”

“मैं भी जानता हूँ पर मैं उससे शादी करके जिंदगी भर नहीं जल सकता हूँ। मैंने बुरे दिन देखे हैं, पर अब और नहीं। जाओ मुझे सोने दो।” मैंने अपनी मन की बात उसे साफ-2 बता दी और सच भी था मैं सारी जिन्दगी नहीं जल सकता था। पर अमित तो बस शादी पर ही अटक गया था वो जैसे भी हो मुझे शादी के लिए मनाना चाहता था पर मैं अपने फैसले पर अड़ा रहा।

“सोच लो राघव, मैं जानता हूँ प्यार तो तुम्हें उससे ही है। अगर निधि से खफा हो तो बात कर लो उससे। शादी को ठोकर ना मारो। भगवान प्यार में सब को ऐसा मौका नहीं देता है। गिने-चुने लोग होते हैं जीवन में जो प्यार को शादी में तब्दील कर पाते हैं। किस बात की जलन है तुम्हें उससे?”अब मैं उसे क्या बताता मेरी समझ से वो अब भी बच्चा ही था मैं उसे हिन्ट दे सकता था पर नहीं दी।

“मैं नहीं बता सकता हूँ। शादी उससे की तो उसका चेहरा देखकर मैं रोज जलता रहूँगा, बस यही समझ ले। मैं नहीं कर सकता उससे शादी।”

“पर नहीं बताओगे तो मैं कैसे मान लूँ कि वो तुम्हें रोज जलाती रहेगी?”

“बात तेरे समझ में नहीं आएगी। जब तुम इतने बड़े हो जाओगे तो मैं बता दूँगा कि वो बात क्या है।”

“तुम चाय पियोगे? मैं तुम से इस बारे में बात करना चाहता हूँ। मैं दस मिनट में चाय ले आता हूँ, जब तक सोना नहीं।” सोचने लगा इसे अब क्या बताऊँ घर के सबसे छोटे को समझाना ही मुश्किल है तो बड़ो को कैसे समझाऊँगा।

“मुझे नहीं पीनी है चाय। मैं सोने जा रहा हूँ। अमित, मैं तुम्हें सच कह रहा हूँ, अगर मैंने निधि से शादी की तो जिंदगी भर जलता रहूँगा।”

“बात क्या है? क्या वो तुम्हारी बेइज्जती करती है जो तुम उससे जलते हो? अब तो भाई तुम में और उसमें उसकी अमीरी भी नहीं पड़ती है। अगर उसमें पैसो का घमंड हो तो तुम्हारे पास भी बहुत है।”

“बात जलने की यह नहीं है, तुम नहीं समझोगे। ये जलन मैं आठ साल से सह रहा हूँ। अगर मैं वजह बताऊँ तो मान जाओगे कि ये शादी नहीं करनी चाहिए। बस तुम यही समझ लो कि हमारी शादी नहीं हो सकती।” मैं जानता था अमित अपनी पे आ जाए तो उससे कोई भी बातों में नहीं जीत सकता है उसके पास तर्कों का पूरा पिटारा रहता है।

“बहाने ना बनाओ। कोई ऐसी वजह नहीं हो सकती है। प्लीज कल निधि के पापा से ना मत करना, बड़ी उम्मीद से और खुशी से वे आ रहे हैं और तुम्हारे बीच जो भी बात हो गई है, उसको बात करके निपटा लेना। मैं भी जानता हूँ गाँव में जो तुम बंगला बनवा रहे हो, वो निधि के लिए है। तुम कहते हो आठ साल से जल रहे हो तो बंगला क्यों बनवा रहे हो?” सुनते ही मेरे कान खड़े हो गए।

“वो मैं अपने परिवार के लिए बनवा रहा हूँ, उस नकचढ़ी के लिए नहीं।”

“भाई जो भी हो, कल कोई बेवकूफी मत करना उसके पापा के सामने। मैं तो तुम्हें समझदार समझता था, तुम तो निहायत ही बेवकूफ निकले। कोई तेरह साल का प्यार चुटकियों में खत्म कर दे, वो भी ठीक शादी से पहले। प्लीज मम्मी-पापा को अपने अरमान पूरा कर लेने दो। इतनी खुशी इतने समय बाद घर आ रही है। अगर प्यार है तो हाँ कर देना।”

“जिससे जलन हो उससे शादी नहीं करते हैं। मैं तो सो रहा हूँ।” मैं सोने का नाटक करते हुए लेट गया। अमित पापा-मम्मी को मेरी ना के बारे में बताने चला गया पर वे सो गए थे। शायद उसने दो कप कॉफी बनाई और मेरे पास खड़ा हो गया कॉफी लेकर। मैंने सोने का नाटक किया तो उसने कहा, “नहीं उठे तो गर्म कॉफी गिरा दूँगा तुम्हारे ऊपर। मैं तीन तक गिन रहा हूँ।” लेकिन उसके तीन गिनने से पहले ही मैंने आँख खोल ली। अमित ने कहा, “भाई ऐसी लड़की नहीं मिलेगी। कल हाँ कर देना।”

देर से सोने के कारण मैं सुबह आठ बजे उठा। शुक्र था कि अमित ने हमारे बीच जो बात हुई पापा-मम्मी को नहीं बताई। पापा के पास गुप्ता अंकल का फोन

आया। उन्होंने कहा कि वो दस बजे आ जाएँगे, इसलिए पापा ने मुझे जल्दी तैयार होने को कहा। मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। इसी बीच मैंने सुबह की चाय भी पी और सर्दी के कारण रजाई में लेट गया। मैंने सोच लिया मैं अभी शादी के ना करने के बारे में किसी से नहीं कहूँगा। जब गुप्ता अंकल आ जाएँगे तो सभी के सामने ना कर दूँगा या कह दूँगा अभी शादी नहीं करना चाहता हूँ। मम्मी ने एक घंटे बाद नहाकर तैयार होने को कहा। इसलिए मैं तैयार हो गया और घर के सामान्य कपड़े पहन लिए।

ठीक दस बजे घर की घंटी बजी। मम्मी ने दरवाजा खोला। गुप्ता अंकल आ गए थे, साथ में आंटी भी थी जिन्हें देखकर मेरी मम्मी खिसिया गई। वजह थी कि घर में पहले आदमी ही रिश्ता लेकर आते हैं। वो इसे अपशगुन मान रही थी। पर अमित ने मम्मी को शांत रहने और चाय-पानी पूछने को कहा। मम्मी ने सबका स्वागत किया।

बात पहले आंटी ने शुरू की, “आज ज्यादा ही ठंड है।”

पापा ने कहा, “हाँ ठंड कुछ ज्यादा है आज कोहरा भी है।”

धीरे-धीरे बातें चलने लगी। गुप्ता अंकल ने जल्द ही रिश्ते की बात करनी शुरू की।

“हम अपनी बेटी के लिए आप के लड़के का रिश्ता चाहते हैं। निधि ने बताया ही होगा।” पापा ने मुस्कराते हुए अंकल की तरफ देखा, “हाँ हमें मालूम है।”

अंकल ने कहा, “तो हम रिश्ता पक्का समझें?”

पापा ने कहा, “हाँ बिल्कुल, पक्का समझें।” पापा के हाँ करते ही घर में रौनक आ गई सभी ने पहले मुँह मीठा किया। निधि की मम्मी ने मेरी मम्मी को गले लगाया। गुप्ता अंकल ने पापा से हाथ से हाथ मिलाया। सभी बहुत खुश लग रहे थे। अमित ने मेरी तरफ आँख मारी।

निधि की मम्मी ने कहा, “हम डेस्टिनेशन मैरिज करना चाहते हैं, हमारी बेटी गोवा में शादी करना चाहती है।”

मम्मी ने कहा, “आप जैसे चाहें पर ऐसी शादी हमने नहीं देखी है। खर्च वगैरह आप ही बता दें।”

गुप्ता अंकल ने कहा, “आप चाहें तो ये सारा खर्च लड़की वालों की तरफ से ही करवा सकते हैं। हमारी एक ही लड़की है, हम आपके आभारी रहेंगे।”

“पर भाई साहब, हमारे भी कुछ अरमान हैं। मतलब कि हम नहीं चाहते हैं कि सारा बोझ आप पर पड़े।”

मैं ये सब सुन रहा था। मैं सोच रहा था कि मेरी शादी कर रहे हैं और मेरे से ही कुछ पूछा नहीं जा रहा है। और ये भी कि मुझे शादी करनी है या नहीं। मैं उठकर उनके पास जाना ही चाहता था कि अमित ने कहा, “भाई चाय भी ले जा।”

ये सुनकर मुझे गुस्सा आया। मैं अमित को मारने चला पर मुझे याद आया मुझे शादी के लिए मना करना है। मैं हॉल की तरफ बढ़ा पर आमित ने मुझे खींचकर वहीं बैठा लिया।

“भाई नासमझ मत बनो। बातें होने दो भाई।”

तभी निधि की मम्मी ने कहा, “समधन जी, आप शायद नहीं जानती हमारे बच्चों का प्यार तो बारह-तेरह साल से चल रहा है। निधि तो सारे टाइम छत पर ही रहती थी।” ये सुनकर सब हँसने लगे।

मम्मी ने कहा, “हमारा बेटा तो स्कूल से आते ही छत पर चढ़ जाता था।”

पापा सुनकर मुस्कुराए और गुप्ता अंकल भी। आंटी ने कहा, “बड़ा ही होनहार दामाद मिला है। कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है आप लोगों को। कुछ ही समय में समधन जी आप राघव से कहकर मछली मारने का काम बंद करवा दें।”

“हाँ समधन जी, मैंने भी उसे जीव हत्या के काम को बंद करने को कहा है पर आजकल के लड़के सुनते कहाँ हैं।”

बातें चलती रहीं। मैं और अमित सुन-सुन कर कमरे में हँसते रहे, पर मैं भी अपने को तैयार कर रहा था शादी के ना कहने के लिए। तभी अमित ने कहा, “भाई चाय घूँघट में लेकर जाना।” ये कहकर वो हँसने लगा।

तभी मम्मी ने आवाज लगाई, “अमित, जरा शरबत रसोई से ले आ।”

मैंने अमित से कहा, “जरा घूँघट खोलकर जाना, जिससे तुम्हारा चेहरा तो दिखे।” अमित ने सड़ी-सी सूरत बनाई।

दोनों परिवारों के बीच काफी देर तक बातें होती रहीं। अमित भी अब जाकर हॉल में बैठ गया। तभी गुप्ता अंकल ने कहा, “ये राघव क्यों अंदर शरमा के बैठा है, जरा उसे भी बुलाओ।”

मैं अपने आप ही हॉल में आ गया। मैंने सबको नमस्ते कहकर बैठ गया। थोड़ी देर हाल-चाल लेने के बाद मैंने अपनी बात सब के सामने रखी।

"अंकल, मैं दो साल शादी नहीं करना चाहता हूँ।" ये सुनकर पूरे हॉल में सन्नाटा छा गया। सब चुप हो गए। अमित की आँखों में आँसू आ गए। गुप्ता अंकल ने कहा, "बेटा, इस साल शादी नहीं करना चाहते हो तो सगाई कर लो। अगले साल शादी कर लेना।"

"नहीं अंकल, ऐसी बात नहीं है। मैं सगाई भी नहीं करना चाहता हूँ।"सभी ने मेरी बात ध्यान से सुनी मेरी मम्मी ने मेरी तरफ आँख निकाली जैसे वे मेरे साथ जब करती थी जब वे मेरे से खुश नहीं होती थी पर मैं जब बच्चा था। मैंने निधि की मम्मी के सामने हाथ जोड़े पर उन्होंने मुझे नजरअन्दाज कर दिया। निधि के पापा ने कहा

"पर बेटा इतनी देर से तुमने ये बात क्यों नहीं बताई? तुम पहले भी ना कर सकते थे या हमारी तरफ से कोई गलती हो गई है।"

"नहीं अंकल, ऐसा कुछ नहीं है और मुझसे किसी ने पूछा ही नहीं मुझे शादी करनी भी है या नहीं। आप जो भी समझें। मैं ये शादी नहीं कर सकता हूँ।"

निधि की मम्मी की आँखों में आँसू आ गए। मेरी मम्मी ने बात को सँभालते हुए कहा, "निधि और इसके बीच शायद झगड़ा हो गया होगा। हम इसे मना लेंगे, आप फिक्र ना करें।"

मैंने कहा, "नहीं आंटी, हमारे बीच ऐसी कोई बात नहीं हुई है। आप निधि से पूछ सकती हैं और जहाँ तक शादी की बात है मैं उसे बस एक दोस्त मानता हूँ। हमारे बीच प्यार जैसा कोई रिश्ता नहीं है।"

ये सुनते ही निधि की मम्मी रोते हुए वहाँ से चली गई। निधि के पापा भी धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए चले गए। मुझे उनका दिल टूटने से ज्यादा निधि की चिंता थी कि ये सुनकर वो क्या करेगी।

जैसे ही अंकल बाहर गए, पापा मेरी तरफ बढ़े। मैं उन्हें कुछ कहना ही चाहता था कि उन्होंने तेज थप्पड़ मुझे मारा। मैं सोफे पर जा गिरा, "कमीने, शादी करनी ही नहीं थी तो उन्हें बुलाया ही क्यों था? पहले मना नहीं कर सकता था? इतनी बेइज्जती क्यों की उनकी और किस टाइप की लड़की चाहिए तुम्हें? कोई नई ढूँढ ली है गाँव की घाघरे वाली? कमीने, मेहमानों का अपमान नहीं किया जाता और क्या कह रहा था तुझसे शादी के लिए पूछा नहीं गया? एक हफ्ते से क्या चल रहा था तुझे नहीं पता था? बता नहीं सकता था कि अभी शादी नहीं करनी है और शहर के इतने अच्छे लोगों को कौन ना करता है? देखा नहीं शादी का सारा खर्च करने

को तैयार थे, ऐसे भले लोग मिलते हैं? आवारा कहीं के!" ये कहते हुए वो दोबारा मुझे थप्पड़ मारने को बढ़े। लेकिन मम्मी और अमित ने उन्हें रोक दिया।

वो सोफे पर सर पकड़कर बैठ गए और कहने लगे, "क्या तुम्हें अच्छे लोगों की समझ नहीं है? तेरे जैसा बदचलन नहीं देखा। गोवा में भी तुम एक ही रूम में रुके थे, तब समझ में नहीं आया कि वो तेरी दोस्त है या महबूबा? वहाँ तो तुझे कोई फर्क नहीं पड़ा।" मेरी आँखों में भी पानी आ गया। मैंने नहीं सोचा था कि ना कहने से इतना बड़ा बवाल हो जाएगा। मैं तो सोच रहा था सब मेरी बात को सुन कर मेरे फैसले की कदर करेंगे। पापा अभी सर पकड़े ही बैठे थे

मम्मी ने भी अब मोर्चा सँभाल लिया, "ऐसा रिश्ता लाखो में भी नहीं मिलता है। अगर दहेज भी तुम्हें चाहिए था तो मिल जाता। शादी भी गोवा में होती, दो-चार पैसे कमाकर कोई अरबपति नहीं हो जाता है। कोई गुण नाम की चीज नहीं है तुम में जो मुँह काला करने में भी तुझे शर्म नहीं आई? कितनी प्यारी लड़की है। लड़के आगे-पीछे घूमते हैं उसके। ऐसा रिश्ता नहीं मिल सकता है तुझे। तेरह साल से उसकी भावना से खेलता रहा है तू।"

पापा ने कहा, "अभी भी मान जाए तो देर नहीं हुई है। हाथ-पैर जोड़कर मना लेंगे उन्हें। सोचकर बता दे।"मेरे भी अन्दर भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा था पर मैं सोच रहा था की पापा-मम्मी का गुस्सा थोड़ी ही देर में शान्त हो जाएगा। पर मैं गलत था। मम्मी ने कहा "ये क्या बोलेगा, मैं ही उनके घर जाकर माफी माँग लूँगी। तेरे मम्मी-पापा का कोई ऐसा अपमान करे, तो पता चले। तुझे अगर शादी नहीं करनी थी तो प्यार क्या उसे बहन बनाने को किया था? बेटा, बुढ़ापे में इतना बड़ा बोझ बेइज्जती का मैंने कल्पना भी नहीं की थी अपने बच्चों से। मैं तो कहती थी मेरे बच्चे औरों जैसे नहीं हैं, वे अपने सभी फैसले अपने माँ-बाप पर छोड़ते हैं। भगवान हमें नरक में भी जगह नहीं देगा। उस लड़की में कुछ कमी हो तो मना भी करता। सुंदर वो, संस्कारी वो, तुझसे ज्यादा पढ़ी-लिखी वो और प्यार भी तुझसे ही करती है वो। अगर रास्ते से निकल जाए तो लोगों की आँखें फटी रह जाएँ। तूने तो एक मकान ही बनाया है, उसकी तो कई कोठियाँ हैं दिल्ली में। रंग भी देख इससे ज्यादा गोरी लड़की नहीं मिलेगी। अगर तेरी दुल्हन बने तो रुतबा बढ़ जाएगा तेरा। तेरे जैसे आगे-पीछे घूमते हैं उसके।"

मैं सुनकर अब रोने लगा और सिसकियाँ लेता रहा। अमित ने भी मुझे सुनाया, "तेरे से ज्यादा अच्छी है वो। क्यों शादी नहीं करना चाहता है उससे भाई? किसी

और से प्यार है तो बता अब भी समय है। मम्मी उनके घर जाकर माफी माँग लेगी।"

मैंने कहा, "पापा, इतनी अच्छी नहीं है वो। मैंने गोवा में एक रूम नहीं बुक किया था। मुझे तो मालूम ही नहीं था एक ही रूम में रहेंगे हम दोनों। ये उसी का काम था। शराब पीती है वो, मांस खाती है, भोली नहीं है वो। पर मैं उसके रूम में साथ रहकर भी करीब नहीं गया उसके।" पर पापा ने मेरी बात को ज्यादा तूल नहीं दिया मैं सोच में डूब गया की ये मेरे ही परिवार के लोग है जो सब उस निधि की तरफ हो गए हैं। मेरी किसी को परवाह ही नहीं है जैसे। मैं अपनी शादी किसी से भी करूँ ये मेरा मैटर है ये सब क्यों मेरे ऊपर दबाव डाल रहे हैं। मैं किसी से भी शादी करूँ मैं बच्चा नहीं हूँ मेरे अन्दर भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा था।

"तो ये कहना चाहते हो कि तेरे काबिल नहीं है? मैंने दुनिया देखी है, उसमें खोट है तो तेरी माँ में भी खोट है और मुझ में भी है। और जहाँ तक शराब की बात है, तू भी शराब पीता है और मांस खाता है।"

"अगर वो घर पर भी शराब पीती तो आप क्या करते? वो मुझसे भी ज्यादा पीती है। पापा, लोग हम पर हँसते कि कैसी शराबी बहू लाए हैं आप।"

"जानता हूँ, एक अकेली संतान है वो पर थोड़ी बिगड़ गई होगी और मांसाहारी है तो तुम कौन से कम हो? मछलियों की हत्या तो तुम भी करते हो। शायद उन मछलियों की ही हाय लगी है तुम्हें जो अपना अच्छा-बुरा नहीं समझ आ रहा है। अगर तुम अब भी हाँ कर देते हो तो उन्हें मनाकर फिर से तुम्हारा रिश्ता जोड़ दूँगा।" पर इतने कलेश होने पर भी मैं अपनी बात पर अड़ा रहा।

"नहीं पापा, मैं नहीं कर सकता उससे शादी।"

"तो फिर क्या चाहते हो?"

"कुछ नहीं। आ पमेरा रिश्ता कहीं भी कर दो, निधि को छोड़कर, मैं हाँ कर दूँगा। निधि से शादी नहीं करूँगा।"

"कमीने अब भी सोच ले।"

"नहीं पापा, मैं सोचकर ही बोल रहा हूँ।"

"ठीक है मेरे बेटे, मेरे से ही भूल हो गई थी तुम्हें समझने में। पर बता रहा हूँ ऐसी लड़की फिर नहीं मिलेगी।" वो सर पकड़कर बैठ गए, "भगवान माफ करना, अतिथि अपमान के लिए। देखता हूँ कैसी लड़की से तुम्हारी शादी होती है। मैं कब से समझा रहा हूँ कि अभी देर नहीं हुई है। मैं उनके घर जाकर उनसे माफी माँग लूँगा।"

“नहीं मैं हाँ नहीं कर सकता। अगर फिर भी आपको लगता है मेरी शादी मेरी मर्जी से ना हो, तो उन्हें हाँ करके आ जाओ। आप समझ नहीं रहे हो, कोई तो दोष होगा उस में जो मैं ना कर रहा हूँ।” ये कहकर मैं कमरे में चला गया।

करीब एक घंटे तक रोता रहा। पापा के थप्पड़ का निशान मेरे गाल पर था। मैंने अमित को आवाज लगाई पर वो मेरे पास नहीं आया। मैं उसे अपनी सफाई देना चाहता था पर वो नहीं आया।

अगले दिन तक मेरे घर में सन्नाटा छाया रहा। मेरे से कोई बात नहीं कर रहा था पर मैं निधि से शादी करूँ मुझे कबूल नहीं था। मैंने सोचा पापा-मम्मी और अमित दो दिन में सब भूल जाएँगे। अगर शादी की तो सारी उम्र जलन और तड़प झेलनी पड़ेगी। अगले दिन जब मैं गाँव गया तब तक निधि का कोई फोन मेरे पास नहीं आया। तीन-चार दिन बाद निधि का फोन आया। फोन उठाते ही उसने कहा, “तुम क्या समझते हो मेरी शादी तुमसे नहीं होगी तो क्या मेरी शादी ही नहीं होगी? मेरे घर पर किसी और लड़के की बात चल रही है, पर राघव तुमने मुझे ना क्यों कहा, ये मैं जानना चाहती हूँ।” मेरे समझ में नहीं आ रहा था उसे क्या जवाब दूँ।

मैंने साँस ली और कहा, “अब मैं तुम्हें क्या बताऊँ। मुझे तुमसे प्यार नहीं है अगर तुम मुझसे दोस्ती रखना चाहती हो तो मैं तैयार हूँ, पर तुम इस रिश्ते को शादी तक बढ़ाना चाहती हो तो मेरे लिए यही रास्ता है 'ना' का।” मैंने एक ही साँस में ये सब कह दिया पर मैं उस का और दिल नहीं दुखाना चाहता था। मैं भी इस सब में ज्यादा नहीं पड़ना चाहता था।

“तुम से दोस्ती रखे मेरी जूती और मैं एक बात बताना चाहती हूँ। मैं इस सर्दी में शादी करने जा रही हूँ। लड़कों की कमी नहीं है मेरे पास, मुझे कोई भी मिल सकता है।”

“मुझे माफ कर देना निधि। तुम्हें लड़कों की क्या कमी है, सही कह रही हो निधि। मैं तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहता था पर क्या करता, मेरे अंदर तुम्हारे लिए वो प्यार नहीं रहा जो पहले था।”

“हाँ मैं जानती हूँ कोई और मिल गई होगी, नहीं तो तुम मना नहीं करते। एक बात मैं तुझे बता रही हूँ, अगर शादी से पहले मैं मर जाऊँ तो भगवान तुम्हें मेरी मौत का कारण समझे। अब मैं जीना नहीं चाहती। मैंने तुम्हारे साथ जाने कितने सपने सजाए थे। मैं तेरी दुल्हन बनना चाहती थी पर राघव, मेरे प्यार में क्या कमी रह गई थी जो तुमने ना का ऐसा थप्पड़ मुझे और मेरे पेरेंट्स को मारा है? मैं सोच रही थी

कि तुम मेरे घर दुबारा हाँ करने आओगे, पर तुम नहीं आए।” उसने रोते हुए कहा मुझे अपराध बोध हुआ पर मैं अपनी बात पर कायम था।

“निधि भगवान के लिए मुझे माफ कर देना। मैं तुम्हारे मम्मी-पापा का अपमान नहीं करना चाहता था पर मैं ऐसी हालत में पड़ा था कि अगर मैंने तुमसे शादी की हाँ की होती तो सारी उम्र उस शादी को ढोता रहता।” मेरी ये बात पूरी होने से पहले ही उसने फोन काट दिया।

मैं भारी मन से पशुओं को देखता रहा। सोचने लगा कि मैंने सही किया या गलत। मैं उससे नफरत तो हरगिज नहीं करता था, पर वंश से तो करता था। मैं जिंदगी भर वंश के कारण जलता रहूँ, मैं ये हरगिज नहीं चाहता था। मैंने फिर अपने ऑफिस के काम निपटाए और पैसों का हिसाब किया पर बार-बार निधि पर ध्यान चला जाता था।

अध्याय-20

एक हफ्ता बीत चुका था मुझे महरौली से गाँव आए हुए। ये एक हफ्ता बड़े दुख से गुजरा था। मैंने शादी से इनकार करके सही किया या गलत, समझ में नहीं आ रहा था। कभी लगता सही किया तो कभी लगता गलत। मैंने मना करके अपने बचपन के प्यार को खो दिया था। कई बार लगता शायद मेरी शादी निधि से होनी ही नहीं थी। मैं निधि से प्यार तो अब भी करता था, नहीं तो हफ्ता इतना बुरा नहीं गुजरता। एक बार सोचा हर प्यार शादी के लिए नहीं होता है। कुछ प्यार तो महीने में ही टूट जाते हैं, पर मेरा प्यार तो तेरह साल तक चला। फिर भी वंश को सोचकर हमेशा जलने से अच्छा था कि मैंने पहले ही मना कर दिया। कई बार ये सोचता था कि शादी के बाद मैं वंश को भूल भी गया होता पर लगता था इतने साल नहीं भूला तो अब कैसे भूल जाता उस कमीने वंश को। इसलिए मैंने जो किया वो सही था।

मैं जब से महरौली से आया था मेरा खाना-पीना आधा भी नहीं रह गया था। मैंने सुबह खाना नहीं खाया था, पर अब मुझे भूख लग रही थी। रहीम और उसकी बीवी गाँव में किसी की शादी में गए थे, तो खाना कौन बनाता। रहीम ने सत्ते को फोन कर दिया था कि दो दिन मेरा खाना पहुँचा दे। सत्ते खाना लेकर आया था। आलू के पराठे थे। मैंने अब खोलकर देखे थे पर ये अब खाने लायक नहीं बचे थे इसलिए मैंने नहीं खाए। रात को भी सत्ते को खाना लाना था पर मुझे पता था वो दस-ग्यारह बजे से पहले नहीं आने वाला था। वो रघुवीर के साथ कहीं दारू पी रहा होगा इसलिए मैंने अपने लिए चाय बनाई, नमकीन भी कमरे में थी ही तो चाय के साथ मैं नमकीन खाने लगा।

मैं रात को ही खेत में घूमने लगा। वहाँ बहुत-सा गोबर इकट्ठा हो गया था जिससे गोबर की बदबू आ रही थी। मैंने अपने यहाँ काम कर रहे लड़के से कहा, “इस गोबर को कहीं दूर क्यों नहीं फेंका?”

उसने कहा, “भईया जी, रहीम घर पर नहीं है और आपने भी इसे नहीं बेचा इसलिए।”

“हम ये गोबर खाद के लिए गाँव वालों को बेच देते थे जिसके बदले में हमें पैसे मिल जाते थे। तो फिर दूर क्यों नहीं फेंका?

“वो भईया गलती हो गई, कल या तो इसे बेच देंगे या दूर फेंक देंगे।”

मैंने कहा, “ठीक है, कल इसे यहाँ से हटा देना।”

रात के दस बज रहे थे। सत्ते और रघुवीर मेरे पास आ गए। रघुवीर ने मेरे से बात करनी छोड़ दी थी तो उसने एक हफ्ते बाद मेरे से हाथ मिलाया। वो मेरे से इसलिए बात नहीं कर रहा था कि मैंने निधि का मन दुखाया था।

सत्ते और रघुवीर के जाने के बाद मैंने खाना खाया लेकिन कम ही खा पाया। मैं प्यार में तड़प रहा था। मैं अपने आपको निधि के बारे में सोचने से रोक रहा था पर मेरा दिमाग उसी पर लगा रहता। मैं तेरह साल के रिश्ते से बाहर नहीं निकल रहा था। मेरा अपने काम में बिल्कुल मन नहीं था। मैंने टीवी चालू किया और निधि को भुलाने के लिए फिल्म देखने लगा पर मुझे फिल्म समझ नहीं आ रही थी। मुझे निधि के अलावा कुछ समझ नहीं आ रहा था। झल्लाकर मैंने टीवी को बंद कर दिया।

मैं सोने की कोशिश करने लगा पर नहीं सो पाया। मेरा दिमाग प्यार की टेंशन से निकल नहीं पा रहा था। मैंने सारी रात जागकर काटी। एक बार तो लगा मैं निधि के घर पर जाकर उससे माफी ही माँग लूँ। पर दिमाग ने फिर से जलन बढ़ा दी। वंश मुझे चिढ़ा रहा था हँस-हँसकर। कोई सुबह चार बजे मेरी आँख लगी।

सुबह के छह बज रहे थे जब रहीम ने मुझे उठाया, “भईया, रात को भी आप ने कम खाया और सुबह भी आप ने कुछ नहीं खाया है।” मैंने उसे कुछ नहीं कहा। उसने सुबह के पराठे और रात का खाना देखकर कहा था।

“भईया कहो तो अब जल्दी खाना बना दूँ।”

“नहीं रहीम, मुझे अभी कुछ नहीं खाना है। भूख नहीं लग रही है।”

“भईया, आप निधि के प्यार में इतनी तकलीफ क्यों सह रहे हो? आप जाकर उनके घर निकाह की बात क्यों नहीं करते? नहीं तो आप किसी मानसिक बीमारी में पड़ सकते हो।”

“नहीं रहीम, मैं अब उसके घर नहीं जा सकता, मैं अब दूर निकल चुका हूँ।”

“भईया, आप कोशिश तो कर ही सकते हो, अगर वो ना कहें तभी आगे की सोचना। ये प्यार है भईया, सारी उम्र की तड़प सहन करना आप के लिए आसान नहीं होगा।”

“रहीम, अगर मैं उससे शादी करता हूँ तो इससे भी ज्यादा तड़पना होगा।”

“ठीक है भईया, आप नहीं चाहते हो तो उससे शादी ना करें पर मैं ये जानता नहीं हूँ उसने ऐसा क्या कर दिया जिसका बोझ आप नहीं उठा पाएँगे।”

“रहीम, बहुत बड़ी बात है, इसलिए शादी नहीं करना चाहता हूँ। शादी ना करने का तो मैं बोझ झेल सकता हूँ, पर शादी के बाद मैं रोज क्यों जलता रहूँगा, मैं ये नहीं बता सकता।

“भईया, न बताना चाहते हों तो ना बताएँ पर अगर बता देते तो हलके जरूर हो जाते। सुकून भी मिलता। आप शायद प्यार को नहीं जानते, जितना ये प्यार खुशी देता है, उतना ही न मिलने पर दुख भी देता है।” वो बिलकुल सही कह रहा था शायद वो उस प्यार की तड़प जानता था जो मुझे हो रही थी पर मैं उसकी बात ही सुन सकता था मुझे एक बात पर ज्यादा डर था वो थी कहीं वो जल्दी ही शादी ना कर ले पर मैंने रहीम को ये सब नहीं बताया।

“पर रहीम, मैं उसे दो महीने में ही भूल जाऊँगा। मेरा मन मुझे धीरे-धीरे बदल देगा। जाओ और सभी को काम पर लगा दो नहीं तो कोई बीड़ी पीता रहेगा या कोई खैनी रगड़ता रहेगा। मेरी फिक्र मत करो।”

“ठीक है भईया।” ये कहकर वो अपने काम को देखने लगा।

दो दिन बाद मेरे पास सत्ते का फोन आया। उसने कहा, “राघव, तुमने बताया नहीं निधि अगले हफ्ते शादी कर रही है?”

“क्या बकवास है! ऐसा कुछ नहीं है, नहीं तो मुझे जानकारी नहीं होती? तुम्हें किसने बताया?” ये सब सुनकर मेरे ऊपर बिजली-सा प्रहार हुआ।

“राघव, मेरे पास निधि का कार्ड आया है। उस में रविवार की तारीख में शादी लिखी है। साथ में निधि ने फोन भी किया है।”

“सच में ऐसा है?”

“हाँ भाई सच कह रहा हूँ।”

“उसने मेरे पास शादी का कार्ड नहीं भेजा है। हमारे रिश्ते बेशक खत्म हो गए हैं पर दोस्त के नाते ही कार्ड भेज देती। तुम्हें कार्ड किसने दिया है?”

“कूरियर से आया था। लड़का वसंत कुंज का है। भाई, अगर तुम चाहो तो एक बार फिर से उससे बात करके देखो।”

“नहीं सत्ते, मैं बहुत आगे आ गया हूँ। अब देर हो चुकी है।”

“पर भाई तुम्हारा क्या होगा, ये सोचो।”

“क्या होगा? मुझसे वो शादी नहीं करती तो करने दो उसे शादी। एक ना एक दिन तो होती ही उसकी शादी कहीं न कहीं।”

“पर भाई...”

"पर-वर छोड़ो...मेरा तो उससे पीछा छूटेगा।" मेरा डर सच साबित हुआ। वो शादी करने जा रही थी और मैं हाँ-ना पर अटका पड़ा था।

"पर भाई, तुम्हारा हाल क्या हो गया है, दस दिन में तुम सूखी-सी लकड़ी लगते हो! चेहरा पिचक गया है! अगर तुम अपनी शादी की बात नहीं कर पा रहे हो तो पापा-मम्मी से कहूँ तुम्हारी शादी की बात करने के लिए?"

"नहीं सत्ते, अब इसकी जरूरत नहीं है।"

"पर भाई, अभी तो समय है। एक बार बात करके देख लेते हैं।"

"मैं उससे प्यार नहीं करता और तुम मेरी फिक्र मत करो। मैं बिलकुल ठीक हूँ। वजन तो मैंने अपने आप घटाया है।"

"ठीक है भाई। मैं फोन रखता हूँ।"

उसके फोन के बाद रघुवीर का फोन आ गया। मैं फिर से निधि के बारे में दोबारा बात नहीं करना चाहता था पर उसने मेरे पास तीन फोन कर दिए। मैंने हारकर फोन उठा लिया। उससे भी अंत में यही कहा कि मैं उससे प्यार नहीं करता। उसके बारे में मेरे से बात नहीं किया करो। वो मुझे दोस्त तक नहीं मानती है नहीं तो कार्ड भेज देती। बात करके मैं उखड़ गया। मैं अपने को असुरक्षित महसूस करने लगा। मैंने सर पर रजाई डाली और रोने की कोशिश करने लगा। मुझे रोना आ रहा था पर मैं नहीं रो पाया। आँसुओं ने मेरा साथ छोड़ दिया। जब निधि मेरे से ऐसे बिछड़ने लगी तब मेरी समझ में आया कि मैं तो उसके बगैर नहीं रह सकता हूँ। मैंने फोन को उठाया और देखने लगा कोई मिस कॉल निधि की आई हो, पर उसका कोई फोन नहीं आया था। तभी व्हॉट्सएप पर निधि का मैसेज आया। जिसमें एक शादी का कार्ड था। कार्ड को अंदर और बाहर से चार फोटो में दिखाया था।

कार्ड देखकर मेरी आँखों में आँसुओं का सैलाब ही आ गया। मैं देर तक रोता रहा। मैंने निधि से ऐसी उम्मीद हरगिज नहीं की थी कि वो शादी कर ले। पर अब कर भी क्या सकता था। मुझे लगा अब देर हो चुकी है। मैंने कार्ड को ध्यान से देखा। इस कार्ड में नीरज नाम के किसी लड़के की शादी निधि से हो रही थी। कार्ड के बाहर गणेश के साथ दूल्हा-दुल्हन की फोटो माला पहनाते हुए थी।

मैं रजाई में पड़ा-पड़ा कई घंटे रोता रहा। उसके बाद कब मैं सो गया मुझे पता नहीं था। रात को मेरे फोन पर एक मैसेज आया तो मेरी नींद खुल गई। मैसेज निधि का था। लिखा था- 'कमीने शादी कर रही हूँ।' उसके बाद गंदी गाली थी। फिर

लिखा था- ‘मेरी शादी से जलन हुई या अभी रो रहे हो या खुश हो? जानती हूँ आँख तुम्हारी भी भारी ही हो गई होगी। शादी के बाद देश छोड़कर जा रही हूँ। नीरज कनाडा में रहते हैं। आगे मैं जिंदगी भर वहीं रहूँगी। जानते हो नामी डॉक्टर है वो। रात में जापान तो दिन में अमेरीका में रहते हैं, तुम्हारी तरह गाय-भैंस का तबेला नहीं चलाते हैं। क्या सोच रहे हो मैं ये सब तुम्हें क्यों बता रही हूँ, इसलिए कि तुम्हें भी पता चले कितना अच्छा रिश्ता मिला है। तुम अपना जलना जारी रखो। एक और बात बड़ा ही ध्यान रखने वाला है, वो तुम्हारे मम्मी-पापा को भी शादी में बुलाया है और हाँ शादी भी गोवा में नहीं हो रही है। मम्मी-पापा के पैसे भी बच गए हैं। पापा कह रहे थे तेरे जैसे कमीने से अच्छा है शादी नहीं हुई। कहाँ तबेला चलाने वाला और कहाँ सर्जर डॉक्टर! अगर तुम्हें अब भी जलन ना हो रही है तो पूरा जानवर है जिसे प्यार की समझ नहीं है।’

मैसेज यहीं तक था। एक बार पढ़कर लगा हँसूँ या रोऊँ। तभी उसका एक और मैसेज आया। लिखा था- ‘मैसेज पढ़ने के लिए धन्यवाद। मुझे तो लगा तुम ये मैसेज सुबह पढ़ोगे राघव, अगर तुम मान जाओ तो मैं ये शादी नहीं करूँगी। पर एक बार नीरज से शादी कर ली तो हरगिज तुम्हारी नहीं बनूँगी। मैं तुमसे शादी के लिए अपने पापा को मना लूँगी। सोचकर सही फैसला करना। मैं जानती हूँ तुम सही निर्णय नहीं ले पाते हो। फैसला सही लेना, नहीं तो एक नहीं तीन जिंदगी खराब हो जाएगी। एक तुम्हारी, साथ में नीरज से प्यार नहीं कर पाने के कारण उसकी और तीसरी मैं जो अपने प्यार से शादी नहीं कर पाने से परेशान रहूँगी। फैसला तुम्हारे हाथ में है, सोचकर सही निर्णय लेना।’ इस मैसेज के बाद एक स्माइली थी।

मैंने मैसेज डिलीट कर दिए ताकि कोई मैसेज दोबारा ना पढ़ सके। मैंने निधि के बारे में ज्यादा नहीं सोचा। ये सोचकर कम से कम उसका मैसेज तो आया। एक हफ्ते बाद मैं उसको फोन भी करना चाहता था पर मेरी हिम्मत नहीं हुई। मैं सोचने लगा मुझे क्या करना चाहिए।

मैं उससे शादी करने की बात करूँ या नहीं। मैं सोने की कोशिश करने लगा ये सोचकर कि कल ही इस बारे में सोचेंगे। फिर सोचा कि अभी कुछ वक्त है मेरे पास या उसे कोई जवाब ही नहीं दूँ। इसी उधेड़बुन में मेरा दिमाग घूमता रहा।

अध्याय-21

मात्र छह दिन में ही मैं टूटने लगा। मैं निधि के सामने हार गया पर दिमाग में कशमकश चलती रही। मैंने अब दिल की न मानकर दिमाग की मान ली। फैसला ले लिया कि मैं उससे तो शादी हरगिज नहीं करूँगा। मैं घंटों रोता रहता। मेरा मन बगावत करता रहा। सोचता रहा कि पकड़ ले प्यार को, कि कहीं इतनी दूर वो हो ना जाए कि कभी हाथ ही ना आए। खाना-पीना तो ना के बराबर रह गया था।

कल उसकी शादी थी। मैं रो-रो के दीवार में मुक्का मारता, लात मारता, सर मारता। इसी बीच सत्ते और रघुवीर मेरे पास आए, जिनके गले लगकर मैं बहुत देर तक रोता रहा। वे मुझे कह रहे थे कि एक बार कोशिश करके देख शायद उसके अभिभावक शादी को रोक देंगे। पर दिमाग पर पत्थर पड़े थे। मैंने संकोच में फोन तक निधि को नहीं किया। मन बगावत करता रहा, आत्मा रोती रही, और दिमाग था कि मानता ही नहीं था। मैं गाँव के मंदिर में गया कि सबकी बिगड़ी बना देने वाले शायद मेरी भी बना दे। वहाँ बहुत से सन्यासी बैठे थे।

मैंने भगवान से कहा, “भगवान, अब आप ही कोई रास्ता दिखाओ। मैं निधि से ना ही शादी कर सकता हूँ ना ही उसके बगैर रह सकता हूँ।”

मैं कोई आधा घंटा शिव की मूर्ति के सामने खड़ा रहा पर दिमाग कुछ नहीं समझ पा रहा था। मैं हाथ जोड़कर पंद्रह मिनट और खड़ा रहा। उसके बाद मैं कृष्ण भगवान के चरणों में पड़ा रहा। मैं मंदिर में कुल दो घंटे तक रहा, पर भगवान ने कोई संकेत नहीं दिया। मैं हारकर मंदिर से बाहर आ गया।

घर पर आया तो रहीम ने कहा, “भईया, खाना ले आएँ क्या?” मैं कमरे में बंद रहा। उसने कई आवाज लगाई पर मैंने अनसुनी कर दी। मैं शून्य में खोया रहा। थोड़ी देर में वो दो रोटी ले आया।

मंदिर से आकर मैं बुत-सा बन गया था। मैंने जब बीस मिनट खाना नहीं खाया, तो रहीम मेरे पास आया, “भईया, मान जाओ, नहीं झेल पाओगे। एक बार निधि से बात तो करके देख लो, नहीं तो प्यार की तड़प में पागल हो जाओगे। अभी वक्त है। गाँव के कुछ लड़के लेकर उसे वहाँ से ले आओ। मैं जानता हूँ, निधि जी को। वो तुम्हें कुछ नहीं कहेंगी।”

“मैं अब वहाँ नहीं जा सकता। कल ही उसकी शादी है, अब कुछ नहीं हो सकता।” कहते-कहते मैं दहाड़ मारकर रोने लगा। “रहीम, मैंने उसे खो दिया है।”

“ठीक है भईया, आप वहाँ नहीं जा सकते तो एक बार फोन पर ही उससे बात कर लो। क्या पता कुछ हो जाए।”

मैंने कहा, “नहीं कर सकता। मैंने उसके माँ-बाप की बेइज्जती की है। अब किस मुँह से बात करूँ। सच में मुझे मर जाना चाहिए। वे मेरे लिए रिश्ता लेकर आए थे लेकिन मैंने उन्हें मना कर दिया। अब किस मुँह से बात करूँ जब उसकी शादी हो रही है। भगवान मुझे कभी माफ ना करे। मुझे उठा ले मैं जिंदा नहीं रहना चाहता हूँ, मेरे भगवान उठा ले।”

रात के बारह बजे किसी ने कमरे का दरवाजा खटखटाया। मैं अभी सोया नहीं था पर मैंने दरवाजा नहीं खोला। फिर से किसी ने दरवाजा खटखटाया। मैंने अंदर से ही कहा, “कौन है?”

“मैं हूँ।” एक बूढ़ी आवाज थी। महसूस हुआ कि वो आवाज कहीं सुनी लगती है। मैंने दरवाजा खोला। सामने अस्सी साल के एक साधु खड़े थे। साधू लम्बे चोड़े थे उन की पलक भी नहीं झपक रही थी हाथ में उन्होंने कई अँगुठियाँ पहनी थी मुझे लगा की शायद मैं इन साधू महराज को जानता हूँ पर याद नहीं आ रहा था मैंने इन्हें कहॉ देखा है। मैंने कहा, “आप कौन हैं?”

“मैं हूँ।” ये सुनते ही मैं समझ गया कि ये वही बाबा हैं जो मुझे खारी बावड़ी में मिले थे जिन्होंने मुझे गाँजा पिलाया था। मैंने उनके पैर छुए। उन्होंने सदा खुश रहो का आशीर्वाद दिया। मैं उनके गले लगकर रोने लगा, “बाबा मैंने अपना प्यार खो दिया अपनी गलती से। मैंने उससे शादी के लिए ना कर दी बाबा। मैं दुख में हूँ मेरे मन को शांत करो। मैं और नहीं जल सकता। मेरे अंदर बहुत दर्द है, मैं क्या करूँ।”

“बेटा सब्र कर। अभी से मत टूट। तू दोबारा कोशिश कर। वो तुझे मिल जाएगी।”

“नहीं बाबा, कल निधि की शादी है।”

तभी उन्होंने मेरे सर पर हाथ रखा तो मैं पता नहीं कहाँ खो गया। मुझे बाबा के हाथ रखते ही गाँजे जैसा नशा हो गया। बाबा ने कहा, “सब माया है।”

ये सुनकर मुझे नींद जैसा लगा और मैं पता नहीं कैसे सो गया। जब उठा तो बाबा वहीं बैठे थे। साथ में रहीम भी था। मैंने समय देखा तो सुबह के चार बज रहे थे।

“सब माया है। बेटा वो मर सकती है पर तुम्हारे अलावा किसी से शादी नहीं करेगी। मैं जानता हूँ उसको।” बाबा ने मेरे सर पर हाथ रखकर कहा।

"पर बाबा, आज तो उसकी शादी है। मुझे क्या करना चाहिए?"

"करना क्या है, ये तुम्हें तय करना है। मैं तो सिर्फ सलाह दे सकता हूँ।"

"पर बाबा, अब देर हो गई। अब उसकी शादी नहीं टल सकती।"

"वो तेरा प्यार है, किसी के हिस्से नहीं आ सकता। माता वैष्णो देवी की जय हो। सब माया है माया।"

"बाबा आप चाय पिएँगे।" रहीम ने पूछा।

"हाँ एक कप चल ही जाएगी।" बाबा ने कहा।

रहीम चाय बनाने चला गया। मैं सदमें में था कि आज निधि किसी और की हो जाएगी। ये खयाल आते ही मैं बेहोश हो गया। मेरे ऊपर किसी ने पानी डाला। रहीम चाय लेकर खड़े थे। बाबा चाय लेकर पीने लगे।

"बाबा उसकी शादी किसी और से हो गई तो क्या होगा? मैंने उसे शादी के बारे में जवाब देने में देर कर दी है।"

"बेटा मैं जानता हूँ, तुमने शादी के लिए क्यों मना की थी। एक बात तुम्हें बता रहा हूँ, ये आत्मा किसी के गलत करने से अशुद्ध नहीं होती। ये सदैव शुद्ध ही रहती है। ये गलती बस शरीर तक ही सीमित रहती है। कितना समय लगा दिया तुमने ये समझने में कि वो आज भी तेरा इंतजार कर रही है। जाओ तुम उसके पास।"

"पर जाकर कोई फायदा नहीं। शादी वाले दिन शादी को नहीं रोक सकते। भगवान अब उठा ले, अब सहन नहीं होता मुझसे। आठ साल से जल रहा हूँ, इस दर्द का अंत कर दे।"

"मेरे बच्चे, जिंदगी ऐसे समाप्त नहीं होती है। सब माया है। कभी माया से निकल के देखो।"

"पर बाबा, आज उसकी शादी कोई रोकने नहीं देगा। निधि को तो मैं जानता हूँ वो तो मान ही जाएगी, पर अब उसके घर वाले नहीं मानेंगे।"

"माता वैष्णो देवी का वरदान है वो। तेरे लिए उसे कोई नहीं रोक सकता।"

"पर आप कैसे कह सकते हैं कि उसकी शादी मेरे जाने से रुक जाएगी? अब देर हो गई है बाबाजी।"

"मैंने माता से माँगा है तुम्हारे लिए उसे।"

"पर माता से माँग लेने से वो मुझे कैसे मिल सकती है?" मैं असमंजस में था की क्या ऐसा हो सकता है।

"अगर माँगे हुए पर विश्वास हो तो माता उसे जरूर पूरा कर देती है। माता पर विश्वास करो, मन्नत पूरी होती है। जाओ और कोशिश करो।"

"पर बाबा मैं उसके बारे में सोचकर रातों में नहीं सो पाता हूँ जिससे वो मेरे लिए बेवफा हो गई थी। बाबा मैं इसी में फँसा बैठा था।"

"समझ सकता हूँ, तुम गलत नहीं हो पर क्या तुमने जिंदगी में कोई गलती नहीं की है? जिंदगी में कोई ना कोई गलती करता ही रहता है, जैसे उसने की है।"

बाबा जी को मैं शांति से सुन रहा था ये सोचकर कि वो मेरे बरसों के सवालों का उत्तर दे दें।

"बेटा, अगर कोई गलती कर भी दे और अब वो सही है तो उसे माफ कर देना चाहिए। सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते हैं। क्षमा जिंदगी का सबसे बड़ा दान है। ये शरीर की गलती तो इसी दुनिया में ही रह जाती है, पर आत्मा की गलती नहीं होती। शरीर छूट गया तो समझो गलती भी इस संसार में रह गई। आत्मा के परमात्मा से मिलने के बाद सब शुद्ध हो जाता है। जब गलती भगवान भी माफ कर देता है तो हमें भी उनका अनुसरण कर लेना चाहिए। आखिर हैं तो हम उनकी ही संतान।"

"पर बाबा, उसकी हँसी मुझे रात दिन सताती है।"

"पर बेटा, किसी से इतना भी नहीं जलना चाहिए। मैं जानता हूँ उसकी कहीं बात तुम्हें सताती होगी पर तुम उससे आगे ही नहीं बढ़ना चाहते हो। तुम अपने प्यार को और आगे ले जाओ और उसका सबसे आसान तरीका है तुम ये स्वीकार कर लो कि उसने गलती कर दी। अब आगे बढ़ो। सच में वो डरावनी हँसी कहीं बहुत पीछे छूट जाएगी। उसकी गलती अब भूत बन गई है और भूत को वर्तमान में लाओगे तो डर ही लगेगा उस गलती के भूत से।"

"पर बाबाजी, मैं आज उसकी शादी कैसे रोकूँ? मैं आज निधि से शादी के लिए कहूँगा तो कोई बवाल ना बन जाए। मुझे वहाँ जाने से डर लग रहा है। आप मेरी स्थिति समझ सकते हैं।"

"बेटा, तुम्हें प्रयत्न करना चाहिए। बिना संघर्ष के सफलता नहीं मिलती। माता का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। अगर उसे भी प्यार है तो वो तुम्हारा ही साथ देगी। वो अपने माँ-बाप से भी लड़ जाएगी। जाओ अपने प्यार को छीन लो। भगवान तुम्हें सफल करे। जय माता की! सब माया है माया।"

ये कहकर बाबाजी वहाँ से चले गए। मैं बैठा-बैठा कुछ देर तक सोचता रहा।

रहीम ने कहा, "बाबा की बात समझ नहीं आई वो किस बारे में कह रहे थे? आप किससे जल रहे हैं?"

"वो बात तेरी समझ में नहीं आएगी। मैं घर जा रहा हूँ।"

"भईया, आप के साथ मैं चल सकता हूँ?"

"नहीं जा सकते। यहाँ काम कौन देखेगा?"

"आप सत्ते और रघुवीर को ले जाएँ, पता नहीं वहाँ क्या मुसीबत आ जाए। किसी की शादी रुकवाना आसान काम नहीं है।"

"नहीं, मैं उनको किसी मुसीबत में नहीं डाल सकता।"

"पर भईया, मुझे डर लग रहा है। मेरी बात मान जाओ।"

"वहाँ मेरा घर है। साथ में मेरे दोस्त भी हैं। तुम्हें डरने की जरूरत नहीं है।"

उसके बाद मैं पाँच बजे महरौली के लिए निकल लिया। ये सोचकर मुझे निधि के घर वालों को समझाने में समय लगेगा पर मैं उन्हें मना लूँगा। मैंने गाड़ी सोहने की तरफ मोड़ दी। मैं खुद भी उधेड़बुन में था वहाँ शादी में मेरे साथ क्या होगा। मैं सोचते हुए गाड़ी धीरे चला रहा था पर मैं रुका नहीं। कई बार सोचा कि निधि के पापा से क्या कहूँगा कि अब मैं निधि से शादी करना चाहता हूँ। मैं निधि को आने से पहले फोन भी कर सकता था पर शर्म के कारण नहीं किया। मुझे बाबाजी के कहे पर पूरा भरोसा था। उन्होंने कहा था कि वो मेरा इंतजार कर रही है।

अगर निधि ने साथ दिया तो मैं उनके घर के लोगों को कैसे भी मना लूँगा। पर सवाल था कि वो अपनी शादी के दिन शादी ना करने का फैसला नहीं ले पाई तो! अगर मान भी गई तो क्या होगा उसके पापा मान जाएँगे? ये सोचकर नहीं माने कि उनकी कितनी बदनामी होगी इसलिए कनाडा वालों से शादी कर दी। मेरे दिमाग में यही चल रहा था। मैंने सोचा, एक बार कोशिश करके देख लेता हूँ, आगे भगवान की मर्जी। अगर मान गए तो बल्ले-बल्ले नहीं तो जिंदगी तो झंड होनी ही है। मैं मनाने लगा कि माता रानी वे मान जाएँ। मैं अब तेज चलने लगा।

मुझे याद आया कि उसकी शादी का डेस्टिनेशन तो में हरौली के कहीं आस-पास ही है। मैंने अपने फोन से कार्ड निकालकर व्हॉट्सएप पर देखा, कोई वसंत कुंज का गेस्ट हाउस था जहाँ पर शादी होनी थी। रास्ते में मुझे पुलिस वालों ने रुकवाया, गाड़ी के पेपर देखे। सोचने लगा कि इतने सालों में कभी ट्रैफिक वालों ने नहीं रुकवाया, पर आज जल्दी है तो ये भी इस दिन मिले हैं। रास्ते में मुझे सुबह-सुबह ट्रकों का जाम भी मिला। मैंने भगवान से कहा कि हे भगवान सुबह-सुबह भी

जाम मिलता है क्या! मैं जल्दी से निधि के घर जाना चाहता था। मैंने वसंत कुंज की ओर अपनी गाड़ी मोड़ दी।

अध्याय-22

मैं जैसे ही वसंत कुंज की तरफ मुड़ा मेरे हाथ-पैर फूलने लगे। मैंने रास्ते में एक तरफ गाड़ी को रोक दिया। पिछली सीट से पानी की बोतल निकाली और पूरी बोतल पी गया। मैं कुछ देर वहाँ रुका जब तक मैं सामान्य नहीं हो गया। उसके बाद मैंने दुबारा गाड़ी स्टार्ट की और आगे चल दिया।

मैं धड़कते दिल के साथ चल रहा था। एक किलोमीटर ही चला था कि सामने मोड़ के पास कोई सौ आदमियों का झुंड आ रहा था। झुंड किस चीज का था मुझे मालूम नहीं था। ट्रैफिक भी स्लो था। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा तब मेरी समझ में आया कि कोई अर्थी जा रही थी। मैंने मन में कहा 'शिव-शिव' और आगे बढ़ गया। मैंने किसी से सुना था कि अर्थी जा रही हो तो शिव-शिव कहने से उस आत्मा को शांति मिलती है और वह सीधा स्वर्ग की तरफ जाती है।

मैं अर्थी को गौर से देख रहा था। मैंने दूर से ही गुप्ता अंकल को पहचान लिया जो अर्थी के साथ-साथ चल रहे थे। वो अब मेरे पास आ रहे थे। मेरे दिल की धड़कन सौ की स्पीड में चल रही थी। देव, सोनू, भोपला भी मुझे दिखे। उनके चेहरे भी उदास थे। उनमें एक चेहरा वंश का भी था।

मैं समझ गया कि निधि मर गई है। मैंने देखा कि गुप्ता अंकल की आँखें रो-रोकर लाल हो गई थी। मैंने भगवान से कहा मुझे कभी माफ ना करना। मैं जल्दी में काँपते-डरते गाड़ी से उतर गया। मेरी आँखों में आँसू आ गए। मैं रोने लगा। मैं अर्थी के पास ना जा सका। लोग मेरे सामने से गुजरते चले गए।

मैं वहाँ से भागने लगा। मैं पता नहीं कहाँ भाग रहा था। मैं रो रहा था और भागे जा रहा था। मैं कुछ दूर ही भागा था कि अचानक दिल तेजी से धड़का और मैं बेहोश होकर गिर गया।

कुछ देर बाद मुझे होश तब आया जब किसी ने मेरी आँखों पर पानी डाला। उठते ही मुझे निधि याद आई। मैंने उन लोगों से रास्ता बनाते हुए कहते हुए भागा कि निधि मर गई, हे भगवान निधि मर गई! हे भगवान वो मर गई! भगवान निधि मर गई! बाबाजी निधि मर गई!

ये कहते हुए मेरे मुँह से लार और आँखों से आँसू निकल रहे थे। लोग जो वहाँ थे स्तब्ध होकर मुझे देखते रहे। मैं उनके आगे से भागने लगा। रास्ते में मुझे ठोकर भी लगी पर मैं भागता ही रहा। मेरे जूते भी भागते हुए निकल गए। मैं अंधेरिया मोड़ से गुरुग्राम की तरफ मुड़ गया। गाड़ियों से बचते हुए तेजी से भागता रहा। तभी एक

गाड़ी मेरे सामने आ गई और उसके ड्राइवर ने मुझे बचाने के लिए ब्रेक मार दिया। मैं मरता-मरता बचा। उस गाड़ी वाले ने गाड़ी से उतरकर मुझे जोरदार थप्पड़ मारा। पर मैंने ध्यान नहीं दिया। मैं पागलों की तरह कहने लगा, “निधि मर गई है, वो इस दुनिया में नहीं है।” ये कहते हुए फिर भागा।

वो गाड़ी वाला बोला, “अजीब पागल है, खुद मरते-मरते बचा है और कह रहा है निधि मर गई है।”

मैं उससे आगे निकल गया। मेरे पैर रास्ते के कंकड़-पत्थरों से घायल हो चुके थे। मेरे पैरों में जूते नहीं थे पर मुझे कोई परवाह नहीं थी। अचानक मैंने सोचा कि मैं कहाँ भागा जा रहा हूँ। मेरे पेट में भागते-भागते दर्द हो रहा था, लेकिन फिर भी मैं भागता रहा।

रास्ते में मुझे एक बुजुर्ग ने रोका, “बेटा, कौन मर गया? मैं तेरे पीछे-पीछे ही चल रहा हूँ। काफी देर से भाग रहे हो तुम।”

वो मेरे पीछे साइकिल से आ रहे थे। मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया।

मैंने कहा, “वो जो मर गई है, उसे मैं प्यार करता था। उसे लोग जलाने ले जा रहे हैं।”

“बेटा, कुछ पानी ही पी लो। चाय पियोगे?”

“हाँ मैं चाय पीऊँगा।” मैंने कहा, क्योंकि मैं बहुत थक गया था। वहीं रोड पर चाय की टपरी थी। मैं वहीं बैठ गया।

उस बुजुर्ग ने कहा, “क्या वो तेरी पत्नी थी?”

“नहीं बाबा, मैं उससे प्यार करता था।” कुछ ही देर में मैं फिर से बोलने लगा, “निधि मर गई। निधि मुझे अकेले छोड़कर मत जा।”

वहीं पास बैठा एक आदमी बोला कि लगता है ये पागल है। तभी चाय वाला चाय लेकर आ गया। वहाँ कई लोग बैठे थे। मैं वहाँ से जाने लगा तो उनमें से एक ने मुझे ‘पागल-पागल’ कह वो मुझे चिढ़ा रहा था। मैंने ध्यान नहीं दिया और बाबाजी से कहा, “बाबाजी, उसे जलने से बचाओ, वो मर गई। अगर जल गई तो कभी नहीं मिलेगी। बाबाजी कहाँ हो?”

अचानक याद आया कि बाबा तो गाँव में हैं। वो और संन्यासियों के साथ रुके थे। मैं चिल्लाया, “बाबाजी मैं आ रहा हूँ। मैं उसके जलने से पहले पहुँच जाऊँगा, नहीं तो वो जल जाएगी।”

अचानक खयाल आया कि क्या बाबाजी उसे जिंदा कर देंगे? मेरे पैर वहीं रुक गए। मैं जमीन पर बैठ गया। मनाता रहा कि भगवान उसे जिंदा कर दो। ये जीवन ऐसे ही नहीं जिया जाएगा उसके बगैर। कहते-कहते मैं फिर से खो गया। मैं निधि-निधि कहके चिल्लाया, “निधि कहाँ है तू? मुझे ले जा तू अपने पास। मैं जीना नहीं चाहता।”

फिर उठकर मैं दोबारा भागने लगा। भागते-भागते मैं एक खंभे से टकरा गया और कुछ देर वहीं पड़ा हुआ दर्द से छटपटाता रहा। पर जल्दी ही उठ गया और कहने लगा कि बाबा के पास जाना है। उसके जलने से पहले मुझे और तेज भागना चाहिए, नहीं तो वो बेचारी जल जाएगी। मैंने एक मेंट्रो स्टेशन देखा, जिस पर लिखा था-घिटोरनी। मुझे खयाल आया कि अभी यहीं तक पहुँचा हूँ, मुझे जल्दी करनी चाहिए। वो मर गई, वो मर गई, वो मर गई। कभी मैं आँखें खोलता तो कभी आँखें बंद करके भागता। करीब मैं एक घंटा भागा। अब मेरे अंदर भागने की शक्ति ही नहीं बची थी। मैं धीरे-धीरे चलने लगा। मेरे पैरों में कंकड़-पत्थर से घाव हो गए थे। मैं चल ही रहा था कि सोचा किसी से लिफ्ट ही ले लूँ। सामने ही लाल बत्ती थी जहाँ पर गाड़ियाँ खड़ी थी। मैं जल्दी से वहाँ गया और एक कार वाले से कहा, “भईया सोहना जाओगे? मुझे ले चलो।”

“चल पागल, भाग यहाँ से।” उसने मुझे झिड़क दिया।

“भईया बहुत जरूरी है। मुझे सोहना जाना है, मेरी निधि मर गई है उसे जिंदा करना है।” ये सुनकर कार वाले ने शीशा चढ़ा लिया और अपनी गाड़ी आगे लेकर चला गया।

एक दूसरे कार वाले से मैंने कहा, “भईया मुझे सोहना जाना है, ले चलोगे? मेरी गर्लफ्रेंड मर गई है, उसे जिंदा करना है जलाने से पहले।”

वो चिल्लाया, “चल पागल भाग यहाँ से! मरकर भी कोई जिंदा होता है? किसी और को बेवकूफ बना।”

मेरे दिमाग में आया कि वो जिंदा नहीं हो सकती। मर गई है वो मर गई है। ये सोचकर मैं हँसने लगा। हँसते-हँसते मैं दोबारा रोने लगा। रोते-हँसते मुझे जल्दी करनी है और जल्दी ही सोहना पहुँचना है। मैं तेज-तेज फिर से भागने लगा और कोई आधा घंटा भागता रहा। तभी एक गाड़ी से मैं टकरा गया। गाड़ी वाला टक्कर मारने के बाद वहाँ से भाग गया।

कुछ लोग जो रोड पर थे मेरी तरफ भागे। उन्होंने मुझे उठाया। मैंने घबराते हुए कहा कि मुझे सोहना जाना है। मेरे पैरों से खून निकल रहे थे। मुझे कई गुम चोट भी लगी थी। उनमें एक ने कहा, “पानी पी लो।”

मैंने कहा, “निधि मर गई! मर गई! मुझे बाबा के पास जाना है। वो उसे ठीक कर देंगे।”

एक आदमी ने कहा, “पागल लगता है। इसे ऐसी चोट लगी है पर इसे फर्क ही नहीं पड़ रहा है।”

मैं उनकी सुने बगैर उठा और वहाँ से फिर भागने लगा। चोट के कारण पाँव में दर्द हो रहा था इसलिए धीरे-धीरे ही भाग रहा था। रास्ते में एक और मेंट्रो स्टेशन पड़ा। उस पर लिखा था- एमजी रोड। मेरे दिमाग में आया कि मैं गुरुग्राम में हूँ और यहाँ से सोहना तीस किलोमीटर ही होगा। पर मुझे सोहना की सड़क का पता नहीं चल रहा था। मैं रास्ते में ही बिखरकर चिल्लाने लगा।

“भगवान के लिए कोई मुझे सोहना पहुँचा दो। कोई तो सोहना पहुँचा दो मुझे।” पर किसी ने भी मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया। मैंने एक लड़के से कहा कि सोहने का रास्ता कहाँ है तो उसने मुझे हाथ के इशारे से रास्ता बता दिया। मैं उसी ओर भागने लगा। भागते-गिरते मेरे कपड़े फट गए थे। पैरो में न जूते थे न चप्पल। मेरे घुटनों से खून बह रहा था पर मैं भाग रहा था। ये सोचकर तेज भागने लगा कि अभी तीस किलोमीटर और जाना है। मेरे मन ने कहा कि जल्दी ही पहुँचूँगा।

इस बीच सड़क पर मैं एक गाड़ी से फिर से टकराया। टक्कर मारकर वो गाड़ी वाला भी वहाँ से तेजी से भाग गया। मेरे हाथ से भी खून निकलने लगा। मैंने दोनों हाथ को देखा। चोट के कारण तेज खून की धारा बह रही थी। मेरी आस्तीन भी फट गई। खुद को सँभालने के लिए मैं थोड़ी देर वहाँ रुका।

मैं बस यही सोच रहा था कि बस कुछ देर और भागना है। मेरा गला सूख रहा था। मुझे मेरी प्यास ने रोक दिया। मुझे बड़ी ही देर से प्यास लगी थी पर अब बिना पानी के नहीं भाग सकता था। हाँफते हुए मैंने एक साइकिल वाले से कहा, “भाई पानी-पानी।”

उसने कहा, “कुछ ही दूरी पर एक पंप है, तुम वहाँ से पानी पी सकते हो।”

मैं भाग के उस पम्प पर गया और वहाँ पानी पीने लगा। एक लड़का भी वहीं पानी पी रहा था। उसने कहा, “ये चोट कैसे लगी?”

मैंने कहा, “निधि को जिंदा करना है, वो मर गई है।” इसके सिवा मैं कुछ नहीं बोल पाया।

मौका देखकर वो लड़का मुझसे फोन छीनकर ले गया। मैंने पर उस पर ध्यान नहीं दिया और खुद से कहा कि कुछ देर भागना है, उसे बाबाजी ठीक कर देंगे। मेरे हाथ-पैरों में असहनीय दर्द होने लगा था। जाने कैसे मैं बर्दाश्त कर रहा था। वहाँ उस रास्ते पर ट्रैफिक कम था इसलिए किसी से टकराने का सवाल नहीं था। आस-पास खेत थे। ठंड ज्यादा थी और गाड़ियाँ तेज चल रही थी। टक्कर के चांस कम थे पर टक्कर हो जाए तो ‘राम राम सत्य है’ हो जाए। मैं कभी तेज तो कभी धीरे भागता रहा, दौड़ता रहा।

कई किलोमीटर के दौड़ने के बाद मुझे एक साइन बोर्ड दिखा जिस पर लिखा था- सोहना, पाँच किलोमीटर। बोर्ड देखकर मुझे जो शांति मिली, बता नहीं सकता। मैंने अब अपनी गति और बढ़ा दी। कुछ ही दूर बढ़ा था कि तेज बारिश होने लगी। बारिश की बूँदें मेरे ऊपर पड़ने लगी। पहले ही ठंडे दिन थे, बारिश ने ठंड और बढ़ा दी। मेरे खुले हुए घाव से खून बहना ज्यादा हो गया। मेरे कपड़ों में खून ज्यादा दिखने लगा। मेरे सारे कपड़े खून से सन चुके थे।

मैं दौड़ता रहा। एक ऐसे विश्वास के साथ कि निधि जिंदा हो जाएगी। उसे बाबाजी जीवित कर देंगे। अब मुझे घाव से दर्द ज्यादा हो रहा था पर मैं तो इससे भी ज्यादा दर्द बर्दाश्त कर सकता था। मुझे तो बस निधि को जिंदा करना था। सोचा कि बारिश के कारण निधि के शरीर में आग नहीं लगेगी, ये तो अच्छा हुआ उसकी बॉडी नहीं जलेगी।

मैं खून के बहाव से भी नहीं रुका, बस भाग रहा था। मैंने एक और साइन बोर्ड देखा- सोहना, तीन किलोमीटर। मेरी आत्मा में जान आ गई। मैं भागता रहा। कई गाँव भी रास्ते में पड़े जहाँ लोगों ने मुझे खून से सना भागता देखा मगर वो लोग देखते ही मुझसे दूर हो जाते थे। ना ही किसी ने गाड़ी रोकी, न कोई मदद की। मैं दौड़ ही रहा था कि मेरे सामने से तेज रफ्तार से एक गाड़ी आने लगी। मैं उससे बचने के चक्कर में रोड से थोड़ा पीछे हो गया कि तभी किसी ऑटो वाले ने मुझे पीछे से ठोक दिया। मैं धम से गिर गया। कुछ लोगों ने, जो उस में सवार थे, मुझे उठाया। मेरे शरीर में जान नहीं थी। मैं थककर चूर हो गया था। उनमें से एक ने कहा, “आपको हॉस्पिटल छोड़ दें?” पर मेरे अंदर से एक ही शब्द निकला- “निधि।”

थोड़ी देर बाद ही हिम्मत करके मैं फिर वहाँ से आगे बढ़ गया। अब मैं दौड़ने से हार नहीं मान सकता था। मैंने सोचा, थोड़ी दूर और सोहना आ ही गया है और दौड़ता रहा। और दौड़ते-दौड़ते गिर गया और बेहोश हो गया।

जब मुझे होश आया तो पुलिस और लोगों का जमघट मेरे आस-पास था। कुछ ने कहा, "इसने आँखें खोल दी है, इसका मतलब ये बच गया।"

तब मैं रोड के साइड में पड़ा था। पुलिस शायद एंबुलेंस का इंतजार कर रही थी। एक बार तो मुझे याद नहीं आया कि मैं कहाँ पड़ा हूँ पर जल्दी ही सब याद आ गया कि मैं तो सोहना जा रहा था। पर क्यों जा रहा था? अरे मैं तो निधि को जिंदा करने के लिए जा रहा था। पर क्या वो जिंदा हो जाएगी? हाँ बाबाजी जिंदा कर देंगे। मन में ये सोचते हुए मैं वहाँ से उठने की कोशिश करने लगा। एक आदमी ने कहा, "किस मिट्टी का बना है, उठने की शक्ति नहीं है पर कोशिश कर रहा है।" मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया। मैं उठकर बैठ गया। पुलिस के एक कॉन्स्टेबल ने कहा, "आप गाड़ी में लेट सकते हैं।"

"नहीं मेरे पास समय नहीं है। निधि मर गई है।"

"कौन निधि? आप के साथ कोई और भी है?" कॉन्स्टेबल ने पूछा।

मैंने उसे जवाब नहीं दिया और धीरे-धीरे चलने लगा। कॉन्स्टेबल ने मुझे रोक लिया, "कहाँ जा रहे हो? हम तुम्हें अस्पताल ले जा रहे हैं।"

एक पुलिस वाला मेरे पास खड़ा हो गया और बाकी सब बातें करने लगे कि कौन है, कहाँ से आया है, घाव कहाँ से लगे, कुछ समझ नहीं आ रहा है आदि।

मैंने पुलिस को कई बार कहा, "ये चोटे मुझे भागते हुए लगी है। मेरा गाँव पहुँचना जरूरी है। निधि मर गई है, उसे बाबाजी जिंदा कर सकते हैं। लेकिन पुलिस ने मेरी एक नहीं सुनी। वो मुझे अस्पताल ले गए और जबरदस्ती इंजेक्शन लगाकर मेरे घाव पर टाँके लगा दिए। शायद इंजेक्शन नींद का था। मैं तब तो सो गया, पर तीन घंटे में ही मुझे होश आ गया। एक पुलिस वाला मेरा बयान लेने के लिए अस्पताल में ही रुका था। वो मेरे से सवाल पूछने लगा। मेरा दिमाग सदमें से अब राहत में था।

पुलिस वाले ने पूछा, "आप कहाँ से आ रहे थे?"

"मैं वसंत कुंज से आ रहा था।" मैंने बताया कि रास्ते में मेरे कई एक्सीडेंट हुए जिससे मुझे चोट लगी।

"पर तुम रहते कहाँ हो?" उसने पूछा।

“ये सवाल आप ने पहले पूछना था।”

“आप बस जवाब दें।”

“मैं सोहने के पास गाँव में डेयरी चलाता हूँ। मैं गागोली गाँव में रहता हूँ, वैसे मैं दिल्ली में महरौली का रहने वाला हूँ। किसी काम से मैं दिल्ली में वसंत कुंज गया था।”

“पर तुम गए कैसे थे? किस वाहन का प्रयोग किया मेरा मतलब?”

“मैं अपनी गाड़ी से गया था।” अब मेरे दिमाग में आया कि मेरी गाड़ी कहाँ है।

“पर फिर तुम गाड़ी, मेट्रो और बस छोड़कर पैदल ही अपने गाँव चल पड़े?”

मैंने हाँ कहा और पुलिस को लाख समझाया पर उसने कहा कि मैं शायद मरना चाहता था इसलिए मुझ पर आत्महत्या का केस लगेगा। ये कहकर वहाँ से पुलिस वाला चला गया। अस्पताल के एक आदमी से मोबाइल लेकर मैंने रघुवीर को फोन किया और उसे जल्दी ही अस्पताल आने को कहा।

अस्पताल के बेड पर मैं कभी अपनी बेवकूफी पर हँसता तो कभी निधि के मर जाने पर रोता रहा। मुझे अब अपने घाव से भी असहनीय दर्द हो रहा था। मेरे घाव से अब खून नहीं बह रहा था। मुझे कुल आठ घाव लगे थे जिन पर डॉक्टर ने टाँके लगा दिए थे। मैं ये सोचकर हैरान था कि इतने घाव पर टाँके लगते हुए भी मैं सामान्य ही था। मुझे सुबह से भागते हुए अब रात हो गई थी। मैंने ये मान लिया था मैंने निधि को खो दिया है। हालाँकि मैं ये कबूलना नहीं चाहता था कि वो फिर से जिंदा हो जाएगी। लाख कोशिश के बाद भी मैं अपना रोना नहीं रोक पा रहा था। मैंने सोच लिया था, यहाँ से निकलने के बाद मैं गाँव में जाकर आत्महत्या कर लूँगा। मेरी बेकार की बची हुई जिंदगी में तड़पने से तो अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।

अस्पताल में रात को मुझे खिचड़ी दी गई पर मैंने ये सोचकर खिचड़ी नहीं खाई कि इस मरी-सी जिंदगी से मुझे क्या लेना और क्या खाना-पीना। एक बूढ़ी नर्स मेरे पास आई और उसने कहा, “बेटा, खाना खा लो। तुम मेरे बेटे की उम्र के हो। मैंने तुम्हें जब से देखा है, बस रो रहे हो। बेटा, मैं नहीं जानती तुम पर क्या बीती है पर जिंदगी तो जीनी ही पड़ती है लाख दुखों के मिलने के बाद भी।”

मैं बस रोता रहा, कुछ नहीं बोला।

अध्याय-23

लगभग एक घंटे बाद रघुवीर और सत्ते अस्पताल आए। मैं उन्हें देखकर फट पड़ा और तेज-तेज रोने लगा।

“सत्ते, मैंने निधि को खो दिया, वो मर गई। मुझे इस धरती पर नर्क जैसी जिंदगी मिल गई। हे भगवान मुझे सजा दो।”

रघुवीर ने मुझे रोते हुए दिलासा दी, “यार मैं जानता हूँ पर मरने से क्या उसको परेशानी से राहत मिल जाएगी जो तुम भी मर जाना चाहते हो? मर कर किसी परेशानी से हल नहीं मिलता है। तुम बच तो गए, भगवान का शुक्र है! नहीं तो तेरे माता-पिता का क्या हाल होता। प्लीज तुम कसम खाओ कि अब कभी मरने की कोशिश नहीं करोगे।”

“मैंने कब मरने की कोशिश की है?” मैंने हैरानी से रघुवीर से पूछा।

“पर तुम्हारे ऊपर पुलिस ने आत्महत्या की कोशिश का केस लगा रखा है, वो तुम्हें अस्पताल से छुट्टी के बाद जेल भेजने वाले हैं।”

“ठीक है रघुवीर, भेज देने दो जेल। मुझे अपने किए की कोई तो सजा मिले।” ये कहते हुए मेरी आँखों से आँसू निकल रहे थे।

जब डॉक्टर आ गए तो रघुवीर ने उनसे कहा, “क्या हम इसे किसी और हॉस्पिटल में ले जा सकते हैं?”

“ये पुलिस केस है, आप थाने से लिखवाकर ही इसे यहाँ से दूसरे हॉस्पिटल ले जा सकते हैं।”

“पर इसने आत्महत्या की कोशिश नहीं की है।”

“आप पुलिस से बात करें।” डॉक्टर ये कहके चले गए।

रघुवीर बाहर पुलिस वाले से बात करने गया। उसने मेरी सारी कहानी पुलिस वाले को बताई। यहाँ से ले जाने के लिए पुलिस वाले को दस हजार की भी पेशकश की पर पुलिस वाला मान नहीं रहा था। आखिर में रघुवीर ने एक हरियाणा के मंत्री से पुलिस थाने में फोन करवाया तब भी वे नहीं माने। रघुवीर ने उन्हें बीस हजार रुपये देने का लालच दिया तब हम इस झंझट से निकले।

ऱघुवीर ने मुझसे पूछा, “तुम्हारी गाड़ी कहाँ है?”

“मैं नहीं जानता, शायद वो वसंत कुंज में रह गई।”

“गाड़ी की चाबी कहाँ है?”

“वो भी मुझे पता नहीं है।”

“ठीक है। सत्ते, तुम राघव को लेकर गाँव जाओ। मैं गाड़ी की खोज-खबर लेकर आता हूँ।”

सत्ते ने कहा, “ठीक है।”

मैं और सत्ते टैक्सी लेकर गाँव आ गए। रघुवीर वसंत कुंज के लिए चला गया। मैं टैक्सी में सारे रास्ते रोता हुआ गाँव पहुँचा। मैंने सत्ते से कहा, “तुम अब घर जाओ और मेरे घर किसी से ये सब मत बताना। रघुवीर से भी कह देना कि वो भी इस बारे में किसी से कुछ भी न बताए।”

“ठीक है भाई।”

सत्ते घर नहीं जा रहा था। मैंने जैसे-तैसे उसे समझा के घर भेजा। रहीम भी बड़ा दुखी था, उसे भी पता था कि निधि मर गई थी।

सुबह रघुवीर जैसे-तैसे मेरी गाड़ी लेकर आ गया। मैंने उससे पूछा कि निधि के घर वालों का क्या हाल है। उसने कहा, “एक किस्सा है भाई ये जिंदगी किसी के जाने से नहीं रुकती है, बस लोग मर जाते हैं और किस्सा बन जाते हैं।”

कुछ देर तक रुकने के बाद रघुवीर भी अपने घर के लिए निकल गया।

मेरी डेयरी में काम ऐसे ही चलते रहे, जैसे पहले चलते थे। बस कमी उसकी थी, जिसे मैं प्यार करता था।

मैं सुबह सोया और दोपहर दो बजे उठा। मैंने रघुवीर और सत्ते को डेयरी के बी.एस.एन.एल. नंबर से फोन करके उन्हें बुलाया। मेरे पास मोबाइल नहीं था। मेरा मन नहीं लग रहा था, इसलिए ही मैंने उन्हें बुलाया था। थोड़ी देर में दोनों आ गए। दोनों ने मेरा हाल पूछा। दुखी होकर वो बैठ गए।

मैंने रघुवीर से पूछा, “तुम्हें खबर थी कि निधि की मौत हो गई है?”

“हाँ मुझे सुबह ही निधि के रिश्तेदार का फोन आ गया था कि उसने आत्महत्या कर ली है।”

“पर तुमने तो मुझे नहीं बताया?”

“मैंने ये सोचकर तुम्हें नहीं बताया कि क्या हाल होगा तुम्हारा जब मैं तुम्हें बताऊँगा।”

“उसने कोई वजह आत्महत्या की लिखी थी किसी लेटर में?”

“नहीं, पुलिस को कोई लेटर नहीं मिला।” ये सुनकर मेरी आँखों में आँसू आ गए।

“उसने आत्महत्या कैसे की?”

“उसने फाँसी लगा ली थी।”

“तुम्हें पता हो तो बताओ कि पुलिस उसके घर वालों को तंग तो नहीं कर रही है?”

“मुझे नहीं पता इस बारे में कि पुलिस क्या कर रही है।”

मैंने आँसू पोछते हुए रहीम से कहा, “मैं दिल्ली जा रहा हूँ। मैं उसके घर वालों से मिलूँगा नहीं तो वे कहेंगे बेटी की जान चली गई और लड़का एक बार भी हमसे मिलने नहीं आया।”

रघुवीर ने कहा, “भाई तुम अभी इस हाल में नहीं हो जो वहाँ जा सको।”

“तो फिर कब होगी मेरी हालत ठीक? मेरी वजह से एक लड़की की मौत हो गई और मैं उसके घरवालों को दिलासा भी नहीं दे पा रहा हूँ। मुझे जाना ही होगा।”

“नहीं राघव, निधि के मम्मी-पापा के साथ उसके रिश्तेदार तुम्हारा क्या हाल करेंगे, तुम्हें अंदाजा नहीं है। तुम्हारे कारण एक जवान मौत हुई है, वो भी शादी से एक रात पहले। तुम वहाँ जाकर फँस जाओगे।”

“नहीं, मुझे ऐसी जिंदगी नहीं चाहिए जहाँ मैं अपनी सबसे प्यारी चीज के चले जाने पर भी उसके माता-पिता का दुख ना बाँट सकूँ। मैं उन्हें बताना चाहता हूँ कि मैं उससे प्यार करता हूँ, बस गलती ये हो गई कि मैं उसके मरने के बाद पहुँचा। अगर मैं आठ घंटे पहले वहाँ पहुँच जाता तो वो नहीं गई होती इस दुनिया से।”

“नहीं, अगर तुम चार घंटे पहले भी उसके पास होते तब भी वो बच गई होती।” रघुवीर ने कहा। मैंने सिसकारी भरी। रघुवीर और सत्ते ने मुझे सांत्वना दी।

“यार तुम जब ठीक हो जाओ तब वहाँ चले जाना। तब तक उसके माँ-बाप अपने को सँभाल लेंगे।” सत्ते ने कहा।

“तुम लोग मुझे वहाँ जाने से क्यों रोक रहे हो?”

“कुछ दिन बाद मैं भी तुम्हारे साथ उसके घर चलूँगा। थोड़ा रुक जाओ और समझो। अभी मामला गरम है, पुलिस के हत्थे चढ़ सकते हो तुम। जब तक मामला ठंडा नहीं हो जाता, तुम वहाँ मत जाओ। तुम्हारा वहाँ तीन-चार दिन बाद ही जाना ठीक रहेगा।” रघुवीर ने कहा।

रघुवीर के साथ रहीम और सत्ते ने भी यही कहा। मैं अकेले वहाँ नहीं जा सकता था ये भी सच्चाई थी। मेरी चोट अभी ठीक होने में समय लगना था।

चार दिन हो गए थे निधि को इस दुनिया से गए हुए। मैं सर्दी के कारण धूप में बैठा था। वहीं चाचा-चाची आ गए थे। उनके साथ दो लोग और थे। मैं समझ नहीं

पाया कि वे क्यों आए थे। मैंने सोचा कुछ काम होगा। वे सीधे गाय की डेयरी में गए। वहाँ पर चाचा-चाची ने उन्हें सारा तबेला दिखाया। उन्हें बीस मिनट लगे सारा तबेला देखने में। रहीम ने तब तक उनके लिए चाय बना दी।

वे मेरे पास आए और मुझसे पूछने लगे कि कितना दूध निकल जाता है इन गाय से। साथ में ये भी पूछा कि तुम्हारे पास कितनी जमीन है खेती की। मैंने सिर्फ एक-दो चीज उन्हें बता दी। रहीम उनके लिए चाय ले आया। मैंने उनसे रहीम का परिचय कराया।

चाचा ने कहा, "बड़ा ही मेहनती है ये। इतना बड़ा काम ऐसे ही नहीं चलाता है। रहीम तो बस इसका नौकर है।" ये सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। चाचा ने बात पलट दी मुझे देखकर, "ये रहीम इनकी नौकरी करता है।"

फिर दोनों लोग दूर चले गए। उन्होंने रहीम को पास बुलाया और उससे वे दोनों लोग बातें करने लगे। चाचा ने मेरी तरफ देखकर कहा, "बेटा ये तुम्हारे रिश्ते के लिए आए हैं। बड़े ही सीधे हैं।"

"मैं भी देख रहा हूँ कितने सीधे हैं। जैसे दोनों पूछ रहे हैं ऐसे लोग सीधे होते हैं? सारा काम-धंधा पूछकर मेरे से शादी की बात करने आए हैं?"

"पर बेटा, ऐसे ही कोई अपनी लड़की तुम्हें नहीं दे सकता है।"

"आपको पता है न कितने दुख से गुजर रहा हूँ? मेरी दोस्त की मौत हो गई है। मैं शादी की बात ऐसे में नहीं कर सकता हूँ।"

"ठीक है मेरे बच्चे, इन्होंने तुम्हारा कारोबार देख लिया है। जरा आराम से पेश आना, क्या पता तुम्हारी शादी इनकी लड़की से हो जाए तो सारी उम्र ताने सुनते रहोगे कि हमारे दामाद ने हम से ठीक से बात नहीं की।"

मैं थोड़ा गम्भीर हुआ। चाचा जी को अपने पास बुलाकर दोनों कुछ बातचीत करने लगे। फिर वे चले गए। चाचा उन्हें गाड़ी तक छोड़ आए।

चाचा ने वापस आकर कहा, "बेटा, इन्हें तुम पसंद आ गए हो। अगर तुम इनकी लड़की देखना चाहो तो जा सकते हो।"

"मैंने बताया कि मैं अभी नहीं जा सकता हूँ। जब मेरा मूड ठीक होगा तभी मैं जा सकता हूँ। एक बात और, मैं उदास हूँ इस वक्त। मैं शादी नहीं कर सकता। मुझे थोड़ा समय चाहिए। शायद मैं कभी शादी ही ना करूँ। मैं किसी दबाव में शादी नहीं करूँगा। आप निधि को तो जानते होंगे? चार दिन पहले उसकी मौत हो गई है। मैं इसलिए अभी शादी की नहीं सोच सकता।"

चाचा चाची एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। चाचा ने कहा, “वो लड़की मर गई, मुझे तो सत्ते ने नहीं बताया, नहीं तो मैं इन लोगों को लेकर नहीं आता। खैर, बेटा तुम सोचकर ही जवाब देना। अगर तुम इनकी लड़की से शादी करते हो तो मुँह माँगा दहेज तुम्हें देंगे।”

मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। मैं किसी के दहेज का लालची नहीं था।

अध्याय-24

अगले दिन मैंने सुबह-सुबह ही रहीम को बुलाया और कहा कि गाँव के सबसे गरीब हरिजन लोगों को बुला लाए। रहीम ने पूछा, “कुछ काम है भईया?”

“हाँ, मैं उन्हें एक-एक गाय दान करना चाहता हूँ। मैं ये डेयरी बंद करने की सोच रहा हूँ।”

“पर भईया, आपका जमा-जमाया काम बंद हो जाएगा। इतने साल में मेहनत से आपने ये काम कामयाब किया है, इसे ऐसे ना खत्म करें।”

“रहीम, मैंने सोच-समझकर ये फैसला किया है। मैंने डेयरी इसलिए खड़ी की थी कि मैं निधि के सामने खड़ा हो सकूँ। मैं शायद उसके पैसे से जलता था, पर जब वो जिंदा नहीं है तो डेयरी का क्या फायदा।”

“पर भईया, आप क्या काम करोगे इसके बाद? आप अपने परिवार से क्या कहेंगे?”

“कुछ भी कह दूँगा। तुमसे जितना कहा है उतना करो।”

रहीम चला गया और थोड़ी देर में गाँव के सबसे गरीब लोगों को बुला लाया। बारह लोग थे जिनको मैंने एक-एक गाय दे दी और उनके बछड़े-बछिया भी।

कुछ लोग सोच रहे थे और कह रहे थे कि हमने ब्राह्मणों को दान देते सुना है, पर ये पहला आदमी है जिसने हरिजनों को दान में गाय दी है। मैंने उनसे ये भी सुना कि बड़ा ही दयालु आदमी है। जब वे लोग चले गए तो मैंने रहीम से कहा कि वो दूसरे गाँव से भी गरीब हरिजन लोगों को बुला लाए। उन्हें भी मैं गाय दान में दूँगा।

सारे गाँव में यह बात फैल गई कि मैंने गरीबों को गाय दान में दी है। कुछ ने मेरा समर्थन किया तो कुछ ने कहा ब्राह्मण लोगों को ही गाय दान में देनी चाहिए, नहीं तो कोई पुण्य नहीं लगता है। यह बात रघुवीर और सत्ते तक भी पहुँची तो वे तुरंत ही डेयरी पर आ गए। सत्ते ने कहा, “तुम जमा-जमाया काम बेकार में बर्बाद कर रहे हो।”

मैंने कहा, “मैंने जिसके लिए डेयरी लगाई थी वो है ही नहीं तो डेयरी का क्या फायदा।”

रघुवीर ने मुझे कुछ नहीं कहा। मैंने कुछ और लोगों को भी गाय दान कर दी। तब तक कुल बीस गाय मैं दान कर चुका था।

मैंने नया मोबाइल ले लिया था और उस में पुराना नंबर भी एक्टिवेट करा लिया था। जब मैं बाहर सत्ते और रघुवीर से बात कर रहा था, तब मेरे मोबाइल पर

एक फोन आया। मैं फोन नहीं उठा पाया। जब मैं अंदर कमरे में गया तो दोबारा घंटी बजी। मैंने इस बार फोन उठा लिया। जैसे ही मैंने हैलो कहा, उधर से आवाज आई, "कमीने, मेरी माँ मर गई। एक हफ्ते पहले तुमने मेरे पास फोन करने की भी नहीं सोची? तेरे जैसा कमीना मैंने दुनिया में नहीं देखा।"

वो निधि थी। मैं एकदम से सकपका गया कि वो जिंदा थी। मैं कुछ बोल पाता उससे पहले ही उसने गंदी गालियों की बौछार कर दी। फिर उसने फोन काट दिया। मेरा खुशी से दिमाग खराब हो गया। मारे खुशी के मैंने आधा भगोना तुरंत चाय चढ़ा दी। अभी सत्ते और रघुवीर वहीं थे। मैंने एक लाठी उठाकर उनके पिछवाड़े पर सेंक दी। जब तक वे सँभलते मैंने एक-एक लाठी फिर से उन्हें मार दी। वे दर्द से चीखते हुए भागने लगे। मैं भी उनके पीछे दौड़ा। रघुवीर ने कहा, "भाई बात क्या हो गई क्यों हमे लाठी से पीट रहा है?"

"कमीने! बोल रहे थे कि मर गई निधि। क्या उसके भूत का फोन आया था अभी मेरे पास?"

वे वहीं रुक गए और रुककर हँसने लगे। रहीम मेरे पीछे आ गया और फौरन उसने मेरे हाथ से लाठी छीन ली।

मैंने रहीम से कहा, "तुम भी इनकी नौटंकी में शामिल हो? तुम्हें मुझ पर जरा भी तरस नहीं आया? हाय मेरी बीस गायें चली गईं। हर महीने एक लाख बचता था उनसे। पूरी बारह लाख की थी वो, बारह लाख का नुकसान करा दिया तुमने।"

ये सुनकर तीनों फिर से हँसने लगे। मैंने रहीम से कहा, "कमीने उन गायों को तो वापस ले आ जो दान कर दी।" ये सुनकर भी वे हँसते रहे। मैंने रघुवीर से पूछा, "वो जो अर्थी निकल रही थी वो किसकी थी?"

"वो उसकी माँ की अर्थी थी। शादी के दिन सुबह तीन बजे निधि की मम्मी को दिल का दौरा पड़ा था, इसलिए उनकी मौत हो गई थी।"

"पर सत्ते तुम्हें कैसे पता चला?"

"सुबह ही निधि का फोन मेरे पास आ गया था कि उसकी शादी नहीं हो रही है, क्योंकि उसकी मम्मी नहीं रही। पर तुम जब दिल्ली में थे, तब रघुवीर ने भी तुझे ये बताने से मना किया था। जब तुम अस्पताल में थे, मैं ये बताने ही वाला था लेकिन तुम ये कह रहे थे कि निधि मर गई है। तब मैं कहने ही वाला था कि वो नहीं उसकी मम्मी की मृत्यु हुई है, पर रघुवीर ने मुझे आँख मार दी। पर तुम शोक के कारण कुछ देख नहीं पाए। रघुवीर ने सारी योजना बना ली थी। हमने तुम्हें नहीं बताया

क्योंकि हम तो चाहते थे कि नाटक अगले दो और दिन तक चलता रहे, पर रघुवीर निधि से नाटक में शामिल होने के लिए नहीं कह पाया। वो अपनी मम्मी के चले जाने से रो रही थी, जब रघुवीर तुम्हारी गाड़ी लेने दिल्ली गया था।"

"पर तुमने मेरी गायों को दान करने क्यों दी? हाय लाखों का नुकसान कर दिया।"

रहीम, सत्ते और रघुवीर पेट पकड़कर हँसने लगे। मैंने उन पर घूसों की बरसात कर दी। रघुवीर ने कहा, "थोड़ा दान करने से तुम्हारा क्या जाता है? गरीब का ही तो भला हुआ है।"

"पूरे बारह लाख की गायें थी वो। कैसे-कैसे मैंने इन्हें इकट्ठा किया था। साथ में कई बछिया भी थी जो कुछ समय में गाय बन जातीं।"

रहीम रसोई में चला गया जहाँ चाय बन रही थी। उसने सभी को एक-एक कप चाय दी। मैंने सब को कहा, "अभी चाय पियो, रात को शराब की पार्टी करते हैं।"

"ठीक है भाई, पर चिकन भी बनाना।"

"रहीम चिकन बना देगा।" सत्ते ने कहा।

"पर अब निधि को कैसे मनाएँ? वो तो रूठी हुई है और वो मेरी शक्ल तक नहीं देखेगी।"

"एक बात बताऊँ, मैंने तुम्हें नहीं बताई कि निधि की मम्मी को हार्ट अटैक इसलिए आया था क्योंकि शादी के एक दिन पहले निधि के घरवालों को पता चला कि लड़का डॉक्टर नहीं है। वो निधि के पापा से एक करोड़ शादी से एक दिन पहले माँग रहा था। निधि को जब पता चला तो उसने शादी करने से इनकार कर दिया। निधि के पापा के पास इतने पैसे नहीं थे, ये सब बात निधि ने मुझे बताई थी। जब लड़के का डॉक्टर होना झूठ निकला तो शादी को निधि ने कैंसिल कर दिया। लड़का भी कनाडा में कोई छोटा-मोटा काम करता था। ऐसे में निधि के पास यही ऑप्शन था कि वो शादी ना करे। लेकिन उसकी मम्मी ये सदमा बर्दाशत नहीं कर पाई और रात को उसे हार्ट अटैक आ गया। सुबह तक उसके प्राण नहीं बच सके।"

"अब कैसा माहौल है वहाँ?"

"अभी बाप बेटी सदमें से नहीं उबरे हैं, इसलिए राघव तुम पार्टी अभी कुछ दिन बाद ही देना।" रघुवीर ने कहा।

"ठीक है भाई।"

सत्ते और रघुवीर के चले जाने के बाद मैंने कई फोन निधि को किए, पर उसने एक बार भी मेरा फोन नहीं उठाया। बड़ी मुश्किल से शाम को उसने फोन उठाया और चीख पड़ी, "अब क्या कहना चाहते हो जल्दी कहो।"

"मुझे माफ कर दो! मुझे सच में पता नहीं था कि तुम्हारी मम्मी गुजर गई हैं। तुम सत्ते और रघुवीर से पूछ लो नहीं तो जिससे चाहो पूछ लो।"

"तुम तो सोच रहे होंगे कि पीछा छूटा, मेरी शादी हो चुकी होगी। कमीने, जब प्यार निभाना नहीं था तो किया ही क्यों था। मैं शादी के एक दिन पहले तक तुम्हारा इंतजार करती रही।"

"मैं शादी के दिन आया था, तुमसे मिलने।"

"फिर क्या हुआ? तुम्हें पता चल गया होगा कि शादी रुक गई है। एक बार मिल भी सकते थे मेरी मम्मी के गुजर जाने के बाद भी। क्यों तुम मेरे से मिले नहीं? तुमने सोचा होगा कि तुम्हारी नाक नीची हो जाएगी। मैं ही तुम्हें इतने सालों में पहचान नहीं पाई। अब मुझे तुमसे कोई बात नहीं करनी है, फोन काटो।"

"मैं तुझसे मिलने आ रहा हूँ।" मेरी बात पूरी होने से पहले ही उसने फोन काट दिया।

मैंने कई बार दोबारा फोन किए पर उसने नहीं उठाया। मैं उदास सोचता रहा कि वो मान जाएगी या अपनी माँ के बाद वो मुझे भुला देगी। मैंने रघुवीर को फोन किया और उसे सब बताया। उसने कहा कि परेशान मत हो। कुछ ही देर में वो मेरे पास आ गया, "तुम फिकर मत करो, हम अभी उसके घर चलते हैं।"

मैंने उसके घर जाने के लिए कपड़े बदले। कोई डेढ़ घंटे में हम निधि के पुराने घर पर थे, जो महरौली में था। मैंने अंकल से माफी माँगी तो उन्होंने कहा, "बेटा तुम्हारी कोई गलती नहीं है, जो होना था हो गया।"

मैं और रघुवीर निधि के कमरे में गए। मैंने निधि से कहा, "प्लीज मुझे माफ कर दो!"

"तुम यहाँ से चले जाओ, मैं तेरा चेहरा भी नहीं देखना चाहती हूँ।" निधि मुझे देखते ही फट पड़ी और रोते हुए कहने लगी, "अगर तुम मान जाते तो उस कनाडा वाले से शादी की नहीं सोचती और न ही मम्मी चली जाती।"

मैं कुछ नहीं बोल सका। तभी अंकल वहाँ आ गए। उन्होंने निधि को समझाया, "बेटा, ये सब तो बहाना है, सबकी जिंदगी भगवान के हाथ में है।"

रघुवीर ने मुझे कहा, “तुम थोड़ी देर बाहर रहो, मैं बात करता हूँ।” उसने कमरा बंद कर लिया। कोई एक घंटे तक कमरा बंद रहा, फिर रघुवीर ने कमरा खोला। उसने निधि से सब बताया जो मेरे साथ हुआ। मैं उसकी शादी रोकने भी आया था, ये भी बताया।

मैंने जैसे ही निधि को देखा वो मेरी तरफ देखकर रोने लगी। मेरे भी आँसू निकल आए। मैंने निधि के पास जाकर उसे गले लगाया और रोते-रोते ही उससे कहा, “निधि, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।”

ये सुनकर भी वो कुछ नहीं बोली, बस रोती रही। लगभग पाँच मिनट बाद उसने कहा, “राघव, मैं यही सुनने को आठ साल से तड़प रही थी। तुम बहुत देर से बोले, मैं तुम्हारा इंतजार कर रही थी।”

मैंने कहा, “कब शादी करोगी मुझसे?”

“पापा से पूछ कर करूँगी।” वो रोती रही मेरी बाँहों में। कमरे में कोई नहीं था, सब हमें अकेला छोड़कर बाहर चले गए थे। निधि रोते-रोते मेरी बाँहों में ही सो गई।

अध्याय-25

लगभग एक साल बाद हमारी शादी का दिन आया। हम शादी के लिए गोवा निकले। ये डेस्टिनेशन मैरिज थी। हमने पूरा एक हवाई जहाज ही बुक कर लिया था। उस में सौ लोग हमारी तरफ से और सौ लोग निधि के परिवार की तरफ से शामिल हुए थे। हम वहाँ तीन दिनों के लिए गए थे। मैंने दस आदमी हरिजन लोग के भी गागोली गाँव से बुलाए थे। हम एक होटल में रुके और तीन दिन तक हमने वहाँ कई फंक्शन अटेंड किए। बहुत ही खूबसूरत अंदाज में हमारी शादी हुई। शादी के तीन दिन के बाद हम दोनों के परिवार के लोग अपने-अपने घर चले गए। मेरे परिवार के साथ रिश्ता जुड़ने से गुप्ता अंकल बहुत खुश थे।

मैं और निधि गोवा से ही पूरे देश में एक महीने के लिए हनीमून पर निकल गए। जब हम देशभर में घूम रहे थे, तब मुझे कश्मीर में बाबाजी भी मिले। उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया। मैंने बाबाजी से उनका नाम पूछा तो वे हँसने लगे और कहा, “सब माया है!” उनके पास फोन भी नहीं था जो मैं कभी उनसे बात करता।

लगभग पाँच साल बाद मैं निधि के साथ अपने बंगले में रहता हूँ। मेरे दो बच्चे हैं। लड़की बड़ी है जिसका नाम राशि है। लड़के का नाम मैंने हिमांशु रखा है। हम लोग एक परिवार के रूप में बहुत खुश थे।

अब वंश मुझे नहीं जलाता है, क्योंकि वो पाँच साल पहले ही दिमाग से निकल गया था। मुझे अब वो न ही सपने में डराता था, न ही असली जिंदगी में। मैंने उसे माफ कर दिया था। मेरी उससे कोई दुश्मनी नहीं रह गई थी। मैं अब महरौली जाने पर उससे बात भी कर लेता हूँ। मैं सोनू, भोपले और देव से मिलता रहता हूँ। मैंने बीते पाँच साल में भी निधि से कभी नहीं पूछा कि उसके और वंश के बीच क्या हुआ था।

हाँ, अब निधि की कमर पर बसमेरा अधिकार है। मेरा खाना अब रहीम नहीं बनाता है, वो अपने प्यार भरे हाथों से निधि ही बनाती है।

मेरा मानना है कि जब शादी से पहले लड़के से नहीं पूछा जाता कि उसका क्या अतीत है, तो फिर लड़की से भी नहीं पूछना चाहिए। अतीत बस अतीत होता है, वो चाहे अच्छा हो या बुरा, उसे पकड़े रहकर अपना भविष्य नहीं बिगाड़ना चाहिए।